जैन तीर्थवंदना

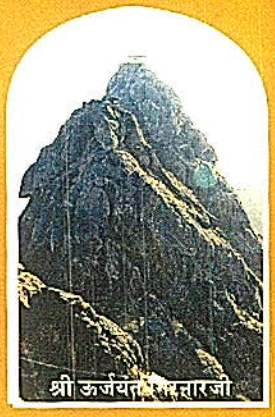

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2544

VOLUME : 8 | ISSUE : 10 | MUMBAI, APRIL 2018 | PAGES : 40 | PRICE : ₹25

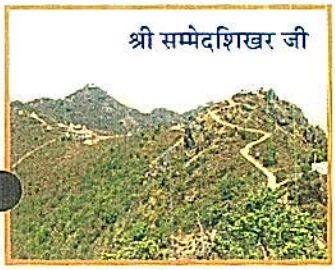

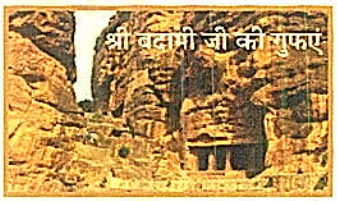

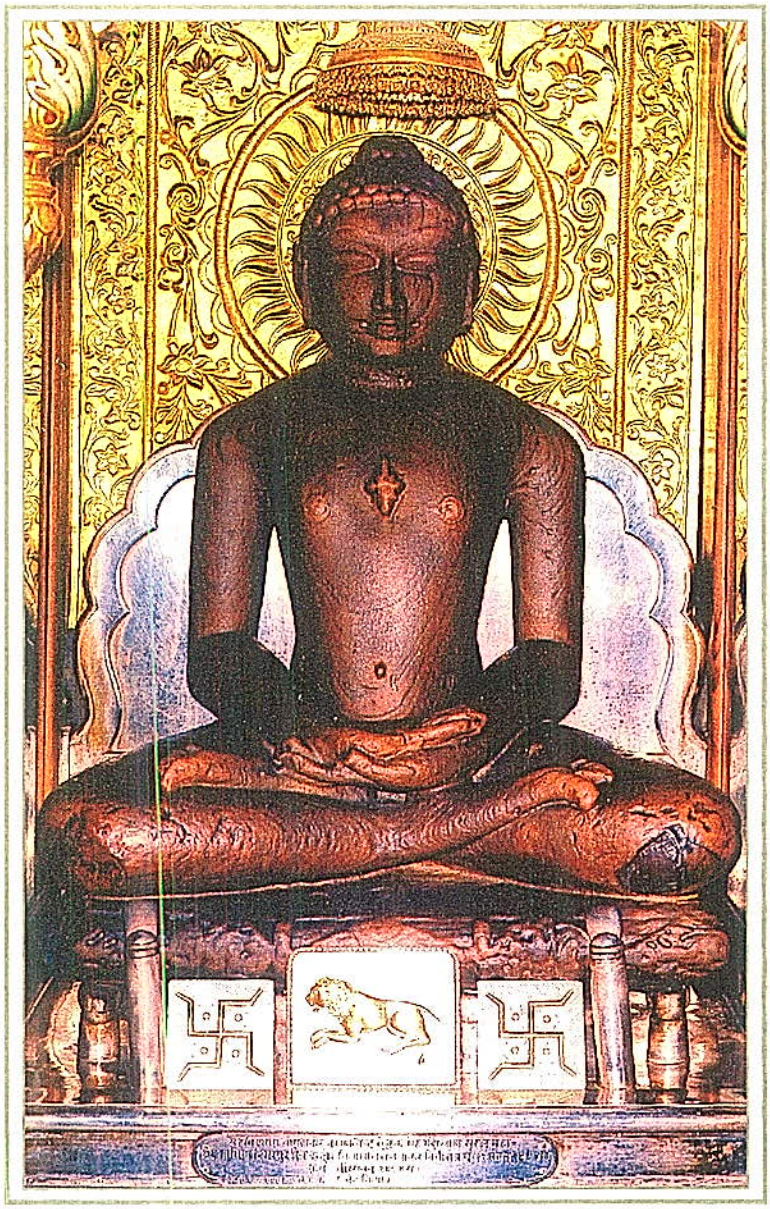

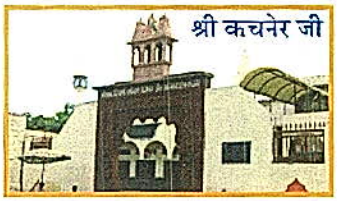

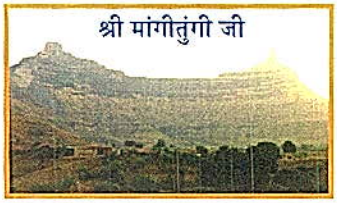

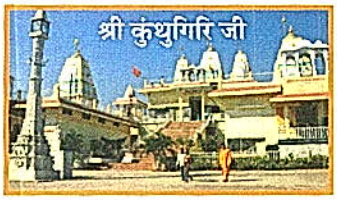

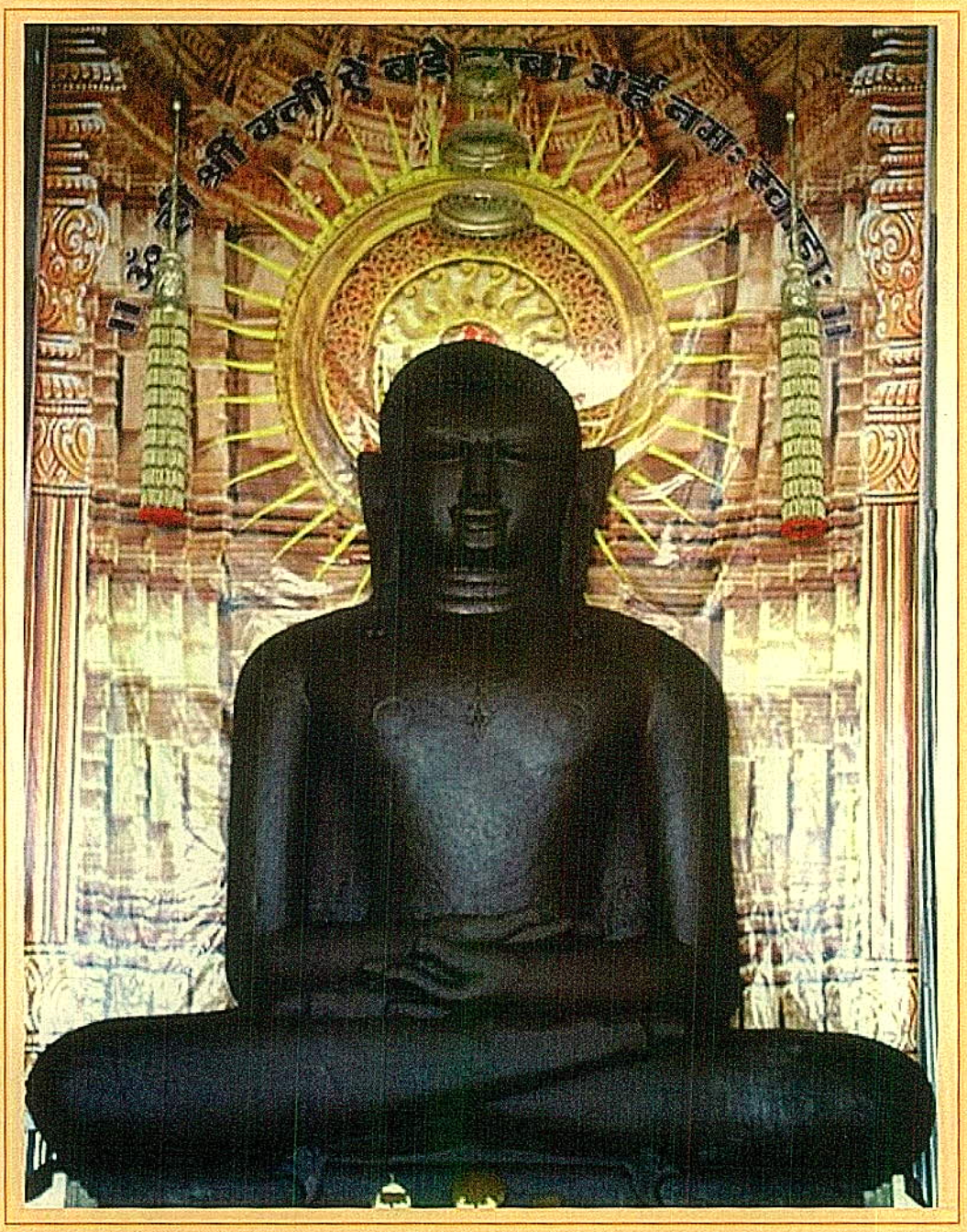

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अक्षय तृतीया
पर आहार दान का संकल्प लें।

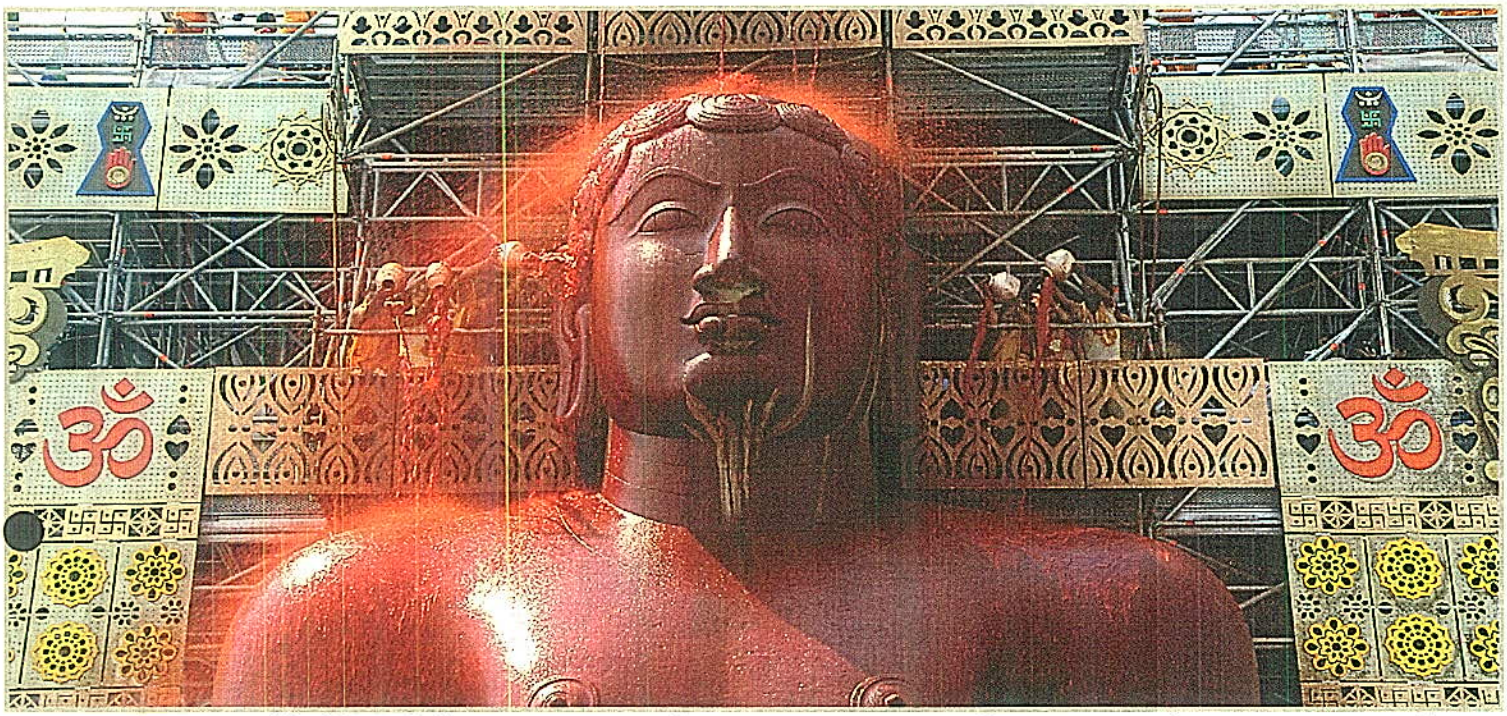

विगत माह में अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के जन्मकल्याणक पर सभी ने खूब धर्म प्रभावना की और धर्मलाभ लिया।

आज देश में जगह-जगह जैन प्रतिमाएँ प्राप्त हो रही हैं जो इस बात को प्रमाणित करती हैं कि जैनधर्म ही प्राचीन है।

तीर्थंकर ऋषभदेव वर्तमान में अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर हुए, उनके पुत्र के नाम से इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा, इस बात को जैन ही नहीं हिन्दू पुराण भी मानते हैं, अग्निपुराण में आता है कि -

जरा मृत्यु भयं नास्ति धर्माधर्मो युगादिकम
नाधमं मध्यमं तुल्या हिमादेशात्तु नाभितः।
ऋषभों मरूदेव्यां श्रीपुत्रे शाल्य ग्रामे हरिर्गतः
भरताद भारतं वर्ष भरता समुति स्त्वभूत।।

इसका हिन्दी अर्थ यह है कि -

उस हिमवत प्रदेश में युग के आदि में जरा और मृत्यु का भय नहीं था, धर्म और अधर्म भी नहीं थे, अधम और मध्यम भाव नहीं था। सभी समान थे। वहाँ नाभिराजा, मरूदेवी से ऋषभ का जन्म हुआ। ऋषभ ने राज्य भरत को प्रदान कर संन्यास धारण कर लिया। भरत से इस देश का नाम भारतवर्ष हुआ।

इसी प्रकार मार्कण्डेय पुराण में भी उल्लेख है कि आग्नीध्र के पुत्र नाभि से ऋषभ हुए, उनसे भरत का जन्म हुआ जो अपने सौ भ्राताओं में अग्रज था, ऋषभ ने अपने ज्येष्ठ पुत्र भरत का राज्याभिषेक कर महाप्रव्रज्या ग्रहण की और पुलहाश्रम में उस महाभाग्यशाली ने तप किया। ऋषभ ने भरत को हिमवत् नामक दक्षिण प्रदेश शासन के लिए दिया था। अतः उस महात्मा भरत के नाम से इस देश का नाम भारतवर्ष हुआ।

इसी प्रकार नारद पुराण के पूर्णखण्ड, श्रीमद्भगवतगीता, पुरुदेव चम्पू आदि हिन्दू ग्रंथों व हमारे महापुराण आदि में इस आशय का वर्णन मिलता है।

मेरा यह सब लिखने का आशय यह है कि हम हमारी आने वाली पीढ़ी को हमारे गौरव से अवगत करायें, क्योंकि आज इतिहास को परिवर्तित करने की कोशिश हो रही है, ऐसी स्थिति में हमें अपनी प्राचीन संस्कृति को जिंदा रखने की भरपूर कोशिश करनी चाहिये। हम एक समृद्धशाली संस्कृति के घटक हैं हमारे तीर्थ व उनकी प्राचीनता निर्विवाद है, हमें उनकी रक्षा का संकल्प करना है।

आज देश-विदेश में हमारी संस्कृति पर चिंतन हो रहा है, अध्ययन हो रहा है, क्योंकि हम प्रासंगिक हो रहे हैं। हमारे सिद्धान्त हमारी मान्यताएँ, हमारे ग्रंथों में लिखा हुआ लाखों-करोड़ों वर्ष बाद भी सत्य साबित हो रहा है। हमें किसी के प्रमाण-पत्र की आवश्यकता नहीं है। हमें केवल और केवल अपनी बातों को अच्छे से रखना आना चाहिये, हमारे आचरण से हमारी पहचान होनी चाहिये।

आने वाली १८ अप्रैल को हमारा एक और पर्व 'अक्षय तृतीया' आ रहा है। यह वो पर्व है जिसने हमें आहारदान की विधि सिखाई है। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव को एक वर्ष तक आहार की विधि नहीं मिली थी, श्रावकों की अनभिज्ञता के कारण वे आहार नहीं ले पाए, राजा श्रेयांश के यहाँ जब विधिपूर्वक आहार हुआ वह भी इक्षु रस का, जिसे हम वैषाख शुक्ल तीज को मनाते हैं। आज इस पंचमकाल में हमें आहारदान की विधि ज्ञात है, यह हमारा परम सौभाग्य है, हम हमारे जीवंत तीर्थों को इक्षु रस का आहार दें, उनकी अनुमोदना करें, उनकी चर्या में सहभागी बनने का संकल्प लें यही भावना है। जो निरंतर विहार कर रहे हैं, उनकी सेवा के साथ हमारी संस्कृति के पोषक हमारी प्राचीनता के प्रमाण तीर्थों का भी ध्यान रखें।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार द्वारा भारतवर्ष के १०८ मंदिरों के जीर्णोद्धार का पावन पुनीत कार्य सम्पन्न कराया जा रहा है। हम सभी तीर्थ संरक्षण तीर्थ जीर्णोद्धार के कार्य में संलग्न होकर अपने द्रव्य का सदुपयोग करें, तीर्थों को बचाने का संकल्प लें, अपनी पीढ़ी को पराम्परा से अवगत करायें, उनके हाथों में अभिषेक का कलश दें, उनके हाथों से दान करायें, यही भावना है।

हम सबका सौभाग्य, महामस्तकाभिषेक यशस्वी हुआ। अपार प्रसन्नता है कि गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी का महामस्तकाभिषेक 'न भूतो न भविष्यति' की तर्ज पर सकुशल, निर्विघ्न, यशस्वीपूर्वक सम्पन्न हो गया। परमपूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी का कुशल नेतृत्व, उनकी अनुभव की अनुभूति पूर्ण शक्ति के संकल्प को हम सबने महसूस किया। मुझे अत्यन्त गौरव व प्रसन्नता है कि १२ वर्ष में एक बार गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी के महामस्तकाभिषेक के निमित्त हमारे साधु संघ हजारों किलोमीटर का पद विहार कर श्रवणबेलगोला में एकत्रित हुए और अभी तक के इतिहास में सर्वाधिक ३८० पिच्छीधारी संत महामस्तकाभिषेक में आए। हम सब उनके आशीर्वाद के आकांक्षी हैं और चाहेंगे कि हमें उनका आशीष निरंतर प्राप्त होता रहे।

आईये! अक्षय तृतीया मनायें, तीर्थ बचायें, अपना जीवन धन्य करें।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की प्रतिमाह अपनी सहयोग राशि भिजवाकर पुण्यार्जन करें। ध्यान रहे तीर्थ रहेंगे तो हमारी संस्कृति कायम रहेगी, आईये! तीर्थों के प्रति तन-मन-धन से अपना सहयोग कर पुण्यार्जन कर मनुष्य भव सफल करें।

इसी भावना के साथ

अक्षय तृतीया पर्व की शुभकामनाओं सहित।

-सरिता एम.के.जैन

Sarita Jain

राष्ट्रीय अध्यक्ष

अक्षय तृतीया एवं ऋषभदेव

– डॉ. अनुपम जैन

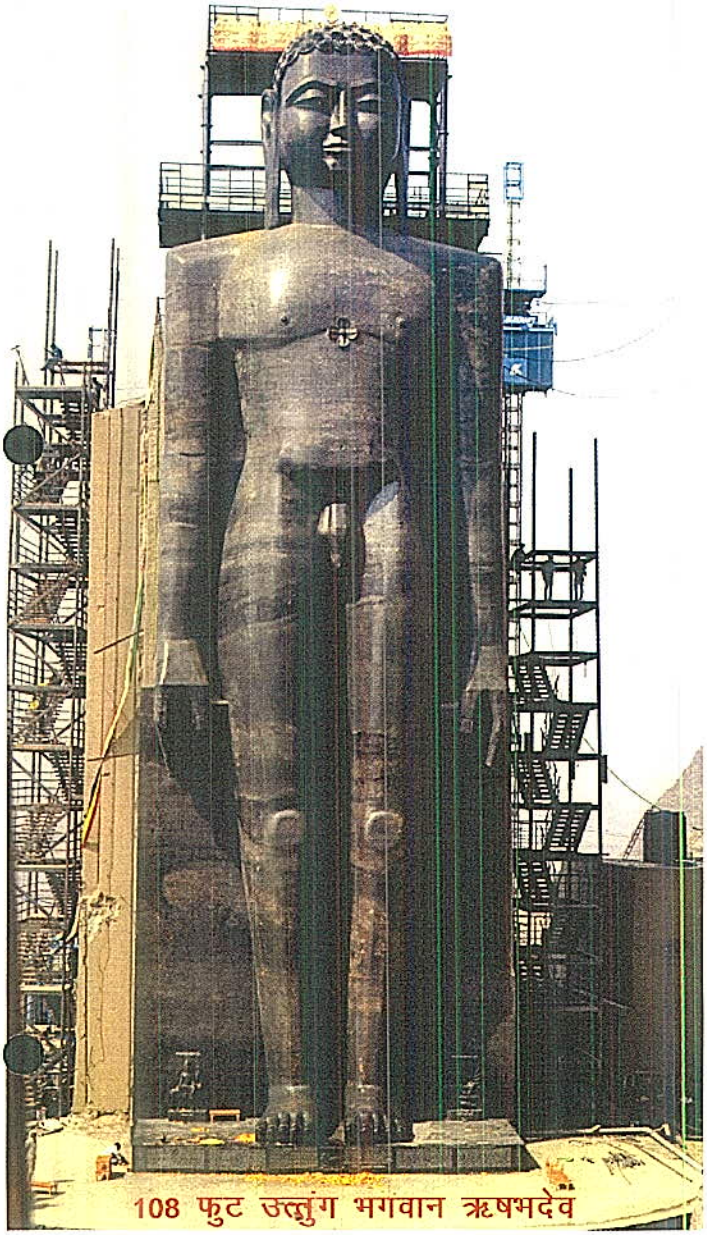

108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव

भारतीय संस्कृति में अक्षय तृतीया का पर्व अत्यत्न पवित्र माना जाता हैं। नवीं शताब्दी के आचार्य जिनसेनकृत आदिपुराण में प्राप्त उल्लेख जैन परम्परा में इस पर्व के महत्व को इंगित करता है। इस वर्ष यह पर्व 18 अप्रैल (बैसाख शुक्ल तृतीया) को आ रहा है।

यह सर्वविदित है कि जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव थे। उनके पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष तथा ऋषभदेव के पिता कुलकर नाभिराय के नाम पर इसे अजनाभवर्ष भी कहा जाता है। भगवान ऋषभदेव का समय संक्रांति का काल था। उनके पूर्व इस देश में कृषि प्रचलित नहीं थी अर्थात लोगों को कृषि कला का ज्ञान नहीं था। कल्पवृक्षों की समाप्ति से जनता जनार्दन के सम्मुख उदरपूर्ति की समस्या पैदा हो गई। तब

ऋषभदेव ने राजा के रूप में जनता को षट्कर्म अर्थात **असि** (शस्त्र विद्या), **मसि** (लेखन कला), **कृषि** (खेती), **विद्या** (विभिन्न प्रकार का ज्ञान ,ज्योतिष), **वाणिज्य** (व्यापार कला) एवं **शिल्प** (कारीगरी) का ज्ञान दिया। इस कारण ऋषभदेव अपने युग के प्रजापालक और लोकप्रिय शासक हुए। कालान्तर में वैराग्य के बाद आपने मुनि दीक्षा ली तथा अनवरत् 6 माह तक तपश्चरण करते हुए आत्मस्वरूप के चिन्तन में लीन रहे। इस अवधि के उपरान्त जब वे आहार के लिये निकले तो किसी को आहार की विधि ही ज्ञात नहीं थी। हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस को पूर्वभव की घटना के कारण अचानक इस विधि का ज्ञान हुआ और वैशाख शुक्ल तृतीया को हस्तिनापुर जो वर्तमान में उ.प्र. के मेरठ जनपद जिले में स्थित हैं, में आपका प्रथम आहार हुआ। उस क्षेत्र में आज भी प्रचुरता से होने वाले गन्ने (इक्षुदण्ड) की खेती में से शुद्ध इक्षु रस तैयार कर उसका आहार दिया गया होगा। इसी कारण राजा श्रेयांस, हस्तिनापुर नगरी तथा यह पावन तिथि अमर हो गई और जैन परम्परा में यह पर्व **दान पर्व** के रूप में अमर हो गयी। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माता जी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप–हस्तिनापुर के परिसर में बने महल में आहारचर्या को दर्शाने वाली मूर्ति विराजित है। इसे **पारणा मंदिर** भी कहते हैं। जैन धर्म की श्वेताम्बर परम्परा में वर्षी तप बहु प्रचलित है। एक उपवास एवं एक आहार की वर्षपर्यन्त साधना के उपरान्त अक्षय तृतीया के दिन पारणा होता है। इस हेतु भी प्रथम क्रम पर हस्तिनापुर एवं बाद में शत्रुंजय पालीताना पसन्द किया जाता है। लोग इस दिन जरूरतमंदों, साधर्मी बन्धुओं को शक्ति अनुसार दान देते हैं। लोक परम्परा में महिलायें आज के दिन पनेड़ी पर नया घड़ा रखती हैं। उसका मुहूर्त करती हैं। जल भरकर उसे कपड़े से ढंक देती है। कपड़े पर मिष्ठान्न आदि रखती हैं तथा पास की दीवाल पर ऋषभदेव की स्मृति

स्वरूप पुरुष की आकृति बनाती है। जैन परम्परा के अतिरिक्त वैदिक परम्परा में भी यह पर्व श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है।

जैन परम्परा में मान्य चौबीस तीर्थंकरों की श्रृंखला में भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ) का नाम प्रथम स्थान पर है एवं अन्तिम तीर्थंकर महावीर (वर्द्धमान)। प्राचीनकाल में जिसका सही–सही निर्धारण सम्भव नहीं है, इस आर्य भूमि पर महाराजा नाभि राज्य करते थे। वे जैन पुराणों के अनुसार 14 कुलकरों में अन्तिम थे। श्रीमद्भागवत् में नाभिराय को आदिमनु स्वायम्भुव के पुत्र प्रियव्रत के पुत्र आग्नौघ्र के 9 पुत्रों में ज्येष्ठ बताया गया है।

आपने कृषि कर्म का विधिपूर्वक उपदेश दिया, जिससे उनकी प्रजा की बड़ी समस्या का समाधान हुआ और वे प्रजाजन, आर्य या कृषिजीवी बन गये।

व्यवस्थित कृषि करने के कारण वे सुखी एवं समृद्ध हुए। इसे एक सुयोग ही कहेंगे कि उस काल से आज तक कृषि का मूलाधार रहा वृषभ (बैल) ही भगवान ऋषभदेव का प्रतीक बना एवं पुरातत्वज्ञ वृषभ लांछन से ऋषभदेव की मूर्तियों की पहचान करते हैं। मात्र इतना ही नहीं ऋषभदेव का एक नाम वृषभदेव भी पड़ गया।

कृषि कर्म का उपदेश महत्त्वपूर्ण था, क्योंकि आगे की सम्पूर्ण व्यवस्था उसी पर आधारित थी। भूखा व्यक्ति कौन–सा पाप नहीं करता? यदि उदरपूर्ति न होती तो प्रथम तो मनुष्य पशु–पक्षियों का भक्षण करता एवं अन्त में मनुष्य–मनुष्य का। फिर क्या समाज व्यवस्था होती? स्वार्थ एवं सुरक्षा से पीड़ित मानव एक–दूसरे के संहार में ही लगा रहता। फिर कौन बात करता ग्राम एवं समाज व्यवस्था की, संस्कृति संरक्षण की, शिल्प कलाओं एवं लिपि विद्याओं की, व्यापार एवं लोकोपकार की ?

आचार्य जिनसेन (9वीं श.ई.) ने आपको पुरुदेव संज्ञा प्रदान की हैं। अत्यधिक गुणों से युक्त होने के कारण उन्हें पुरु कहा जाता था। प्रजा के रक्षक होने के कारण वे प्रजापति कहलाये। इस्लाम में भी आपको आदम बाबा नाम से सम्मानित स्थान दिया गया है।

भगवान ऋषभदेव ने अपनी पुत्रियों को ब्राह्मी लिपि की शिक्षा दी। यह ब्राह्मी लिपि विश्व की प्राचीनतम् लिपि मानी जाती है। एशिया की विभिन्न लिपियों में पाया जाने वाला साम्य शायद इसी मूल स्रोत के कारण है। सुन्दरी को दी गई अंक विद्या समस्त गणितीय विकास का मूलाधार है। जैनाचार्यों द्वारा प्रणीत ग्रंथों में गणित के अनेक सूत्र एवं सिद्धान्त सर्वप्रथम पाये जाते हैं। जिनका अध्ययन **जैन गणित** के अन्तर्गत किया जाता है।

भगवान ऋषभदेव की 2 रानियाँ थीं– यशस्वती एवं सुनन्दा। प्रथम से उत्पन्न थे भरत आदि 100 पुत्र एवं ब्राह्मी तथा द्वितीय से बाहुबली एवं सुन्दरी। इस प्रकार आपके 101 पुत्र एवं 2 पुत्रियाँ थीं। इसके बावजूद प्रतिष्ठित राजसत्ता, सम्पूर्ण वैभव एवं परिवार का त्याग कर आप आत्म साधना हेतु जंगल की ओर प्रयाण कर गये थे एवं वहाँ से मुनिदीक्षा ले तपश्चर्या करके मोक्षगामी बने। तपश्चर्या हेतु वन की ओर प्रस्थान करने से पूर्व आपने अपना राज्य भरत एवं बाहुबली को सौंप दिया था। भरत 6 खण्ड पृथ्वी पर विजय प्राप्त कर चक्रवर्ती बने एवं बाहुबली संसार की असारता का चिन्तवन करते हुए अपने हिस्से का भाग भी भाई को सौंप कर कठोर तपश्चरण कर मोक्षगामी बन जगत्–पूज्य बने। इन्हीं बाहुबली स्वामी की ही मू[illegible] श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में स्थापित है जिसका गत 17–25 फरवरी 2018 के मध्य मस्तकाभिषेक हुआ एवं भक्तों के अनुरोध पर यह अभिषेक जून–18 तक जारी है। इस महोत्सव की सफलता का श्रेय **जगद्गुरु कर्मयोगी भट्टारक चारुकीर्ति महास्वामी जी** के सुयोग्य एवं अनुभवी मार्गदर्शन तथा महोत्सव समिति की यशस्वी अध्यक्षा **श्रीमती सरिता एम. के. जैन,चेन्नई** को है जिन्होंने 1–1.5 वर्ष तक अहर्निश श्रम किया है।

भगवान ऋषभदेव ने घोर तपश्चरण करके कैलाश पर्वत से मुक्ति प्राप्त की थी। निर्वाण भूमि के प्रतीक रूप में बद्रीनाथ में आदिनाथ आध्यात्मिक अहिंसा फाउण्डेशन, इन्दौर के तत्वावधान में निर्वाण स्थली विकसित की गई है।

ऐसे जगत् पूज्य भगवान ऋषभदेव के जीवन उन[illegible] व्यक्तित्व तथा मानवता को दिये गये अवदान को विश्व समुदाय के सम्मुख सही रूप में प्रस्तुत करने हेतु आज सघन प्रयासों की आवश्यकता है क्योंकि भगवान ऋषभदेव द्वारा प्रतिपादित जीवनशैली ही आज की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करेंगी। हम सभी को मिलकर भगवान ऋषभदेव की शिक्षाओं को जीवन में उतारना चाहिये। जैन धर्म की प्राचीनता को स्थापित करने एवं जैन धर्म की मूल निर्गन्थ दिगम्बर परम्परा से विश्व को परिचित कराने के भाव से ही परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माता जी की द्वारा में 108 फीट की भगवान ऋषभदेव की मूर्ति मांगीतुंगी में स्थापित कराई। अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर भगवान ऋषभदेव के चरणों में कोटिशः नमन।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

Bharatvarshiya Digamber Jain Tirthkshetra Committee

Registered under Indian Societies Act. of 1860 Bearing No. 570 of 1930
Bombay Public Trust Act, 1950 Bearing No. F/10 of 1952

दिनांक:-३०/३/२०१८

मीटिंग की सूचना

सभासद-प्रबंधकारिणी समिति
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी,मुम्बई

मान्यवर,

सूचनार्थ निवेदन है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की प्रबंधकारिणी समिति की बैठक रविवार, दिनांक २२/४/२०१८ को मध्यान १२.०० बजे से श्री १००८ चिन्तामणी पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कचनेर, औरंगाबाद (महा.) पर रखी गई है। जिसमें आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

विचारणीय विषय:-

१. गत प्रबंधकारिणी समिति की बैठक की कार्यवाही की संपुष्टि करना।
२. तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद द्वारा स्वीकृत वर्ष २०१६-१८ का ऑडिटेड हिसाब स्वीकृत करना। (ऑडिटेड हिसाब मीटिंग स्थल पर उपलब्ध रहेगा।)
३. आगामी वर्ष २०१८-२०१९ का अनुमान पत्रक (बजट) स्वीकृत करना। (बजट की प्रति मिटिंग स्थल पर उपलब्ध रहेगी।)
४. श्री गिरनारजी सिद्धक्षेत्र के बारे गुजरात हाई कोर्ट में चल रहे मुकदमों की प्रगति की जानकारी तथा कोर्ट के माध्यम से समझौते के बारे में चल रहे प्रयासों की जानकारी।
५. श्री सम्मेदशिखरजी एवं श्री अतंरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र सिरपूर के बारे में सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) में चल रही सुनवाई की जानकारी एवं समझौते की दिशा में श्वेताम्बर प्रतिनिधियों के साथ अनेको बार हुये वार्तालाप के बावजूद भी अभी तक दोनों पक्षों में सहमति नहीं हो सकने की जानकारी।
६. श्री सम्मेदशिखरजी एवं श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र सिरपुर के बारे सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) में चल रही सुनवाई के दरम्यान हो रहे आय व्यय की जानकारी एवं सम्भावित व्यय की राशि की व्यवस्था पर विचार।
७. सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए भगवान गोमटेश महामस्तसकाभिषेक महोत्सव २०१८ की जानकारी एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से महोत्सव को सफल बनाने में किये गये प्रयासों की जानकारी।
८. अध्यक्ष की अनुमति से प्रस्तुत अन्य विषय।

आपका,

(संतोषकुमार जैन पेंढारी)
महामंत्री

विशेष:-

१. कोरम की पूर्ति न होने की दशा में बैठक स्थगित कर दी जायेगी और आधे घण्टे बाद उसी स्थान पर पुन: बैठक होगी, जिसमें कोरम की पूर्ति का प्रश्न नहीं रहेगा।
२. आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था की गई है। कृपया अपने आगमन की सूचना तीर्थक्षेत्र कमेटी मुम्बई कार्यालय एवं निम्न लिखित पते पर देवें। जिससे व्यवस्था करने में हमें सुविधा हो सके।

संपर्क:-	१) श्री प्रमोद कुमार कासलीवाल, औरंगाबाद (अध्यक्ष महाराष्ट्र अंचल)	मोबईल नं-०९४२२२०६१५८
	२) श्री देवेन्द्र काला , औरंगाबाद (महामंत्री महाराष्ट्र अंचल)	मोबाईल नं-०९८२३६१७००१
	३) श्री केतन ठोले	मोबाईल नं-०९८२३१२०२०५/०९५११७५८८३५
	४) श्री निलेश काला	मोबाईल नं-०९४२२२१४९९८/०९५९५६३१००८

महामंत्री कार्यालय : हीराबाग, सी. पी. टैंक, मुंबई-४०० ००४. Hirabaug, C. P. Tank, Mumbai-400004.

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

Bharatvarshiya Digamber Jain Tirthkshetra Committee

Registered under Indian Societies Act, of 1860 Bearing No. 570 of 1930
Bombay Public Trust Act, 1950 Bearing No. F/10 of 1952

दिनांक:-३०/३/२०१८

मीटिंग की सूचना

सभासद-साधारण सभा
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई
मान्यवर,

सूचनार्थ निवेदन है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की साधारण सभा का आधिवेशन रविवार, दिनांक २२/४/२०१८ को मध्यान १२.३० बजे से श्री १००८ चिन्तामणी पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कचनेर, औरंगाबाद (महा.) पर आयोजित किया गया है। जिसमें आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

विचारणीय विषय:-

१. गत साधारण सभा के अधिवेशन की कार्यवाही की संपुष्टि करना।
२. तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद द्वारा स्वीकृत वर्ष २०१६-१७ के ऑडिटेड हिसाब एवं कार्य विवरण पर विचार कर निर्णय लेना। (ऑडिटेड हिसाब मीटिंग स्थल पर उपलब्ध रहेगा।)
३. वर्ष २०१७-२०१८ एवं २०१८-१९ के लिए लेखा परीक्षक की नियुक्ति करना तथा उनका मानदेय सुनिश्चित करना।
४. श्री गिरनारजी सिद्धक्षेत्र के बारे में गुजरात हाई कोर्ट में चल रहे मुकदमों की प्रगति की एवं कोर्ट के माध्यम से समझौते के बारे में चल रहे प्रयासों की जानकारी।
५. श्री सम्मेदशिखरजी एवं श्री अतंरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र सिरपूर के बारे सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) में चल रहे केस की सुनवाई की एवं समझौते की दिशा में श्वेताम्बर प्रतिनिधियों के साथ अनेको बार हुये वार्तालाप के बावजूद भी अभी तक दोनों पक्षों में सहमति नहीं हो सकने की जानकारी।
६. श्री सम्मेदशिखरजी एवं श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र सिरपुर के बारे सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) में चल रहे केस की सुनवाई के दरम्यान हो रहे आय व्यय की जानकारी एवं सम्भावित व्यय की राशि की व्यवस्था पर विचार।
७. सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए भगवान गोमटेश महामस्तसकाभिषेक महोत्सव २०१८ की एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से महोत्सव को सफल बनाने में किये गये प्रयासों की जानकारी।
८. अध्यक्ष की अनुमति से प्रस्तुत अन्य विषय।

आपका,

(संतोषकुमार जैन पेंढारी)
महामंत्री

विशेष:-

१. कोरम की पूर्ति न होने की दशा में बैठक स्थगित कर दी जायेगी और आधे घण्टे बाद उसी स्थान पर पुन: बैठक होगी, जिसमें कोरम की पूर्ति का प्रश्न नहीं रहेगा।
२. आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था की गई है। कृपया अपने आगमन की सूचना तीर्थक्षेत्र कमेटी मुम्बई कार्यालय एवं निम्न लिखित पते पर देवें। जिससे व्यवस्था करने में हमें सुविधा हो सके।

संपर्क:-	१) श्री प्रमोद कुमार कासलीवाल, औरंगाबाद (अध्यक्ष महाराष्ट्र अंचल)	मोबईल नं-०९४२२२०६१५८
	२) श्री देवेन्द्र काला , औरंगाबाद (महामंत्री महाराष्ट्र अंचल)	मोबाईल नं-०९८२३६१७००१
	३) श्री केतन ठोले	मोबाईल नं-०९८२३१२०२०५/०९५११७५८८३५
	४) श्री निलेश काला	मोबाईल नं-०९४२२२१४९९८/०९५९५६३१००८

महामंत्री कार्यालय : हीराबाग, सी. पी. टैंक, मुंबई-४०० ००४. Hirabaug, C. P. Tank, Mumbai-400004.

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 8 अंक 10 — अप्रैल 2018

श्रीमती सरिता एम.जैन	अध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.	उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल एम.दोशी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री पंकज जैन	उपाध्यक्ष
श्री हुकम जैन 'काका'	उपाध्यक्ष
श्री संतोष पेंढारी	महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया	कोषाध्यक्ष
श्री विनोद वाकलीवाल	मंत्री
श्री वीरेश सेठ	मंत्री
श्री शरद जैन	मंत्री
श्री खुशाल जैन सी.ए.	मंत्री

प्रधान संपादक
प्रो.अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
उमानाथ दुबे

परामर्श मंडल

डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
श्री शांतिलाल जैन जांगड़ा, उदयपुर
प्रो.डॉ.अजित दास, चेन्नई
प्रो.डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
Website : www.digamberjainteerth.com

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

जैन परम्परा में आखा तीज का है विशेष महत्व	10
भगवान महावीर की दृष्टि में अहिंसा	12
भगवान महावीर और जैनदर्शन	13
जीवन निर्माण और आत्मविकास में सहायक भगवान् महावीर के सिद्धान्त	15
अक्षय तृतीया से पवित्र है हस्तिनापुर की धरती	17
भगवान महावीर की दिव्य-देशना	19
युगपुरुष अलंकरण समारोह	20
आचार्य विद्यासागर जी के प्रति दिग्विजय सिंह की अपार श्रृद्धा एवं समर्पण	23
महावीरजी में बही विकास की गंगा	26
बिहार सरकार ने मनाया 'वैशाली महोत्सव'	28
श्री महावीर ब्रह्मचर्य श्रम (जैन गुरुकुल) कारंजा (लाड) जिला-वासिम (महा.)	34

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के सदस्य वनकर तीर्थों के संरक्षण-संवधर्न और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिए

संरक्षक सदस्य	रु.5,00,000/- प्रदान कर
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/- प्रदान कर
सम्मानीय सदस्य	रु. 31,000/- प्रदान कर
आजीवन सदस्य	रु. 11,000/- प्रदान कर

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, चरिटेवल ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्व सोसायटी या कार्पोरेट वॉडी भी उपरोक्त प्रावधान के अन्तर्गत सदस्य वन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्ष के लिए होगी।

2) जो सदस्य इनकम टैक्स की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अन्तर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।

3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके व्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्वर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि वैंक ऑफ वड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंवई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा वैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंवई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंवई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

जैन परम्परा में आखा तीज का है विशेष महत्व

–डॉ0 सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

(दान तीर्थ प्रवर्तक पर्व है अक्षय तृतीया, जैन परम्परा के अनुसार अक्षय तृतीया के दिन ही दान की परंपरा की शुरूवात हुयी थी। जैन परंपरा में इस पर्व का बड़ा महत्व है। इसी कारण इसे विशेष श्रद्धाभाव से मनाया जाता है। जैनधर्म में दान का प्रवर्तन इसी तिथि से माना जाता है, क्योंकि इससे पूर्व दान की विधि किसी को मालूम नहीं थी। अतः अक्षय तृतीया के इस पावन पर्व को देश भर के जैन श्रद्धालु हर्षोल्लास व अपूर्व श्रद्धा भक्ति से मनाते हैं। इस दिन हस्तिनापुर में भी विशाल आयोजन किया जाता है। इस दिन व्रत, उपवास रखकर इस पर्व के प्रति अपनी प्रगाढ़ आस्था दिखाते हैं।)

भारतीय संस्कृति में पर्व, त्याहारों और व्रतों का अपना एक अलग महत्व है। ये हमें हमारी सांस्कृतिक परंपरा से जहां जोड़ते हैं वहीं हमारे आत्मकल्याण में भी कार्यकारी होते हैं। वैशाख शुक्ला तृतीया को अक्षय तृतीया पर्व मनाया जाता है। इस दिन जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) ने राजा श्रेयांस के यहां इक्षु रस का आहार लिया था, जिस दिन तीर्थंकर ऋषभदेव का आहार हुआ था, उस दिन वैशाख शुक्ला तृतीया थी। उस दिन राजा श्रेयांस के यहां भोजन, अक्षीण (कभी खत्म न होने वाला) हो गया था। अतः आज भी लोग इसे अक्षय तृतीया कहते हैं। जैनधर्म के अनुसार भरत क्षेत्र में इसी दिन से आहार दान की परम्परा शुरू हुई। ऐसी मान्यता है कि मुनि का आहार देने वाला इसी पर्याय से या तीसरी पर्याय से मोक्ष प्राप्त करता है। राजा श्रेयांस ने भगवान आदिनाथ को आहारदान देकर अक्षय पुण्य प्राप्त किया था, अतः यह तिथि अक्षय तृतीया के रूप में मानी जाती है। यह दिन बहुत ही शुभ होता है, इस दिन बिना मुहूर्त निकाले शुभ कार्य संपन्न होते हैं।

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में विजयार्ध पर्वत से दक्षिण की ओर मध्य आर्यखण्ड में कुलकरों में अंतिम कुलकर नाभिराज हुए। उनके मरूदेवी नाम की पट्टरानी थी। रानी के गर्भ में जब जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव आये तब गर्भकल्याणक उत्सव देवों ने बड़े ठाठ से मनाया और जन्म होने पर जन्म कल्याणक मनाया। फिर दीक्षा कल्याणक होने के बाद ऋषभदेव ने छःमाह तक घोर तपस्या की। छः माह के बाद चर्या (आहार) विधि के लिए ऋषभदेव भगवान ने अनेक ग्राम नगर शहर में विहार किया, किन्तु जनता व राजा लोगों को आहार की विधि मालूम न होने के कारण भगवान को धन, कन्या, पैसा, सवारी आदि अनेक वस्तु भेंट की। भगवान ने यह सब अंतराय का कारण जानकर पुनः वन में पहुंच छःमाह की तपश्चरण योग धारण कर लिया।

अवधि पूर्ण होने के बाद पारणा करने के लिए चर्या मार्ग से ईर्यापथ शुद्धि करते हुए ग्राम, नगर में भ्रमण करते–करते कुरूजांगल नामक देश में पधारे। वहां हस्तिनापुर में कुरूवंश के शिरोमणि महाराजा सोम राज्य करते थे। उनके श्रेयांस नाम का एक भाई था उसने सर्वार्थसिद्धि नामक स्थान से चयकर यहां जन्म लिया था।

एक दिन रात्रि के समय सोते हुए उसे रात्रि के आखिरी भाग में कुछ स्वप्न आये। उन स्वप्नों में मंदिर, कल्पवृक्ष, सिंह, वृषभ, चंद्र, सूर्य, समुद्र, आग, मंगल द्रव्य यह अपने राजमहल के समक्ष स्थित हैं ऐसा उस स्वप्न में देखा तदनंतर प्रभात बेला में उठकर उक्त स्वप्न अपने ज्येष्ठ भ्राता से कहे, तब ज्येष्ठ भ्राता सोमप्रभ ने अपने विद्वान पुरोहित को बुलाकर स्वप्नों का फल पूछा। पुरोहित ने जबाव दिया– हे राजन! आपके घर श्री ऋषभदेव भगवान पारणा के लिए पधारेंगे, इससे सबको आनंद

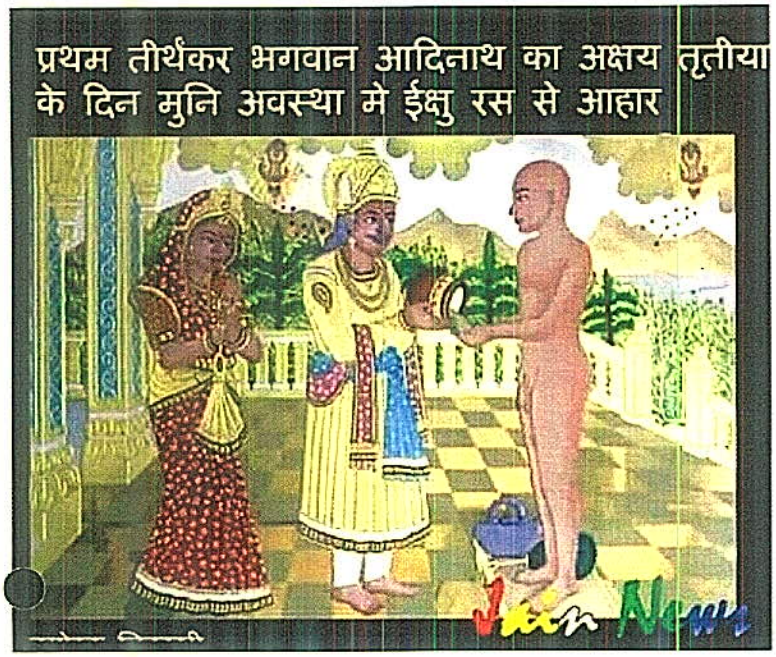

हुआ।

इधर भगवान ऋषभदेव आहार (भोजन) हेतु ईर्या समितिपूर्वक भ्रमण करते हुए उस नगर के राजमहल के सामने पधारे तब सिद्धार्थ नाम का कल्पवृक्ष भी मानो अपने सामने आया है, ऐसा सबको भास हुआ। राजा श्रेयांस को भगवान ऋषभदेव का श्रीमुख देखते ही उसी क्षण अपने पूर्वभव में श्रीमती वज्रसंघ की अवस्था में एक सरोवर के किनारे दो चारण मुनियों को आहार दिया था–उसका जाति स्मरण हो गया। अतः आहारदान की समस्त विधि जानकर श्री ऋषभदेव भगवान को तीन प्रदक्षिणा देकर पड़गाहन किया व भोजन गृह में ले गये।

'प्रथम दान विधि कर्ता' ऐसा वह दाता श्रेयांस राजा और उनकी धर्मपत्नी सुमतीदेवी व ज्येष्ठ बंधु सोमप्रभ राजा अपनी लक्ष्मीपती आदि ने मिलकर श्री भगवान ऋषभदेव को सुवर्ण कलशों द्वारा तीन खण्डी (बंगाली तोल) इक्षुरस (गन्ना का रस) तो अंजुल में होकर निकल गया और दो खण्डी रस पेट में गया।

इस प्रकार भगवान ऋषभदेव की आहारचर्या निरन्तराय संपन्न हुई। इस कारण उसी वक्त स्वर्ग के देवों ने अत्यंत हर्षित होकर पंचाश्चर्य (रत्नवृष्टि, गंधोदक वृष्टि, देव दुंदुभि, बाजों का बजना व जय–जयकार शब्द होना) वृष्टि हुई और सभी ने मिलकर अत्यंत प्रसन्नता मनाई।

आहारचर्या करके वापस जाते हुए ऋषभदेव भगवान ने सब दाताओं को 'अक्षय दानस्तु' अर्थात् दान इसी प्रकार कायम रहे, इस आशय का आशीर्वाद दिया, यह आहार वैशाख सुदी तीज को सम्पन्न हुआ था।

जब ऋषभदेव निरंतराय आहार करके वापस विहार कर गए उसी समय से अक्षय तीज नाम का पुण्य दिवस (जैनधर्म के अनुसार) का शुभारंभ हुआ। इसको आखा तीज भी कहते हैं। यह दिन हिन्दू धर्म में भी बहुत पवित्र माना जाता है। इस दिन अनबूझा मुहूर्त मानकर शादी, विवाह एवं मंगलकार्य प्रचुर मात्रा में होते हैं।

जैन धर्म में दान का प्रवर्तन इसी तिथि से माना जाता है, क्योंकि इससे पूर्व दान की विधि किसी को मालूम नहीं थी। अतः अक्षय तृतीया के इस पावन पर्व को देश भर के जैन श्रद्धालु हर्षोल्लास व अपूर्व श्रद्धा भक्ति से मनाते हैं। इस दिन हस्तिनापुर में भी विशाल आयोजन किया जाता है। इस दिन व्रत, उपवास रखकर इस पर्व के प्रति अपनी प्रगाढ आस्था दिखाते हैं।

अक्षय तृतीया व्रत विधि एवं मंत्र – यह व्रत जैन परम्परा के अनुसार वैशाख सुदी तीज से प्रारम्भ होता है। उस दिन शुद्धतापूर्वक एकासन करें या 2 उपवास या 3 एकासन करें।

इसकी विधि यह है कि व्रत की अवधि में प्रातः नैत्यिक क्रिया से निवृत्त होकर मंदिर जी को जावें। मंदिर जी में जाकर शुद्ध भावों से भगवान की दर्शन स्तुति करें। पश्चात् भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा को सिंहासन पर विराजमान कर कलशाभिषेक करें। नित्य नियम पूजा भगवान आदि तीर्थंकर (ऋषभदेव) की पूजा एवं पंचकल्याणक का मण्डल जी मंडवाकर मण्डल जी की पूजा करें। तीनों काल (प्रातः, मध्यान्ह, सांय) निम्नलिखित मंत्र जाप्य करें एवं सामायिक करें–

मंत्र – ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथतीर्थंकराय नमः स्वाहा।

प्रातः सांय णमोकार मंत्र का शुद्धोच्चारण करते हुए जाप्य करें।

व्रत के समय में गृहादि समस्त क्रियाओं से दूर रहकर स्वाध्याय, भजन, कीर्तन आदि में समय यापन करें। दिन भर जिन चैत्यालय में ही रहें। व्रत अवधि में बम्हचर्य से रहें। हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह इन पांच पापों का अणुव्रत रूप से त्याग करें। क्रोध, मान, माया, लोभ कषायों को शमन करें।

व्रत पूर्ण होने पर यथाशक्ति उद्यापन करें। भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा मंदिरजी में भेंट करें तथा मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका चतुर्विध संघ को चार प्रकार का दान देवें। इस प्रकार शुद्धतापूर्वक विधिवत रूप से व्रत करने से सर्व सुख की प्राप्ति होती है तथा साथ ही क्रम से अक्षय सुख अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होती है।

भगवान महावीर की दृष्टि में अहिंसा

-ग. आ. शुभमति

आज लोगों के मन में अहिंसा की परिभाषा यही है कि शारीरिक स्तर पर किसी की मार-पिटाई न करना और किसी को गाली-गलौच न करना। लेकिन क्या अहिंसा यहाँ तक ही सीमित है। यदि अहिंसा को गहराई से समझना है तो रोज़मर्रा के जीवन में भी सूक्ष्म स्तर पर यह देखना होगा कि दिनभर में हमसे कितनी बार और किस प्रकार से हिंसा हो रही है। इंसान के द्वारा हुए एक ग़लत व्यवहार से उसके जीवन में कर्म बंधन की एक लकीर बन जाती है। यही लकीर रस्सी की तरह आपको बंधन में बाँधती जाती है। भगवान महावीर ने ऐसे बंधनों को तोड़ने के लिए कहा है। इन बंधनों को खोलते-खोलते परमात्मा बनना है। आत्मा को परमात्मा में विलीन होना है। इसके लिए आपको अपने भीतर की सूक्ष्म लकीरों को देखना सीखना होगा। हर लकीर से मुक्ति पाने के लिए सूक्ष्म से सूक्ष्म लकीरों को पहचानने की कला आपको सीखनी होगी। तभी आपकी मुक्ति सम्भव है। क्या कभी किसी पेड़ के पत्ते को यूँ ही तोड़ते हुए आपने सोचा है कि मेरे अंदर इस पेड़ के प्रति प्रेम है या नफ़रत? शायद आपने खुद से ऐसे सवाल नहीं पूछे होंगे। लेकिन याद रखे कि जब कोई खुद से ऐसे सवाल पूछता है, तभी जागृति आना शुरू होती है।

जब आपको कही कोई पौधा या कोई फूल दिखाई देता है तो खुशी होती है, कितना सुंदर फूल है। लेकिन जब आप उस फूल को तोड़ते वक़्त अपने आप से सवाल पूछे कि मुझे इस पेड़ से या फूल से नफ़रत है या प्रेम है अगर प्रेम है तो फिर उसे तोड़ने की क्रिया नहीं करेंगे। क्योंकि आप किसी पौधे को या उसमें लगे फूल को उखाडेंगे, जब आपको उससे नफ़रत होगी। अगर प्रेम होगा तो स्वतः ही आपके अंदर यह सवाल उठेगा कि मैं इसे क्यों तोड़ रहा हूँ? पर लोगों के साथ ऐसा नहीं होता क्योंकि इस हिंसा की तरफ़ उनका ध्यान ही नहीं जाता। उसका सारा ध्यान तो फूल की सुंदरता और उसकी खुशबू पर होता है। वे सोचते है कि अब यह फूल मैं अपने प्रियजन को देना चाहता हूँ। इस तरह के विचार ही इंसान की विचार प्रक्रिया को नियंत्रित कर लेते है। वासना या लोभ के विचार बहुत शक्तिशाली होते है लेकिन इनके कारण ही हिंसा भी होती है। अगर आप फूल तोड़ने की प्रक्रिया को उस पौधे के नज़रिए से देखे तो यह हिंसा बंद हो जाएगी। इसके लिए आपको केवल अपना नज़रिया बदलना पड़ेगा। आपका ध्यान फूल और प्रकृति के सौंदर्य से ज़्यादा इस बात पर था कि मैं इस फूल को क्या करूँगा। अगर यह फूल मुझे मिल जाए तो मैं इससे गुलकंद बनाऊँगा। इसी नज़रिए को बदलना है क्योंकि इससे भी हिंसा की एक लकीर बनेगी। जैसे जब कोई कीड़ा आपको काटता है तो कई बार आप उसे मार देते है। काटनेवाले कीड़े के प्रति आपके अंदर इतनी चिढ़ पैदा हो जाती है कि आप उसे मारने से हिचकिचाते नहीं है। लेकिन जब आप फूल या पत्ते तोड़ते है तो वैसी चिढ़ नहीं होती। आपके अंदर जिसके प्रति जितनी चिढ़ होगी, आपकी कर्म बंधन की लकीर उतनी ही गहरी होगी।

जब आप अख़बार में कोई ख़बर पढ़ते है या कोई न्यूज़ चैनल देखते है तो ऐसी कई ख़बरें होती है, जिनसे आपके अंदर चिढ़ पैदा होती है। अगर उसमें कोई ख़बर मच्छरों के बारे में हो, तब तो शायद आपकी चिढ़ और बढ़ जाएगी। क्योंकि आपको पता है कि मच्छरों के काटने से कौन-कौन सी बीमारियाँ फैलती है। ऐसी बीमारियाँ अपने परिवार के किसी सदस्य को न हो इसीलिए आप मच्छरों को मारते है। लेकिन यदि आप नफ़रत के साथ मच्छरों को मार रहे है तो यह एक प्रकार की हिंसा ही है। इसलिए आपको ग़ौर करना है कि आप अपने परिवार वालों के प्रेम के ख़ातिर मच्छरों को मार रहे है या इसके पीछे नफ़रत एक कारण है। क्योंकि इसी से तय होगा कि हिंसा की लकीर कैसी होगी। जितनी चिढ़ ज़्यादा होगी, लकीर उतनी ही गहरी होगी। यदि कोई आपको मारपीट करे तो आप यह बर्दाश्त नहीं कर पायेंगे। इस प्रकार की हिंसा आपको अच्छी नहीं लगेगी इसलिए आपको भी किसी और के साथ इस प्रकार की हिंसा नहीं करनी चाहिए। उसी तरह जीवन में आनेवाला कोई दुःख भी आपको अच्छा नहीं लगता। किसी को दुखी करना भी एक प्रकार की हिंसा है। इसीलिए आपको अपने व्यवहार से किसी को भी दुखी नहीं करना चाहिए। और यदि कोई आप पर नियंत्रण रखे या आपको अपना दास बनाने का प्रयास करे तो आपको यह अच्छा नहीं लगेगा क्योंकि किसी को दास बनाना या किसी पर नियंत्रण रखना भी एक प्रकार की हिंसा ही है। इससे समझे कि जिन बातो से आपको तकलीफ़ होती है या अच्छा महसूस नहीं होता, वे ही बातें यदि आप दूसरों के साथ करते है, दूसरों मो उसी प्रकार की तकलीफ़ देते है तो यह हिंसा में आता है और इस हिंसा की लकीर कर्म बंधन की रस्सी बनती है। जहाँ नफ़रत की भावना अधिक है, वहाँ क्षमा-साधना बहुत ही आवश्यक है। जब आप क्षमा साधना करते है तो नफ़रत समाप्त होती है और धीरे-धीरे मन की शुद्धता आने लगती है, प्रेम जागृत होने लगता है। इस तरह धीरे-धीरे आप क्षमा की गहराई तक पहुँच जाते है। क्षमा साधना से आपके भीतर प्रेम इतना उभर आएगा कि ऐसी सारी नरकात्मक गति विधियाँ बंद हो जाएगी। हर इंसान को यदि दया भाव समझ में आ जाएगा तो उससे होने वाली सूक्ष्म हिंसा भी ख़त्म हो जाएगी।

भगवान महावीर और जैनदर्शन

डॉ. महेश जैन, सह. संचालक
प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान, भोपाल

(डॉ.महेश जैन वरिष्ठ शिक्षाविद होने के साथ में जैन दर्शन के मर्मज्ञ अध्येता है । आपका चिंतन उत्कृष्ट कोटी का एवं जनसामान्य को समझ में आने वाला है । भगवान महावीर जयंती के अवसर पर आपका उक्त आलेख आकाशवाणी भोपाल से भी प्रसारित हुआ । इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं संचार माध्यमों के माध्यम से जैन दर्शन को जन–जन तक पहुंचाने का भाव रखने वाले डॉ.महेश जैन प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान, लोक शिक्षण संचालनालय, भोपाल में वरिष्ठ अधिकारी के रुप में कार्यरत है । – राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद (म.प्र))

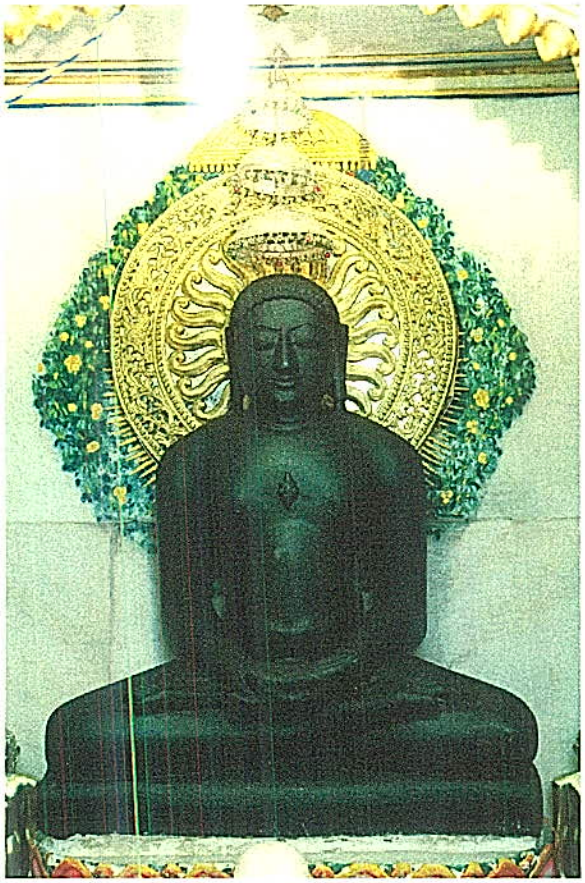

भगवान महावीर जैन परम्परा में वर्तमान काल के 24वें तीर्थंकर माने जाते हैं। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर। वर्तमान काल का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि जैन परम्परा अपने धर्म को अनादि अनन्त स्वीकार करती है। इसप्रकार भूतकाल में 24 तीर्थंकर हो चुके हैं। वर्तमान में 24 तीर्थंकर हुए हैं और भविष्य में 24 तीर्थंकर होगे। इसक्रम में भगवान महावीर वर्तमान काल के 24वें तीर्थंकर है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि जैनधर्म का प्रारंभ भगवान महावीर ने नहीं किया और न ही ऋषभदेव ने यह अनादि अनन्त धर्म है जिसकी व्याख्या प्रत्येक तीर्थंकर ने जीवों के कल्याणार्थ अपने अपने काल में की है। यह लोक अभिरुचि है कि हम अंतिम व्यक्ति को अधिक याद रख पाते हैं इस दृष्टि से अंतिम तीर्थंकर होने के कारण भगवान महावीर को हम अधिक याद करते हैं तथा जैनधर्म के स्रोत पुरुष के रूप में उनको मानने लगते है। एक बात और भी महत्वपूर्ण है कि जैनधर्म के अनुसार भगवान में और तीर्थंकर में अंतर होता है। जो वीतरागी और सर्वज्ञ होते हैं वे भगवान होते हैं और जो वीतरागी सर्वज्ञ और हितापदेशी होते हैं वे तीर्थंकर होते हैं। भगवान अनन्त होते हैं और प्रत्येक काल में तीर्थंकर चौबीस। तीर्थंकर महावीर ने जैन धर्म की परम्परा को अद्यावधि अक्षुण्ण रखा है अतः आज हम उन्हें श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं। तीर्थंकर शब्द का अर्थ ही यह है कि जो धर्म का प्रचार करे 'तरति पापादिकं यस्मात् इति तीर्थम्'। तीर्थंकर किसी नये धर्म का सूत्रपात नहीं करते अपितु आत्मधर्म का स्वयं साक्षात्कार करके उसकी पुनर्व्याख्या करते है।

ईसा पूर्व छठवीं शताब्दी विश्व के इतिहास में युगों युगों तक चिरस्मरणीय रहेगी। इस सदी में भारत वसुन्धरा ने कुण्डलपुर नगर में एक ऐसे वीर सपूत को जन्म दिया था जिसने अपने साहस, धैर्य, त्याग से अपने युग की धारा बदल दी। वे वीर पुरुष थे चौबीस वे तीर्थंकर भगवान महावीर, जिनका जन्म 27 मार्च ई.पू. 598 चैत्रमास की शुक्ल त्रयोदशी को हुआ था। वे नाथवंशीय क्षत्रिय राजकुमार थे। बालक महावीर की माता का नाम त्रिशला तथा पिता का नाम सिद्धार्थ था। तीर्थंकर महावीर के माता पिता भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा के अनुयायी थे। उनके अहिंसा करूणा दया और संयम शीलता आदि महान गुणों के कारण उनका जीवन आलोकित था। अतः महावीर को उनसे इन गुणों की आदर्श छाया प्राप्त हुई। मात्र 08 वर्ष की अवस्था में ही जीवों पर दया करना, सत्य भाषण करना, अर्चार्यव्रत का पालन करना, ब्रह्मचर्य ब्रत को धारण करना, तथा इच्छाओं को सीमित करने का व्रत धारण कर लिया। 30 वर्ष की अवस्था में उन्होंने गृह त्याग कर दीक्षा धारण की तथा लगातार 12 वर्ष की आत्मसाधना के बाद उन्होंने केवलज्ञान की प्राप्ति की। संपूर्ण ज्ञान की प्राप्ति के पश्चात लगातार 30 वर्ष तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में भ्रमण कर धर्मोपदेश रूपी तीर्थ का प्रवर्तन

किया और तीर्थंकर कहलाये।

बाल्यावस्था से ही महावीर का जीवन विभिन्न घटनाओं से परिपूर्ण रहा और ऐसा माना जाता है कि इन घटनाओं पर विजय प्राप्त करने के कारण ही उन्हें वीर, अतिवीर, सन्मति, वर्धमान और महावीर नामों से संबोधित किया गया। लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त जितने गूढ़, गंभीर व ग्राह्य हैं उनका जीवन उतना ही सादा, सरल एवं सपाट रहा है उसमें विविधताओं को कोई स्थान प्राप्त नहीं है। उनके जीवन में भले ही घटनाएं घटित दिखायी देती हो लेकिन घटनाओं में जीवन को देखना उसे खण्डों में बांटना है। भगवान महावीर का व्यक्तित्व अखण्ड है, अविभाज्य है, उसका विभाजन संभव नहीं है। उनके व्यक्तित्व को घटनाओं में बांटना उनके व्यक्तित्व को खंडित करना है। भगवान महावीर के आकाशवत् विशाल और सागर से गंभीर व्यक्तित्व को बालक वर्द्धमान की बाल सुलभ क्रीडाओं से जोड़ने पर उनकी गरिमा बढ़ती नहीं वरन् खंडित होती है।

सन्मति शब्द का कितना भी महान अर्थ क्यों न हो, यह केवल ज्ञान की विराटता को अपने में समेट नहीं सकता। बढते तो अपूर्ण हैं, जो पूर्णता को प्राप्त हो चुका हो, उसे वर्द्धमान कहना कहां तक सार्थक हो सकता है। सांप से न डरना बालक महावीर के लिए वीर कहला सकती है, भगवान महावीर के लिए नहीं। हाथी को वश में करना राजकुमार महावीर के लिए अतिवीर कहला सकती है, भगवान महावीर के लिए नहीं। पूर्ण अभय को प्राप्त महावीर एवं पूर्ण वीतरागी सर्व स्वातंत्र के उद्घोषक तीर्थंकर भगवान महावीर के लिए सांप से न डरना, हाथी को काबू में रखना क्या महत्व रखते हैं ?

तीर्थंकर महावीर के विराट व्यक्तित्व को समझने के लिए हमें उन्हें विरागी, वीतरागी दृष्टिकोण से देखना होगा। वे धर्म क्षेत्र के वीर, अतिवीर और महावीर थे युद्धक्षेत्र के नहीं। युद्धक्षेत्र और धर्मक्षेत्र में बहुत बड़ा अंतर है। युद्धक्षेत्र में शत्रु का नाश किया जाता है और धर्मक्षेत्र में शत्रुता का। युद्धक्षेत्र में पर को जीता जाता है और धर्मक्षेत्र में स्वयं को। युद्धक्षेत्र में पर को मारा जाता है और धर्मक्षेत्र में अपने विकारों को। महावीर की वीरता में दौड़धूप नहीं, उछलकूद नहीं, मारकाट नहीं, हाहाकार नहीं अनंत शांति है। उनके व्यक्तित्व में वैभव की नहीं, वीतराग विज्ञान की विराटता है।

महावीर ने अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त, संयम, समता और स्याद्वाद के जो सूत्र दिये वे अध्यात्म की दृष्टि से तो असाधारण थे ही, राजनैतिक दृष्टि से भी उनके महत्व को नकारा नहीं जा सकता। वास्तव में वे लोकतंत्र शासन प्रणाली के आधारभूत सूत्र है। भगवान महावीर द्वारा प्रणीत अहिंसा का सिद्धान्त विश्व में सर्वमान्य और सर्वग्राह्य सिद्धान्त है। जैनदर्शन की अहिंसा किसी प्राणी मात्र की हिंसा रोकने तक सीमित नहीं है अपितु अपने अन्दर हिंसा की भावना उत्पन्न न होना ही अहिंसा है। मोह, राग, द्वेष के भाव जो अन्त में जाकर हिंसा के कारण बनते हैं उन भावों का उत्पन्न नहीं होना ही अहिंसा है। यदि हम किसी का वध करना चाहते हैं और बाह्य कारक इतने प्रबल हैं कि हम उसे नहीं मार सकते तो महावीर का कहना है कि हम अहिंसा के धारी नहीं हुए क्योंकि वध करने का भाव उत्पन्न होना ही वध करने के समान ही हिंसा है।

इसीप्रकार विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए महावीर द्वारा प्रणीत अनेकान्त और स्याद्वाद का सिद्धान्त शाश्वत प्रासंगिक है जो यह उद्घोष करता है कि वस्तु अनेक धर्मात्मक है केवल एक पक्ष ही सत्य नहीं होता। जिसप्रकार यदि 05 नेत्रहीन व्यक्ति किसी हाथी को छूकर उसका वर्णन करते हैं जो 05 प्रकार से हाथी का स्वरूप बताते हैं पर पांचों ही बातें सही हैं क्योंकि उसने उस हाथी को उस दृष्टि से देखा है। तात्पर्य यह है कि हमें सभी धर्मों, सभी सम्प्रदायों, सभी वर्गों का सम्मान करें क्योंकि वे किसी अन्य दृष्टि से सही हैं। सत्ता सत्य की ही होती है असत्य की सत्ता होती ही नहीं इसलिए कोई बात गलत कैसे हुई ? महावीर कहते है कि जब जब अनेकान्तवाद की अवहेलना होगी तब तब आतंकवाद की उत्पत्ति होगी।

भगवान महावीर ने कभी भी अपने आप को किसी धर्म, जाति अथवा वर्ग विशेष तक सीमित नहीं रखा और न कभी इनको कोई महत्व ही प्रदान किया। उनकी दृष्टि में मानव की महत्ता उनके गुणों से वृद्धिंगत होती है किसी धर्म, जाति अथवा वर्ग विशेष में जन्म लेने से नहीं। उन्होंने गुणाः पूजा स्थानं न च लिंगं न च वयः को ही श्रेष्ठ माना। उन्होंने श्लोक रूप में बुद्धं वा वर्द्धमानं वा, शतादलनिलयं केशवं वा शिवं वा तथा ब्रह्मा वा विष्णोर्वा हरिजिनार्वा नमस्तस्मै का शंखनाद किया। जातिवाद तथा संप्रदायवाद का उन्होंने बड़े जोर से खण्डन किया। भगवान महावीर ने आत्मा से परमात्मा का मार्ग हम सभी को दिखाया है। उनकी देशना में सभी का हित निहित है इसीलिए कहा गया है –

आतम बने परमात्मा, हो शांति सारे देश में।
है देशना सर्वोदयी, महावीर के सन्देश में।।

जीवन निर्माण और आत्मविकास में सहायक भगवान् महावीर के सिद्धान्त

-विद्यारत्न डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन, सनावद

जैनधर्म की वर्तमान चौबीसी के अंतिम तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी हैं जिन्हें वर्तमान शासन नायक कहा जाता है। ई.पू. ५९९ में चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन कुंडलपुर (कुंडपुर) में राजा सिद्धार्थ और रानी प्रियकारिणी त्रिशलादेवी के राजमहल में उनका जन्म हुआ था। उन्होंने १२ वर्ष तक कठोर तपस्या के उपरांत केवलज्ञान प्राप्त किया तथा अपने धर्मोपदेशों के माध्यम से लोगों को सन्मार्ग पर लगाया। भगवान् महावीर स्वामी महान् व्यक्तित्व के धनी, प्रभावशाली तथा लोक का कल्याण करने वाले थे। उनका आध्यात्मिक जीवन इतना निर्मल और पवित्र था कि सभी लोग उनके उपदेशों में विश्व की समस्याओं का समाधान देखते थे। जीवन की विभिन्न शंकाओं, समस्याओं समाधान भगवान् महावीर स्वामी के उपदेशों में मिल जाते थे। उन्होंने आत्मा की स्वतन्त्रता, जीव मात्र के लिए सुखी जीवन तथा मानव को जीवन जीने की कला सिखलाई। उनके दार्शनिक सूत्रों में व्यक्तित्व निर्माण की अनेक जीवन शैलियों के दिग्दर्शन होते हैं। आत्मा के विकास के लिए उन्होंने अनेक सूत्र दिये; जिनका अध्ययन कर मानव ने मोक्ष प्राप्त किया। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य के सिद्धान्तों के माध्यम से उन्होने लोगों को जीवनयापन करने पर जोर दिया तो आत्मा के कल्याण के लिए रत्नत्रय के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। जीवन निर्माण और आत्मविकास में आपके सिद्धान्त अत्यंत सहायक हैं। मानव जीवन के लिए कल्याणकारी उनके द्वारा बताये गये प्रमुख सूत्रों को इस तरह समझा जा सकता है-

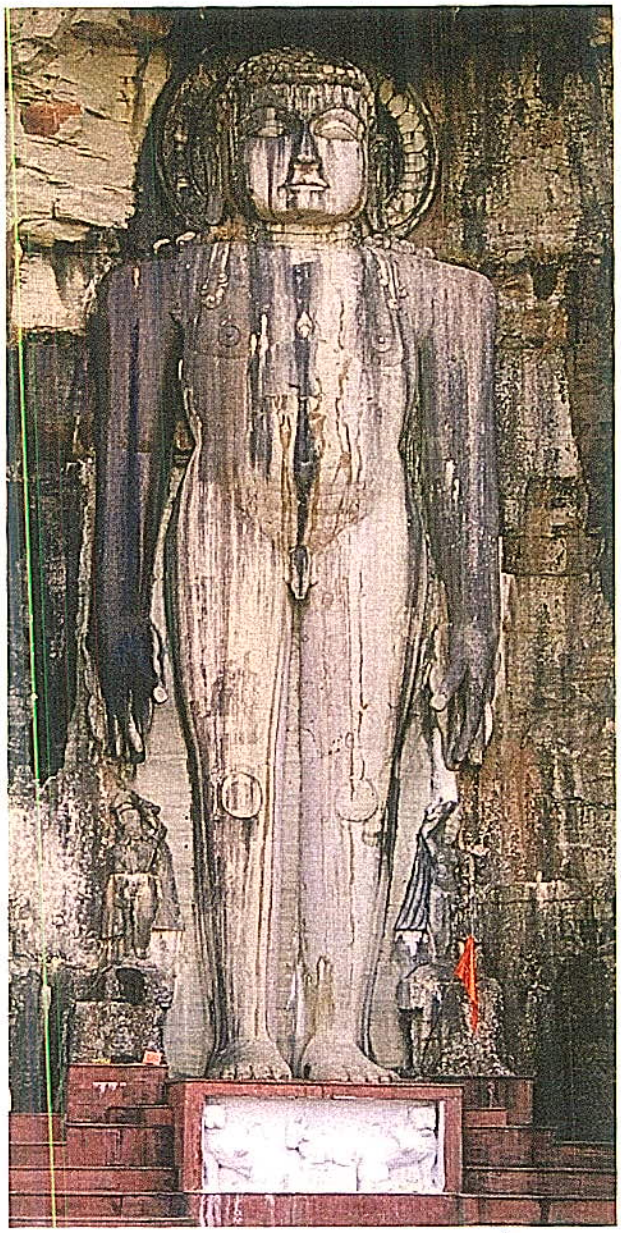

भगवान महावीर खंदारगिरि क्षेत्र

आत्मवाद-

भगवान् महावीर स्वामी का धर्म और दर्शन आत्मवाद पर आधारित है। आत्मा एक स्वतंत्र पदार्थ है जो द्रव्यदृष्टि से शुद्ध और पर्यायदृष्टि से अशुद्ध है। इसलिए आत्मा को बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा के रूप में स्वीकार किया गया है। जो मानव संसार, शरीर, भोगों में अनुरक्त है, आत्मा और शरीर को एक मानता है वह बहिरात्मा है। आत्मा और शरीर को अलग-अलग मानकर जो आत्मा के हित के लिए कार्यरत है वह अन्तरात्मा और जिन्होंने परम पद (मोक्ष) प्राप्त कर लिया है वह परमात्मा है। भगवान् महावीर स्वामी ने सांसारिक प्राणियों का उल्लेख करते हुए बताया कि आत्मा स्वतंत्र है। इसका न जन्म होता है, न मृत्यु होती है। चौरासी लाख योनियों में परिभ्रमण करते हुए इस जीव की शक्ति किसी भी काल में समाप्त नहीं हुई, अतः आत्मा तो सर्वशक्तिमान है परन्तु कर्मवशात् यह जगत् में परिभ्रमण करते हुए जन्म-मरण के दुःख को उठाते हुए संसार परिभ्रमण कर रही है। अतः उन्होंने तप द्वारा कर्मों की निर्जरा कर 'मोक्ष' प्राप्त करने पर बल दिया ताकि आत्मा कर्म बंधनों से मुक्त होकर स्वतंत्र रह सके। प्रत्येक जीव में आत्मा को स्वतंत्र मानते हुए आपने बताया कि व्यक्ति को आत्महित पहले करना चाहिए, इसके बाद परहित के लिए कार्य करें। यदि आत्महित और परहित का प्रसंग आये तो अपनी आत्मा के हित को प्राथमिकता देना चाहिए, क्योंकि आत्महित ही सच्चा सुख है।

रत्नत्रय का पालन-

आत्मा के हित के लिए रत्नत्रय का पालन जरूरी है। आचार्य उमास्वामी तत्त्वार्थसूत्र में कहते हैं कि- ''सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः'' अर्थात् सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र ही मोक्षमार्ग है जिसे रत्नत्रय कहा जाता है। भगवान् महावीर स्वामी ने रत्नत्रय को अपनाने की प्रेरणा देते हुए बताया कि व्यक्तित्व के सही विकास के लिए सच्चा विश्वास, सही ज्ञान और सही आचरण आवश्यक है। सही दृष्टिकोण को अपनाना आपका लक्ष्य होना चाहिए। हम सभी लक्ष्य प्राप्ति में भटक न जायें इसलिए सही विश्वासों के साथ-साथ प्रत्येक वस्तु का यथार्थ ज्ञान जरूरी है। जिस लक्ष्य को हम प्राप्त करना चाहते हैं उसका ज्ञान जब हो जाता है तभी हम लक्ष्य प्राप्त करते हैं। अतः भगवान् महावीर स्वामी ने जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष; इन सात तत्त्वों के यथार्थ स्वरूप को जानकर

तदनुसार कार्य करने की प्रेरणा दी। सम्यक् आचरण को कल्याणकारी बताते हुए भगवान् महावीर स्वामी ने बताया कि आत्म स्वरूप में लीन रहना सही चारित्र है। इसके लिए संसार के प्राणियों को पाँच पापों से बचना चाहिए।

पंच महाव्रत–

भगवान् महावीर स्वामी ने बताया कि आत्महित के लिए अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। इससे हम हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह रूप पाँच पापों से बचते हैं। जैनदर्शन में हिंसा-अहिंसा को परिभाषित करते हुए कहा गया है- ''प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा''अर्थात् प्रमत्त (प्रमाद) के योग से प्राणों का व्यपरोपण हिंसा है। आचार्य श्री अमृतचन्द जी पुरुषार्थसिद्धयुपाय में कहते हैं कि रागादि के कारण हिंसा होती है अतः इनका निषेध अहिंसा है। पाँच पापों में भी हिंसा है इसलिए भगवान् महावीर स्वामी ने बताया कि किसी भी प्राणी को न मारो, न सताओ। कार्यों को करते समय सचेष्ट रहें कि हमारे किसी भी कार्य से छोटे-बड़े जीवों की हिंसा न हो, हम यज्ञ के नाम पर हिंसा न कर प्राणी मात्र को अंतिम श्वास तक स्वाधीनतापूर्वक जीवित रहने के लिए कार्य करें। हमेशा सत्य बोलें, हित, मित प्रिय बोलें, चोरी न करें। बिना दिये कोई वस्तु ग्रहण न करें। कुशील सेवन से बचने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करें तथा किंचित् मात्र भी परिग्रह न रखकर पंच महाव्रतों का पालन करें। गृहस्थ व्यक्ति उपरोक्त पाँच महाव्रतों का पूर्णतया पालन नहीं कर सकता इसलिए उन्हें अणुव्रतों के रूप में इन व्रतों के पालन की शिक्षा दी गई है।

आज सम्पूर्ण विश्व के प्राणियों के कृतित्व पर दृष्टि जाती है तो कुछ व्यक्ति तो अहिंसादि का पालन करते हैं लेकिन आज अनेक प्राणी हिंसा के भय से ग्रस्त हैं। बूचड़खानों में लाखों-करोड़ों पशु प्रतिदिन काटे जा रहे हैं। अपनी जिह्वा लोलुपता और स्वार्थ के कारण व्यक्ति माँस भक्षण कर पाप करता है। अन्याय, अत्याचार, अनीति से उपार्जित धन की आसक्ति उसे अपरिग्रह का पालन नहीं करने देती, जिससे सामाजिक जीवन में ऊँच-नीचता के साथ आर्थिक समानता न होने से वर्ग संघर्ष की स्थिति बनती है। यदि भगवान् महावीर के अपरिग्रह के सिद्धान्त पर चलकर व्यक्ति आवश्यकता से अधिक धन का त्यागकर उसे लोकोपयोगी कार्यों में लगाये तो आर्थिक असमानता दूर हो सकती है।

लोककल्याण की भावना–

भगवान् महावीर स्वामी के जीवन दर्शन में लोक कल्याण की गहरी छाप है। सर्व जीव समभाव और सर्व जाति समभाव की भावना आपके उपदेशों में दिखाई देती है। सामाजिक पाठ में कहा है कि-

सत्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वं।
माध्यस्थ भावं विपरीत वृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव।।

अर्थात् सभी से मित्रता, गुणियों को देखकर प्रमुदित होना, जो विपरीत वृत्ति वाले क्लिष्ट जीव हैं उन पर कृपा करना तथा विपरीत वृत्ति वालों के प्रति माध्यस्थ भाव रखना; ऐसी मेरी आत्मा होना चाहिए। भगवान् महावीर स्वामी का मानना था कि आत्मा न छोटा है, न बड़ा, जिस जीव की जैसी अवगाहना शक्ति होती है तदनुसार आत्मा का संकोच और विस्तार होता है। अतः लौकिक जीवन में मानव-मानव के बीच भेदभाव की दीवारें उचित नहीं हैं। उनका मानना था कि कोई किसी का बुरा सोचकर आत्महित नहीं कर सकता इसलिए व्यक्ति को लक्ष्य प्राप्ति के लिए अच्छे सोच के साथ आगे बढ़ना चाहिए। आत्मविकास की पूरी आजादी होना चाहिए। उन्होंने सभी जीवों के कल्याण पर जोर दिया। आज विश्व में जातिभेद, रंगभेद, वर्णभेद, प्रांतभेद, भाषाभेद की समस्याएं हैं यदि भगवान् महावीर के समानता के सिद्धान्त का व्यक्ति पालन करे तो इन वैश्विक समस्याओं से मुक्ति मिल सकती है।

स्वावलंबन एवं सर्वोदयवाद–

स्वावलम्बन का अर्थ है अपने आप पर निर्भर रहना। अपना कार्य स्वयं करो, इस नीति पर चलने वाला व्यक्ति कभी दूसरों को पीड़ा न पहुँचाता। भगवान् महावीर स्वामी ने लोक जीवन में कर्म को महत्त्व दिया। उन्होंने समझाया कि स्वयं के द्वारा किये हुए कर्म शुभाशुभ फल देते हैं इसलिए अच्छे कार्य कर अच्छे फल को प्राप्त करो ताकि मनुष्यगति में दुर्गति न हो। उन्होंने समता और संयम की साधना पर बल दिया और बताया कि कर्मबंध से मुक्त होने पर ही जीव निर्बन्ध दशा को प्राप्त करता है जिसे स्वावलम्बन कहते हैं। व्यक्ति अपनी आत्मा का स्वयं स्वामी बने, इसके लिए आत्मा का उपयोग आत्महित में करने के लिए स्वावलम्बी बनें। भगवान् महावीर का यह कथन लोक जीवन में अत्यंत उपयोगी है।

भगवान् महावीर प्रत्येक जीव की स्वतंत्रता पर जोर देते थे। सभी व्यक्ति दैववादी न बनकर पुरुषार्थवादी बनें; इसके लिए उन्होंने सर्वोदय की भावना पर बल दिया। जिसमें सभी का उदय, अभ्युदय और कल्याण निहित हो वह सर्वोदय है। आज मानव की स्थिति यह है कि वह स्वयं का अभ्युदय और उत्थान तो चाहता है परन्तु दूसरे लोगों के उत्थान के प्रति उसकी मानसिकता संकुचित बन जाती है। भगवान् महावीर स्वामी ने सभी जीवों की आत्मा को समान माना, उनका कहना था कि जगत् में चींटी से हाथी तक जितने भी जीव दिखाई दे रहे हैं उनमें आत्मा समान है। आत्म प्रदेशों का संकोच और विस्तार शरीर के अनुसार होता है अतः मानव का सर्वप्रथम कर्त्तव्य है कि हम किसी भी प्राणी को न मारें और न सतायें तथा सभी को जीवनयापन और आर्थिक संसाधनों के उपभोग के लिए समान अवसर दें। ताकि हर वर्ग, जाति और सम्प्रदाय का व्यक्ति निर्भय होकर जीवन व्यतीत कर सके। इस तरह की अनवरत भावना रखना सर्वोदय की भावनानुरूप है।

इस तरह वर्तमान शासननायक भगवान् महावीर स्वामी के सिद्धान्त मानव ही नहीं जीव मात्र के प्रति भी कल्याणकारी हैं। भगवान् महावीर स्वामी का जीवनदर्शन सत्पथ का मार्ग दिखाता है। उनके सिद्धान्तों पर चलकर ही सम्पूर्ण मानव समाज में शांति और सद्भावना कायम की जा सकती है।

अक्षय तृतीया से पवित्र है हस्तिनापुर की धरती

इक्षु रस का हुआ पारणा , आखा तीज महान।
जय जय ऋषभदेव भगवान,, जय जय ऋषभदेव भगवान।

अक्षय तृतीया का पावन पर्व हस्तिनापुर की धरती से जुड़ा हुआ है। अक्षय तृतीया का प्राचीन इतिहास हस्तिनापुर तीर्थ से ही प्रारंभ हुआ है। वैशाख सुदी तीज को अक्षय तृतीया के नाम से जाना जाता है। अक्षय का अर्थ है जिस वस्तु का कभी क्षय न हो अर्थात् वस्तु समाप्त न हो और वह महीना वैशाख का था और तिथि तृतीया थी। इसलिए इसका नाम अक्षय तृतीया पड़ा। लोगों का मानना है कि इस दिवस किया जाने वाला कार्य वृद्धि को प्राप्त होता है। भगवान ऋषभदेव को हुए कोड़ा कोड़ी वर्ष (करोड़ों करोड़ो साल) व्यतीत हो गये। लेकिन आज भी अक्षय तृतीया का पर्व मनाने के लिए देश एवं विदेश से जैन श्रद्धालु हस्तिनापुर की धरती पर आते हैं। जैन श्रद्धालु आहार दान की महिमा का वर्णन करते हुए इस पवित्र धरती पर आते हैं। इस पवित्र दिवस का ये महत्व है कि बिना मुर्हूत के ही हजारों विवाह सम्पन्न होते हैं। अगणित गृह प्रवेश आदि मांगलिक कार्य सम्पन्न किये जाते हैं। और इसे सर्वश्रेष्ठ मुर्हूत माना जाता है।

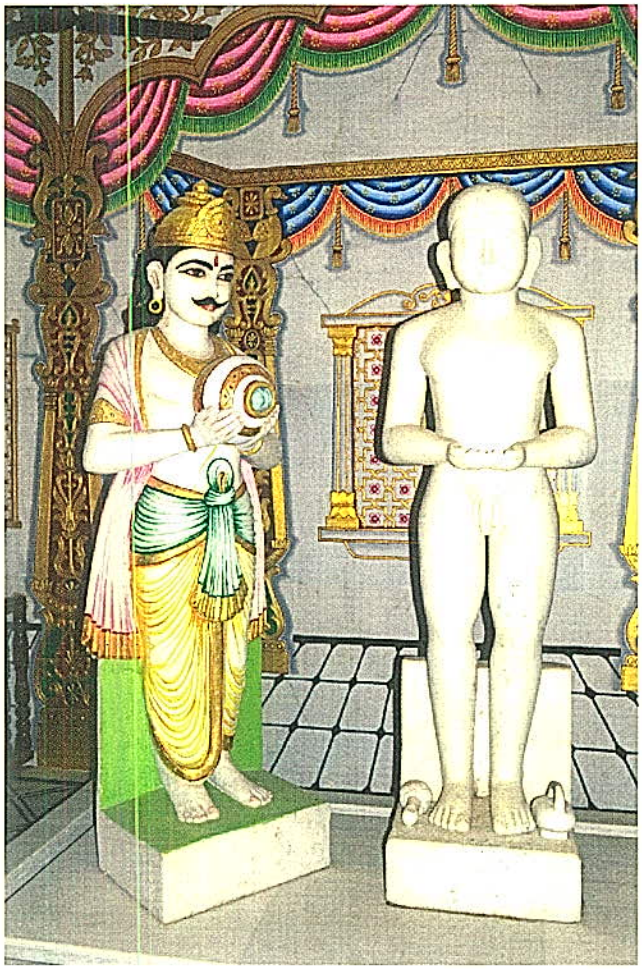

भगवान ऋषभदेव ने अयोध्या में जन्म लिया एवं प्रयाग की (इलाहाबाद) धरती पर जैनेश्वरी दीक्षा को धारण किया। जो कि इस युग की प्रथम दीक्षा थी। क्योंकि भगवान ऋषभदेव वर्तमान चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर हैं। दीक्षा को धारण करते ही ध्यान लगा करके भगवान बैठ गये। भगवान के साथ में 4 हजार राजाओं ने भी दीक्षा ग्रहण की। 6 माह पश्चात भगवान ऋषभदेव आहारचर्या बतलाने के लिए कि जैन साधुओं को किस प्रकार आहार करना चाहिए, लोगों को इस विधि का ज्ञान हो सके इसलिए आहार के लिए निकले लोगों को ज्ञान ही नहीं था कि जैन साधुओं को आहार किस प्रकार से करना चाहिए। महायोगी ऋषभदेव जिस ओर कदम रखते थे वहीं के लोग प्रसन्न होकर के बड़े आदर के साथ उन्हें प्रणाम करते थे और कहते थे कि भगवान प्रसन्न हो जाईये कहिये क्या काम है। कितने ही लोग भगवान के पीछे–पीछे चलने लगते थे। अन्य कितने ही लोग बहुमूल्य रत्न लाकर भगवान के सामने रखकर कहते थे कि हे देव इन रत्नों ग्रहण कर लीजिए और कितने ही लोग अन्य प्रकार के पदार्थ वस्त्र आभूषण, माला, कन्या, भवन, सवारी आदि दिखा करके कहते थे कि प्रभु इसे ग्रहण कर लीजिए और हमें कृतार्थ कीजिए। तीर्थंकर भगवन अपनी चर्या में विघ्न मान करके आगे बढ़ जाते थे। लोग निराश होकर के प्रभु की ओर देखते रह जाते थे और सोचते थे कि किस प्रकार से भगवान को उनकी मनचाही वस्तु देकर के हम कृतार्थ हो सकें। इस प्रकार से भगवान को 6 माह व्यतीत हो जाते हैं। कुल मिलाकर के 1 वर्ष पूर्ण हो जाता है और महामुनि कुरूजांगल देश के आभूषण ऐसे हस्तिनापुर नगर के समीप पहुँचते हैं।

हस्तिनापुर नगरी के शासक राजा सोमप्रभ और उनके भाई श्रेयांस कुमार थे। तभी पिछली रात्रि में राजा श्रेयांस को उत्तम–उत्तम 7 स्वप्न दिखाई देते हैं। प्रातः वह अपने स्वप्नों को अपने भाई सोमप्रभ से उन स्वप्नों को बताकर उनका फल पूछते हैं। प्रथम स्वप्न में मैने सुमेरूपर्वत देखा है, दूसरे में एक कल्पवृक्ष देखा है जिसकी शाखाओं पर आभूषण लटक रहे हैं, तीसरे में सिंह देखा है, चौथे में बैल, पाँचवें में सूर्य और चंद्रमा, छठे में लहरों से सुशोभित समुद्र तथा सातवें में अष्ट मंगल द्रव्यों को हाथों में धारण किये व्यंतर देवों को देखा है। इन स्वप्नों का उत्तम फल जान करके अति प्रसन्न चित्त हो करके के चिन्तन ही कर रहे होते हैं कि तभी

सुनने में आता है कि तीर्थंकर ऋषभदेव हस्तिनापुर में प्रवेश कर चुके हैं चारों ओर भारी जन समुदाय एकत्र होकर के भगवान के दर्शन करता है। उनके चरणों की पूजन करता है।

कोई कहता है कि अहो बड़े आश्चर्य की बात है कि ये तीन लोक के स्वामी भगवान ऋषभदेव समस्त राज्य वैभव का त्याग कर पूर्ण दिगम्बर होकर आज अकेले ही इस पृथ्वीतल पर विचरण कर रहे हैं। इतने में ही द्वारपाल द्वारा सूचना प्राप्त होती है कि प्रभु समीप में ही पधार चुके हैं और इधर ही आ रहे हैं। राजा सोमप्रभ और श्रेयांस महल के बाहर आ जाते हैं प्रभु के चरणों में नम्रता पूर्वक नमस्कार करते हैं। इतने में ही राजकुमार श्रेयांस को पूर्वभव का जाति स्मरण हो जाता है कि जब में राजा वज्रजंघ की रानी श्रीमती की पर्याय में मुनियों को दिये गये आहार दान की सारी विधि स्मरण में आ जाती है। महाप्रभु ऋषभदेव को देखते ही राजा श्रेयांस एवं सोमप्रभ ने हे भगवन् अत्रो–अत्रो, तिष्ठो–तिष्ठो, आहार जल शुद्ध है, मन शुद्धि, वचन शुद्धि, काय शुद्धि आहार–जल शुद्ध है मुद्रा छोडिये, आहार ग्रहण करिये, नवधा भक्ति पूर्वक पड़गाहन कर लेते हैं एवं अष्ट द्रव्य से पूजन कर नमस्कार करते हैं ऐसे निवेदन कर प्रभु से आहार ग्रहण करने हेतु प्रार्थना करते हैं भगवान ऋषभदेव करपात्र में आहार प्रारंभ कर देते हैं बड़ी भक्ति के साथ राजा श्रेयांस इक्षुरस (गन्ने) का आहार देते हैं। उसी समय आकाश से देवों द्वारा रत्न वृष्टि होने लग जाती है नाना प्रकार के सुगंधित पुष्पों की वृष्टि होने लग जाती है। देवता भी धन्य है यह दान धन्य यह पात्र धन्य ये दाता ऐसे शब्दों से आकाश गुंजायमान कर देते हैं एवं देवों द्वारा पाँच अतिशय पंचाश्चर्य कहलाते हैं की वृष्टि कर रहे है। प्रभु ऋभषदेव आहार करके वन की ओर प्रस्थान कर जाते हैं। उस दिन सारे नगर में गन्ने के रस का प्रसाद वितरण किया जाता है। लेकिन फिर भी गन्ने का रस समाप्त नहीं होता है। वह अक्षय हो जाता है। राजा श्रेयांस ने प्रथम आहार दान दिया क्योंकि इस युग के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव थे। तो यह प्रथम आहार था भरत चक्रवर्ती ने अयोध्या से पूरी सेना के साथ हस्तिनापुर आकर के राजा श्रेयांस व सोमप्रभ का खूब सम्मान किया एवं दान तीर्थ प्रवर्तक की उपाधि से उन्हें अलंकृत किया। इससे पूर्व दान देने की प्रथा इस धरती पर नहीं थी इसका शुभांरभ राजा श्रेयांस के द्वारा ही हुआ। तो यह दानवीर भूमि भी कहलाई।

तब से लेकर के आज तक भी हस्तिनापुर की धरती के समीपवर्ती क्षेत्रों में इक्षु (गन्ना) की खेती खूब पाई जाती है उस दिन से इस धरती पर गन्ने की खेती भी अक्षय हो गई समीपवर्ती सभी क्षेत्रों में गन्ने की खेती होती है एवं ऐसा मानते है कि जैन साधु जहाँ पर भी विराजमान है उनको आज के दिन गन्ने के रस का आहार करवाया जाता है। जो लोग वर्षी उपवास करते हैं वे पारणा करने के लिए हस्तिनापुर की धरती पर आकर के अपना उपवास समाप्त करके पारणा इक्षु रस से करते है और अपने आप को धन्य मानते हैं यह इस भूमि का असीम पुण्य है। अक्षय तृतीय आखा तीज के नाम से भी जाना जाता है।

हस्तिनापुर जम्बूद्वीप में बना आहार महल

हस्तिनापुर जम्बूद्वीप स्थल पर जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से आहार महल का निर्माण किया गया है। जिसमें भगवान ऋषभदेव व राजा श्रेयांस की प्रतिमा विराजमान की गई है। प्रत्येक वर्ष इस प्रतिमा के समक्ष इक्षुरस का आहार करवाया जाता है एवं आने वाले भक्त भगवान को आहार देने का सौभाग्य प्राप्त करते है एवं गन्ने के रस का प्रसाद ग्रहण करते है। अक्षय तृतीया का पावन पर्व हस्तिनापुर से ही प्रारंभ हुआ है इसकी पहचान ही हस्तिनापुर से है। तब से लेकर के आज तक करोड़ो वर्ष बीत गये लेकिन उसी मान्यता को लेकर भक्तगण आज भी इस धरती पर आ करके अक्षय तृतीया के दिन तीर्थ पर विराजमान साधुओं को आहार देकर के अपने जीवन को धन्य मानते है।

–विजय कुमार जैन (महामंत्री)
तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत महासंघ

भगवान महावीर की दिव्य-देशना

- सुबोध मलैया, मध्यप्रदेश

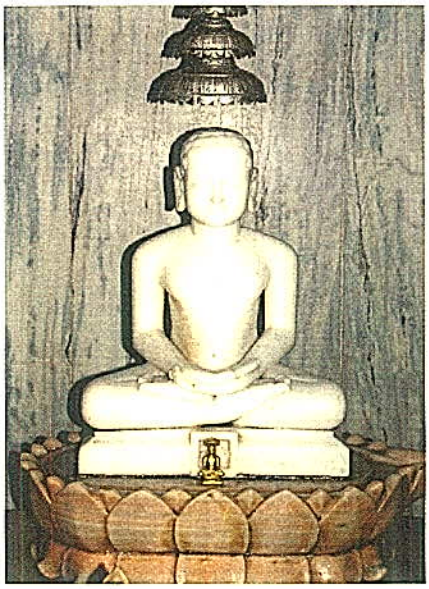

महावीर और उनकी वाणी आज भी प्रासंगिक है इस पर आधा से कुछ आधा भी पालन हो तो संपूर्ण विश्व का कल्याण हो जाए महावीर का यह वर्शन पूरे जीवन को बदल सकता है साथ ही भौतिकता की अग्नि में दग्ध विश्व को शाश्वत शांति का दिग्दर्शत कराने में सक्षम है. श्रमण संस्कृति के अंतिम तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी हुए उन्होंने रुढ़ियों और पाखण्डों का विरोध किया. सर्वोच्च मूल्यों की विरासत जो श्रमण संस्कृति ने हमें दी है ऐसी महावीर वाणी का हम सदैव स्मरण करेंगे। भगवान महावीर के उपदेश समग्र विश्व शांति की विचार धारा में समाहित हैं। महावीर और उनके पूर्ववर्ती तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित विचार धारा श्रमण संस्कृति की मुख्य धरा है। विश्व शांति में भारतीय चिन्तन और संस्कृति के इतिहास में बिहार ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है महावीर और बुद्ध जैसे आत्म-दर्शन के उन्नायकों का इस क्षेत्र से घनिष्ठ संबंध रहा है। राज घराना से संबंधित महावीर से यह आशा की जाती थी कि वे लौकिक सुख-समृद्धि का उपभोग करते हुए अपने पिता के राज्य का सम्यक संचालन करेंगे किन्तु ऐसा नहीं हुआ, 30 वर्ष की युवा अवस्था में सारे राजसी भोग-विलासों को तिलांजलि दे वैराग्य धारणकर सच्चे आत्मिक शुद्धि एवं शांति की दशा में मोह एवं परिग्रह, महावीर ने सबको त्याग दिया। लौकिक सुख स्वयं में पूर्ण नहीं है। यह सोचकर वह निर्ग्रन्थ हो गए। 12 वर्ष की कठिन तपश्चर्या के पश्चात् महावीर ने इन भौतिक दुर्बलताओं पर विजय पा उन्होंने केवल ज्ञान प्राप्त किया, महावीर अपने समकालीन विचार धाराओं के प्रति अधिक सहिष्णु और उदार थे जिससे सामायिक परिस्थितियों के अनुरुप कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहा। महावीर स्वामी ने भारतीय दर्शन की विचार धारा पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ा। जैन ग्रन्थ नैतिक एवं धार्मिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते जो न केवल पच्चीस सौ वर्षों से अधिक समय की कसौटी पर खरे उतरे वरन् आज भी मानव समाज की अनेक समस्याओं के समाधान की कुंजी हैं। महावीर स्वामी ने जीवन के सिद्धान्तों के प्रति आदर-भाव एवं मानवीय चरित्र को परखने की उनकी सबसे बड़ी कसौटी थी इसमें हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं था फिर चाहे वह वैचारिकी हिंसा हो अथवा क्रियात्मक हिंसा, यही अहिंसा का सिद्धान्त है उन्होंने अपरिग्रह का केवल उपदेश ही नहीं दिया बल्कि स्वयं अपने जीवन में उतारा। श्रमण संस्कृति की ही महिमा का सुफल है कि आक्रान्ताओं के आक्रमण और सैकड़ों वर्षों की गुलामी के बाद भी हम अपनी परम्परा और संस्कृति के अवशेष के साथ बचे हुए है। महावीर स्वामी समूचे विश्व के लिए सामाजिक प्रतिष्ठा का सर्वोच्च मापदंड है इसलिए हम भगवान महावीर को रोम-रोम में कण-कण और क्षण-क्षण में बसाने की कामना करते हैं यदि महावीर के उस चरित्र का अंश मात्र भी ग्रहण कर ले तो मानव परम पद पर पहुँच जाए। महावीर के चरित्र पर जितना लिखा-पढ़ा जितना चिन्तन-मनन किया गया संभवत: विश्व में कोई अन्य विभूति ऐसी नहीं होगी। भले ही कोई धर्मावलंबी, मतावलंबी, पंथानुयायी हो सभी में महावीर के संस्कार व्याप्त हैं। जैन धर्म में तीर्थंकर हमारी श्रमण संस्कृति की धरोहर हैं।

महात्मा गाँधी ने इसीलिए महावीर की अहिंसा का अनुशरण अंतिम समय तक किया। महावीर के मर्म को गाँधी से ज्यादा कौन जान सकता है इसी अहिंसा ने गाँधी जी को विश्व में सर्व पूज्य बनाए रखा है, महावीर स्वामी के प्रथम गणधर गौतम ने उनके उपदेश की विषद व्याख्या की भगवान महावीर ने उपदेशों में प्राणीमात्र के उद्धार का मार्ग सझाया। हिंसा कभी धर्म नहीं हो सकता यह बात समझाई। धर्म के नाम पर चलने वाले आडम्बर का विरोध कर, सच्चे धर्म का स्वरूप समझाया, धर्म पालन का अधिकार सबको है- यह समझाया, स्त्रियां भी समाज का महत्त्वपूर्ण अंग हैं वे पुरुष से हीन नहीं है यह प्रतिपादित करते हुए स्त्रियों को विशेष अधिकार प्रदान किए। महावीर ने आर्थिक असमानता के बीच की खाई पाटने के लिए अपरिग्रह और समता के धर्म का संदेश देकर सामाजिक, आर्थिक वर्ग विग्रह को समाप्त करने का मंत्र दिया, चारित्रिक शुद्धि के लिए ब्रह्मचर्य व्रत पालन की महत्ता समझाई वही उन्होंने जन सामान्य को उन्हीं की भाषा में उपदेश दिया।

अहिंसा के पुजारी वीतराग प्रभु ने एक नई इबारत लिख नया इतिहास गढ़ दिया। श्रमण संस्कृति जो जैनत्व की अमूल्य धरोहर है इसका संरक्षण, संवर्धन करना हमारा नैतिक दायित्व है जिस दिन से इनकी प्रतिष्ठा धुंधली होना शुरू होगी उसी दिन से हमारे जैनत्व के विनाश की गिनती शुरु हो जाएगी, जिन भगवान की हम आज पूजा अर्चना, आराधना कर रहे हैं वस्तुत: भगवान महावीर की जयंती मनाना तभी सार्थक होगा जब हम भगवान के आदर्शों का अपने जीवन में कुछ अंशों में ही सही, आत्मसात करेंगे, भगवान महावीर ने जो संदेश दिया हम उसका अनुसरण करें, हम उस दिशा में पुरुषार्थ करना शुरु करें, अपने जीवन को आगे बढ़ाएं निश्चयत: हम अपने जीवन को एक सार्थक उपलब्धि देंगे। हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हम अपने विचारों की शुद्धि करें, विकारों का शमन करें, जीवन में मर्यादाओं की सुरक्षा करें यदि हम यह कर सकें तब भगवान महावीर के इस दर्शन को हम जन-जन का दर्शन बनाने में समर्थ हो सकते हैं हमारी यही कोशिश होनी चाहिए। श्रमण संस्कृति की विशिष्ट पहचान है उसे कायम रखें जिससे दिगम्बर सुरक्षित रहे जैनत्व के प्रति हम समर्पित हैं.... और रहेंगे।

"युगपुरुष अलंकरण समारोह"

"ये मेरा सम्मान नहीं बल्कि श्रवणबेलगोला का सम्मान है..."

"-- स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी"

"स्वामी जी के समर्पण और उनके गुणों ने उन्हें बनाया है...'युगपुरुष'"

"--श्री प्रज्ञासागर मुनिराज"

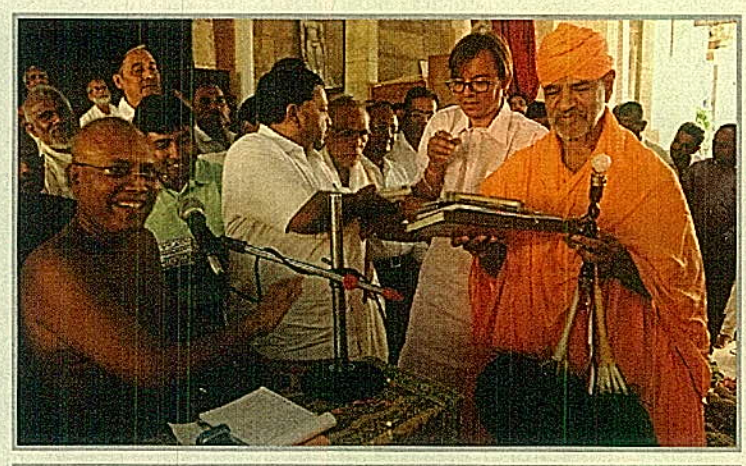

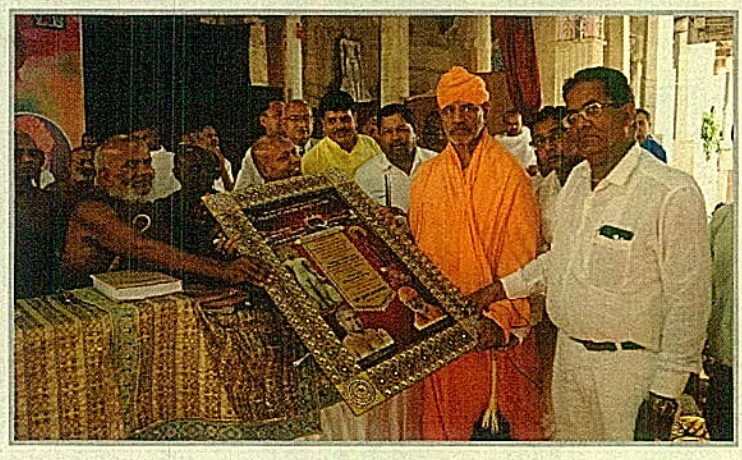

तपोभूमि प्रणेता श्री प्रज्ञासागर जी मुनिराज के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से उज्जैन स्थित सिद्धक्षेत्र श्री महावीर तपोभूमि ट्रस्ट द्वारा श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला कर्णाटक में गोम्मटेश्वर श्री श्री श्री बाहुबली स्वामी के महामस्तकाभिषेक के अवसर पूज्य जगद्गुरु स्वस्ति श्री कर्मयोगी चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। जिसमें पूज्य स्वामी जी को 100 से भी अधिक साधु सन्तों, आर्यिकाओं, त्यागी वृन्दों के सान्निध्य में "युगपुरुष अलंकरण" से सम्मानित किया गया। दोपहर 2 बजे से प्रारंभ हुए इस समारोह का समापन 5:30 बजे हुआ जिसमें उपस्थित अनेकों आचार्यों, साधु संतों ने तपोभूमि और स्वामी जी के प्रति अपना आशीर्वाद विनयांजलि के रूप में दिया। इसके उपरांत प्रारंभ हुआ स्वस्तिश्री चारुकीर्ति जी भट्टारक स्वामी जी का युगपुरुष अलंकरण समारोह, जिसमें सर्वप्रथम वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज के साथ सभी आचार्यों की पादपूजा, पाद प्रक्षालन के साथ की गयी एवं अर्घ्य चढ़ाकर उपस्थित सभी आचार्यों, उपाध्याय, आर्यिकाओं एवं स्वामी जी की अष्टद्रव्य से भक्ति पूर्वक पूजा की गयी।

इसके बाद तपोभूमि परिवार द्वारा स्वस्तिश्री चारुकीर्ति जी के ऊपर पुष्पवृष्टि की गयी एवं चरणों में पूज्य मुनिश्री की प्रेरणा से निर्माणाधीन श्री शांतिसागरम् तीर्थ भोज ग्राम के ट्रस्टियों द्वारा रत्न वृष्टि की गई। इसके पश्चात स्वामी जी को मनोहारी पगड़ी पहनाई गयी जिससे ऐसा प्रतीत हुआ मानो तपोभूमि का सम्मान श्रवणबेलगोला के मस्तक पर चमक रहा हो साथ ही अंगवस्त्र, शॉल, रजत श्रीफल, वस्त्र, पिच्छी, अभिनन्दन पत्र एवं पुष्पहार से स्वामीजी

युगपुरुष अलंकरण समारोह की झलकियां

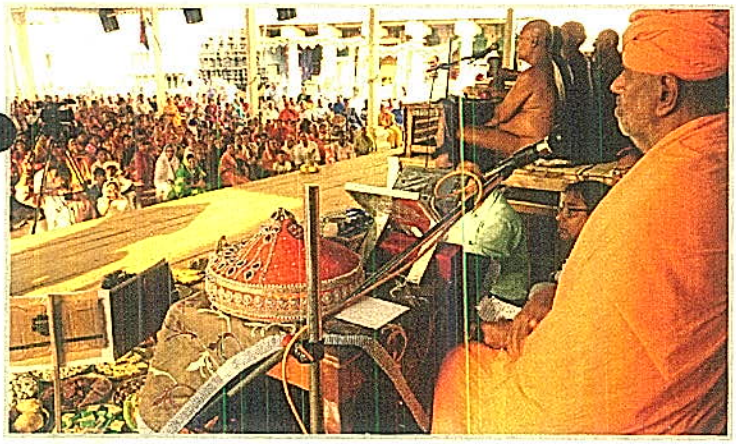

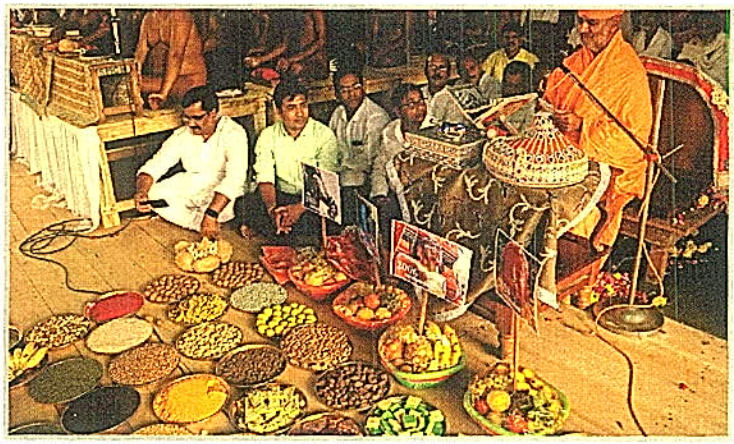

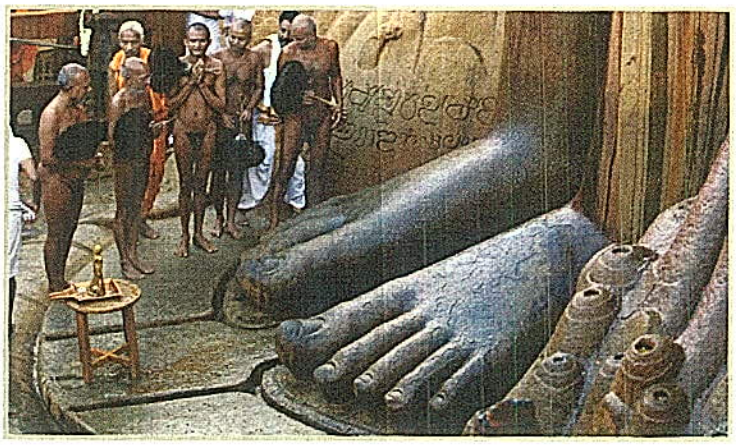

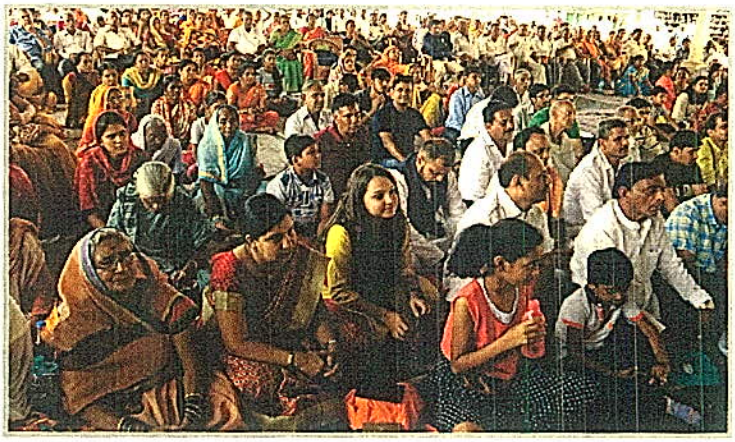

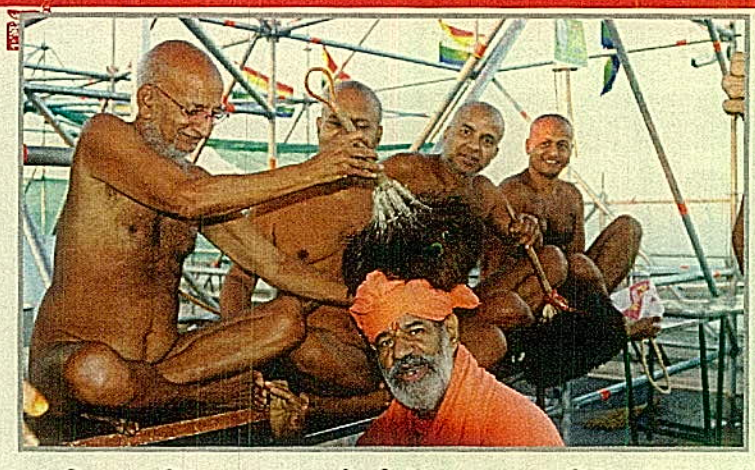

का अभिनन्दन किया गया। स्वामी जी के भट्टारक पट्टाभिषेक के 49 वर्ष पूर्ण होने पर देश के कोने कोने से आये गुरु भक्तों ने 49 थालों से विभिन्न प्रकार की भेंट स्वामी जी के चरणों में भेंट की। इस दृश्य को जिसने भी देखा वो देखता ही रह गया इस दृश्य को देख कर सभी को भगवान बाहुबली स्वामी जी के चरणों में होने वाली पादपूजा का दृश्य स्मरण में आ गया। समारोह का सबसे गौरव पूर्ण पल तब आया जब आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज एवं आचार्य श्री वासुपूज्य सागर जी महाराज, आचार्य श्री सुविधि सागर जी महाराज, आचार्य श्री देवसेनजी महाराज, आचार्यश्री निजानंद सागर जी महाराज, आचार्य श्री पंचकल्याणक सागर जी, आचार्य श्री तीर्थनंदी जी सहित सभी आचार्यों ने मिलकर स्वामीजी को "युगपुरुष स्वर्ण पत्र" भेंट किया साथ ही मंच पर मंचासीन उपाध्याय उर्जयन्त सागर जी महाराज, मुनिश्री अमितसागर जी, मुनिश्री चिन्मय सागर जी, मुनिश्री अमरकीर्ति-अमोघकीर्ति जी महाराज एवं आर्यिका श्री प्रज्ञामति माताजी, आर्यिका श्री जिनदेवी माताजी सहित क्षुल्लक श्री ध्यानसागर जी महाराज ने विराजित होकर आचार्य पुष्पदंतसागरजी मुनिराज के शिष्य, मुनिश्री प्रज्ञासागर जी महाराज की उस प्रेरणा को गौरवशाली बना दिया।

सम्मान की प्रक्रिया के पश्चात् मुनिश्री ने अपने कर कमलों से श्री चारुकीर्ति जी स्वामी जी को "युगपुरुष" की उपाधि मैडल के रूप में प्रदान कर स्वामी जी को युगों युगों के लिए अमर कर दिया। जब जब श्रवणबेलगोला का महामस्तकाभिषेक का इतिहास लिखा जायेगा, जब भी महामस्तकाभिषेक की स्मृतियों को याद किया जायेगा, गोम्मटेश्वर श्री बाहुबली जी को याद किया जायेगा स्वामीजी का नाम अपने आप जुबाँ आ जायेगा। भेंट की श्रृंखला में सबसे महत्वपूर्ण भेंट स्वामीजी को प्रदान की गयी, वो भेंट थी चतुर्मुख दिशाओं में विराजित तीर्थंकर भगवान की रत्न प्रतिमाएँ समवशरण सहित । स्वामी जी की सर्व प्रिय प्रतिमाओं में चतुर्मुख प्रतिमाएँ सबसे प्रिय है। इतना सब कुछ सम्मान के रूप में प्राप्त करने पर स्वामीजी अत्यंत अभिभूत हुए और अपने उद्गार में प्रथम शब्द कहा "ये सम्मान मेरा नही बल्कि श्रवणबेलगोला का सम्मान है" आज उज्जैन का सम्मान श्रवणबेलगोला के नाम हो गया, क्योकि श्रवणबेलगोला का उज्जैन से रिश्ता 2300 वर्ष प्राचीन है। आज से 2300 वर्ष पूर्व आचार्य भद्रबाहु स्वामी जी 12000 शिष्यों के साथ उज्जैन से विहार कर श्रवणबेलगोला आये थे और यहाँ के विंध्यगिरि और चंद्रगिरि पर्वत पर तपस्या की। आज उन्ही की तपस्या से श्रवणबेलगोला पुनीत और पावन हो गया है। आज मुनिश्री प्रज्ञासागर जी महाराज ने एक बार फिर श्रवणबेलगोला का रिश्ता उज्जैन से जोड़ दिया। आज मुनिश्री ने श्री महावीर तपोभूमि तीर्थ के द्वारा मेरा सम्मान नहीं बल्कि श्रवणबेलगोला का सम्मान किया है, आज श्रवणबेलगोला का मान बढ़ा दिया है। आज उनके सम्मान करने की प्रक्रिया से मैने एक चीज़ सीख ली है कि किसी का सम्मान कैसे किया जाता है, और मुझे आज पता चला श्री प्रज्ञासागर जी श्रेष्ठ वक्ता, कुशल संचालन और एक कुशल नेतृत्व के धनी है।

इस अवसर पर श्री प्रज्ञासागर जी मुनिराज ने अपना आशीर्वाद देते हुए कहा, स्वामीजी श्री चारुकीर्ति जी जैसा व्यक्तित्व किसी सम्मान के लिए नहीं बल्कि सम्मान के साथ युगों तक याद रखने वाला व्यक्तित्व है, आज उन्हें यदि 100 से भी अधिक निर्ग्रंथ उन्हें सम्मान और अपना आशीर्वाद दे रहे हैं तो उनके गुणों के कारण दे रहे हैं। ये सम्मान स्वामीजी का नहीं बल्कि उनके द्वारा किये गए ऐतिहासिक कार्यों का सम्मान है। जिनके सान्निध्य में जिनके निर्देशन में एक नही बल्कि 4 महामस्तकाभिषेक सफलता के साथ संपन्न हुए हैं। ये अपने आप में एक अद्वितीय कार्य है । जो इस युग में स्वामी जी ने किया है इसलिए मैने "युगपुरुष अलंकरण" के लिए उन्हें चुना एवं मेरे लिए गौरव की बात है कि मैं इस बार महामस्तकाभिषेक में शामिल हुआ। मै यहाँ से जाते समय भगवान बाहुबली स्वामी जी से यही प्रार्थना करूँगा जब यहाँ 12 साल बाद में महामस्तकाभिषेक हो मैं श्रवणबेलगोला में ही रहूँ।

आचार्य श्री विद्यासागर जी के प्रति दिग्विजय सिंह की अपार श्रृद्धा एवं समर्पण

विजय कुमार जैन राघौगढ़ म. प्र.

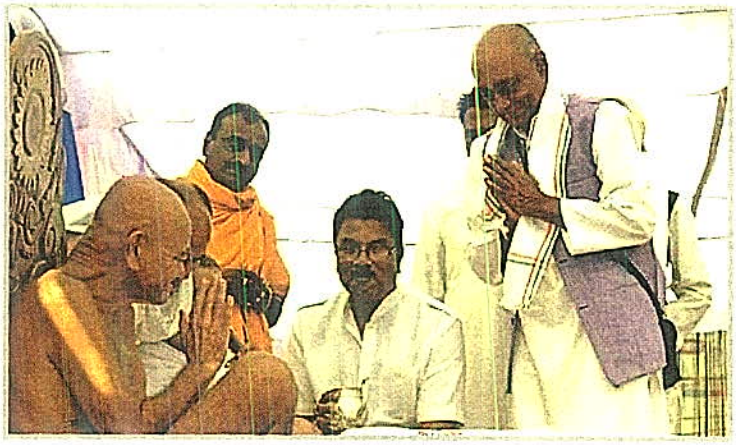

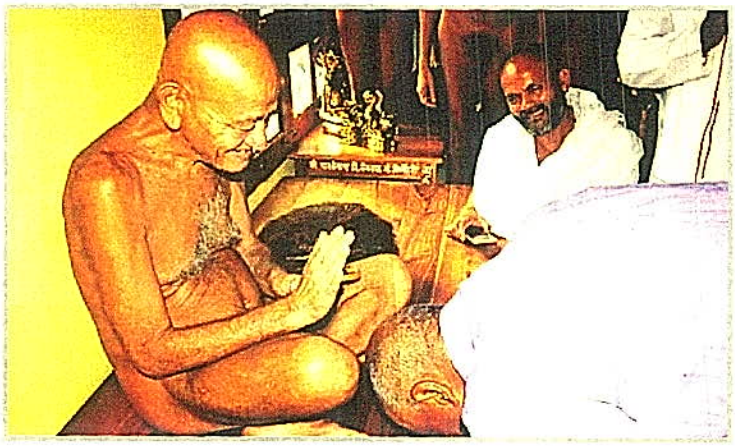

वर्तमान युग के महान तपस्वी जैन संत आचार्य विद्या सागर जी महाराज की मुनि दीक्षा के पचास वर्ष गत वर्ष 30 जून 17 को पूर्ण हो गये। सारे देश में आचार्य विद्यासागर जी का 50 वॉ दीक्षा दिवस संयम स्वर्ण महोत्सव के रूप में गत वर्ष 30 जून 17 से विभिन्न धार्मिक सांस्कृतिक समाज सेवा के आयोजनों के साथ मनाया जा रहा है। संयम स्वर्ण महोत्सव आगामी 30 जून 18 तक चलेगा।

श्रमणाकाश के ध्रुवतारे वर्तमान युग के ज्येष्ठ -श्रेष्ठ जैनाचार्य विद्यासागर जी की मुनि दीक्षा दिनांक 30 जून 1968 को अजमेर राजस्थान में हुई। आपके दीक्षा गुरू महाकवि दिगम्बराचार्य श्री ज्ञान सागर जी महाराज थे। आचार्य विद्यासागर जी को हिन्दी कनन्ड़ मराठी प्राकृत संस्कृत अपभ्रंश अंग्रेज़ी बंगला आदि भाषाओं का ज्ञान है।

कॉंग्रेस के वरिष्ठ नेता म. प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह आचार्य विद्यासागर जी की कठोर साधना त्याग एवं धर्म परायणता से प्रभावित है उनके अनन्य भक्त माने जाते है। श्री दिग्विजय सिंह पिछले 6 माह से नर्मदा परिक्रमा पदयात्रा करते हुए गत दिनांक 19 मार्च 18 को ढिंडोरी म. प्र. पहुंचे। ढिंडोरी में आचार्य विद्यासागर ससंघ विराजमान थे। श्री सिंह ने ढिंडोरी में पदयात्रा को विराम दिया और साथियों सहित आचार्य विद्यासागर जी के दर्शन करने पहुचे। वहाँ उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

गत दिनांक 30 सितम्बर 17 से नरसिंहपुर जिले में स्थित नर्मदा नदी के पवित्र वरमान घाट से चल रही श्री दिग्विजय सिंह जी की नर्मदा परिक्रमा पदयात्रा को दिनांक 20 मार्च 18 को विराम देकर आप ढिंडोरी में आचार्य विद्यासागर जी महाराज के दर्शन करने पहुंचे। प्रातःकालीन प्रवचन सभा में सम्मिलित हुए। चरण वंदना की, आशीर्वाद लिया।

आचार्य विद्यासागर जी के संयम स्वर्ण महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिये भेजे गये विनयांजलि संस्मरण पत्र में श्री दिग्विजय सिंह ने आदर सहित उल्लेख किया है कि आनंद विभोर हूँ यह जानकर कि इस सदी के महानतम संत 'मूकमाटी' महाकाव्य के सृजनकार परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी अपनी उपलब्धि पूर्ण श्रावण्य यात्रा के 50 वर्ष पूर्ण कर रहे हैं।

इस महान अवसर पर उन्हें समर्पित करने के लिये मेरे पास कुछ भी नहीं है सिवाय उनके प्रति अपार श्रृद्धा में नहाये हुए कुछ शब्द और उनके सामिप्य की स्मृतियाँ, अपनी साधना की सुगंध से हम जैसे राजनीति के क्षेत्र में कार्य करने वालों को भी अपनी ओर आकृष्ट कर लेने वाले इस महान पदयात्री के पहली बार मैंने कब दर्शन किये यह तो कहना मुश्किल है। प्रथम दर्शन की अनुभूतियाँ आज भी मेरे हृदय में विद्यमान हैं।

तेजोमय चेहरा अपार ऊर्जा से भरे नेत्र, करुणा से भरी वाणी; प्राणीमात्र के जीवन की चिन्ता सबको आशीष प्रदान करते हुए दिव्य हाथ कुल मिलाकर इस लौकिक दुनिया में अलौकिक संत के साथ हिन्दी के विकास, हथकरघा के विकास, गो वंश की रक्षा, शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश जैसे मुद्दों पर गंभीर चर्चा हुई। उनके दिशा निर्देश भी मुझे प्राप्त हुए। सन 1993 से 2003 के बीच मध्यप्रदेश सरकार का मुखिया होने के नाते मैंने आचार्य जी के निर्देश पर कुछ कार्य किये।

वर्षों की अनुनय विनय के फलस्वरूप 16 अप्रेल 2002 को विशाल संघ के साथ आचार्य श्री विद्यासागर जी के चरण भोपाल में

पड़े। 25 अप्रेल 2002 को महावीर जयन्ती का विराट उत्सव राजधानी का विशाल लाल परेड मैदान अपार भीड़, प्रदेश के अनेक मंत्री,शीर्ष अधिकारी, जानी मानी हस्तियां और मै स्वयं भी सान्निध्य आचार्य विद्यासागर जी का।

विनयांजली संस्मरण पत्र में श्री दिग्विजय सिंह जी ने आगे लिखा है आचार्य श्री विद्यासागर जी के भोपाल प्रवास की जब याद करता हूँ, एक अधूरी इच्छा पंख फैलाती है काश आचार्य श्री विद्यासागर जी मेरे गृह नगर राघौगढ़ भी एक बार पधारें। राजनैतिक व्यस्तताओं के कारण चाहते हुए भी प्रत्यक्ष ज्यादा न सही परोक्ष में मन सदा उन्हें स्मरण करता रहता है। उनका आशीर्वाद आज भी मेरे जीवन की पवित्र पूंजी निरंतर वृद्धि को प्राप्त हो ऐसी मेरी भावना है।

मैंने श्री दिग्विजय सिंह जी की जैन संतों के संबंध में पवित्र भावनाओं को सुना है आपका कहना है सभी धर्मों के संतों में दिगम्बर जैन संतों का त्याग और कठिन तपस्या से जीवन में मैं सबसे अधिक प्रभावित हूँ। सन 1993 से 2003 के बीच लगातार 10 वर्ष तक जब श्री दिग्विजय सिंह जी मध्यप्रदेश के मुख्य मंत्री थे उस दौरान आपने जैन तीर्थ कुण्डलपुर, पुष्पगिरी, सोनागिरी बावनगजा बड़वानी, मक्सी पार्श्वनाथ, गोलाकोट पचराईजी सिद्धवरकूट, नेमावर आदि के लिये उदारता से सहयोग किया। आपने मध्यप्रदेश में गोसेवा आयोग का गठनकर गोशालाओं को शासकीय अनुदान दिलाया।

जैन संतों एवं जैन धर्म के प्रति श्री दिग्विजय सिंह की श्रृद्धा एवं समर्पण स्वागत योग्य है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के पूर्व अध्यक्ष श्री सुधीर जी सिंघई श्रवणबेलगोला में

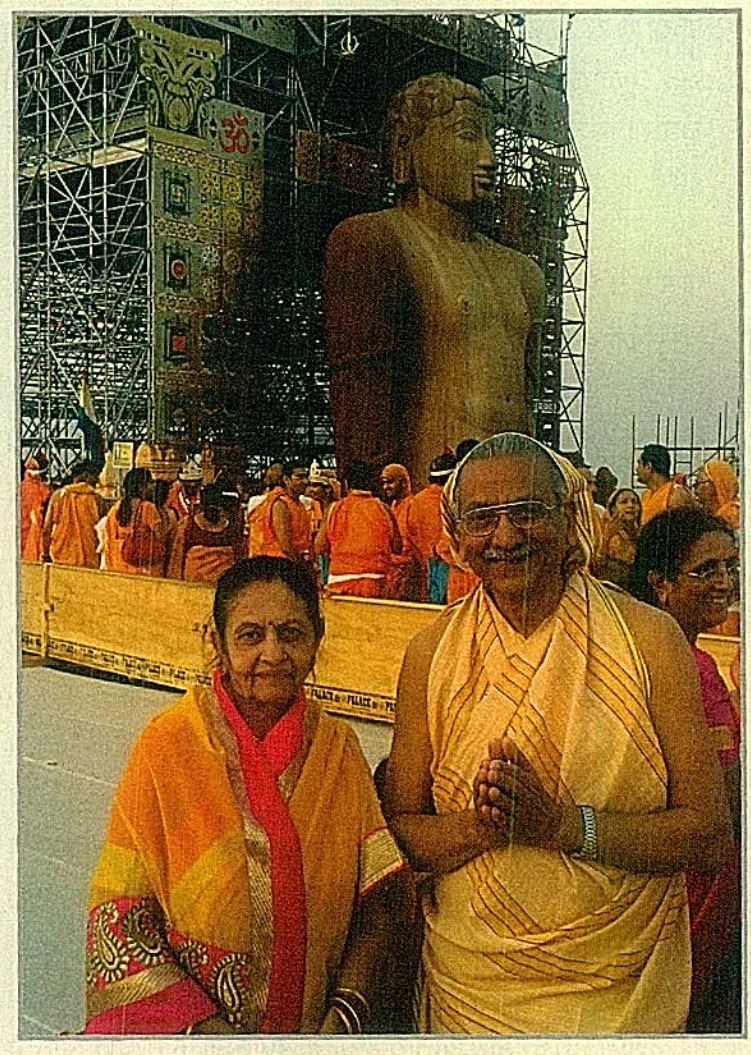

महावीर जन्म कल्याणक पर भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांत और एकता का उदयपुर में हुआ शंखनाद

झीलों की नगरी उदयपुर बड़े हर्षोल्लास के साथ चतुर्थ पट्टाचार्य आचार्य सुनील सागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में श्री महावीर जन्म कल्याणक महोत्स्व एवं २२वां दीक्षा दिवस मनाया गया।

आचार्य सुनील सागर जी महाराज ने कहा कि जैन धर्म के २४ वे तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्म कल्याणक महोत्सव है जो सम्पूर्ण विश्व में बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। भगवान महावीर स्वामी ने सर्वज्ञ देव के रूप में लगभग ३० वर्ष तक अपनी दिव्य देशना के माध्यम से ज्ञान का प्रकाश फैलाया, धर्म और अहिंसा जैसे विशेष सिद्धान्तों को समझाया। क्योंकि धर्म बला नहीं एक कला है।

अहिंसा हमारे समता के सूर्य को जगाती है, अहिंसा से हमारी आत्मशक्ति को बल मिलता है, अहिंसात्मक जीवन मनुष्य की वीरता का पोषण है, अहिंसा हमारी आत्मा का हमारे स्वाभाव का गुण है, क्योंकि हम भगवान महावीर स्वामी के अनुयायी है, उनके सिद्धांतों को मानने वाले हैं। और आज महावीर जन्म कल्याणक महोत्स्व है। हमें एकता के साथ आज के दिन भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांतों पर के जुट होकर कदम उठाना है, और अपने जीवन को अहिंसात्मक बनाना है।

भगवान महावीर और उनके सिद्धांतों की सम्प्रसंगता आज है। आज भी उनके अहिंसा, सत्य, अचौर्य,पद्यवाद के सिद्धांतों की जरूरत है, जैसे प्यास मिटने के लिए पानी ही चाहिए दूध, जूस, अदि से प्यास नहीं भुझ सकती उसी प्रकारअहिंसात्मक जीवन जीने के लिए भगवान महावीर के सिद्धांतों का ही ज्ञान चाहिए।

आदमी-आदमी को नहीं समझता, एक माँ अपने अंश को नहीं समझती, अपने गर्व में ही एक जीव को मर डालने के लिए ततपर्य हो जाती है तब उस समय भगवान महावीर और उनके सिद्धांत बहुत याद आते है। उन्होंने अपने साधना काल में बलि प्रथा को ख़त्म किया,भयंकर खुखार भुचढ़खाने को बंद किया। इंसानियत की अलख को मानवता में जाग्रत किया था। और अपने सारे कर्मो को नस्ट करके आज सिधालय में विराजमान है, त्रिकोलीनाथ बन गए है, जगत पूज्य हो गए है।

आज के युग में भगवान महावीर और उनके सिद्धांतों पर जो लोग चलते है उनके चित्र को देखकर चरित्र को पालते है ऐसे मुनिराज दिगंबर संत आज भी देखने को मिलते है। आज की दुनिया स्वीकार करती है की आज भी इस मानवता

को अहिंसाणु व्रत की जरूरत है। अनेकांतवाद की जरूरत है। हमारी आपकी सब की जिम्मेदारी बनती है कि भगवान महावीर के सिद्धान्तों से जीवन जीना स्वीकार करें।

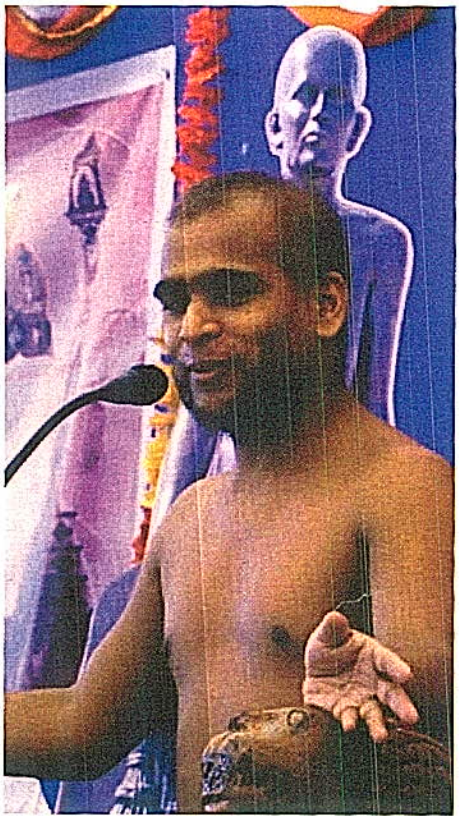

लोगों के सामने प्रगट करे कि हम भगवान महावीर के वंशज हैं, उनके सिद्धांतों को मानने वाले है अपने व्यवहार से अपने कर्त्तव्य से अपने जीवन से भगवान महावीर के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार करना चाहिए।

जब आप आधी रात को भोजन करते और कोई पूछता है तो तब आप अपने आप को जैन कहते हैं, भगवान महावीर के अनुयायी बताते है इससे बड़ी शर्मनाक बात क्या हो सकती है। आज के वरिष्ठ व्यक्ति मंदिर के ट्रस्टी मंदिर के भवनों, धर्मशाला को किराये पर दे देते है कुछ रुपए के लिए उसमे कितनी अहिंसा होती है रात्रि में भोजन बनता है, शराब पीते हैं आपने अपने भवन को धर्मशाला को शराब खोरी का अड्डा बना दिया है जरा विचार करना क्या हम भगवान महावीर के धर्म सिद्धांतो का पालन कर रहे हैं।

आपने पुरुरवा भील और उसकी कलिका पत्नी की चर्चा सुनी है, कथा भी सुनी है एक छोटा सा नियम - मांस का त्याग किया और सौधर्म स्वर्ग में इंद्र पद को प्राप्त किया जो कभी भील की पर्याय में था सिर्फ भगवान महावीर के नियम सिद्वांतों का पालन करना।

आप सभी लोग उदयपुर निवासी संकल्प करे भगवान महावीर के सिद्धांतो का सम्पूर्ण जैन समाज की एकता के साथ और भगवान महावीर के वंशज बने तो हमारा आज भगवान महावीर स्वामी की जयंती मनाना सार्थक हो जायेगा।

बा.ब्रं.विशाल भईया

श्री महावीरजी में बही विकास की गंगा

प्रबन्धकारिणी कमेटी दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, श्री महावीरजी द्वारा क्षेत्र में मंदिर के एवं पंचायत तथा मूल रुप से करौली जिले में निरंतर सुनियोजित विकास के लिए राज्य सरकार एवं देश के विभिन्न श्रेष्ठीगण दातारों से सम्पर्क कर निम्नांकित कार्यों को मूर्तरूप देने हेतु निरंतर प्रयासों के फलस्वरूप वर्ष–2017–18 में विकास कार्य पूर्ण कर दिए है एवं 2018–19 में विकास कार्य शीघ्र ही प्रारम्भ होने जा रहे हैं जिनसे क्षेत्र पर आने वाले देश–विदेश के धर्मार्थी एवं ग्रामीणजन लाभान्वित होंगे एवं विकास की गंगा बहेगीः–

1. भगवान महावीर मार्ग गौरव पथ के रूप में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सिंहद्वार से मुख्य बाजार एवं भगवान महावीर स्वामी के मंदिर के सामने से ग्राम पंचायत, पार्श्वनाथ कांच मंदिर होते हुए, गंभीर नदी तट तक टाईल्सयुक्त रोड एवं सौदर्यकरण एवं सर्व सुविधा युक्त बनाये जाने हेतु राज्य सरकार द्वारा 2.25 करोड रुपये की लागत का टेण्डर जारी कर दिया गया है। सड़क का निर्माण कार्य माह अप्रेल, 2018 में शुभारम्भ करवाया जाना राज्य सरकार द्वारा सुनिश्चित किया गया है।

2. कमेटी के प्रयासों से राज्य सरकार द्वारा श्री महावीरजी से नादौती सिकन्दरा क्षतिग्रस्त मार्ग के सुदृढीकरण एवं विस्तार हेतु निवेदन किये जाने पर राज्य सरकार द्वारा भारत सरकार के सड़क मंत्रालय के पास अनुशंशा पूर्वक 37 करोड रूपये का प्रस्ताव भिजवाकर माह मई में सड़क का निर्माण कार्य केन्द्रीय सड़क निर्माण योजना के तहत शुभारम्भ कराये जाने के प्रयास युद्धस्तर पर राज्य सरकार द्वारा प्रारम्भ कर दिए गये है। स्वीकृति शीघ्र ही प्राप्त होने का सार्वजनिक निर्माण विभाग के मंत्री द्वारा आश्वासन दिया गया है।

3. कमेटी द्वारा लम्बे समय से श्री महावीरजी क्षेत्र एवं आस–पास के ग्रामीणजनों की अत्यंत आवश्यकता हेतु सामुदायिक स्वास्थ्य चिकित्सा केन्द्र के निर्माण कार्य के लिए प्रबंधकारिणी कमेटी द्वारा क्षेत्र की ओर से समर्पित 04 बीघा जमीन पर बनाये जाने वाले सामुदायिक चिकित्सा केन्द्र हेतु स्वास्थ्य मंत्रालय राजस्थान सरकार द्वारा 5.25 लाख रूपये की स्वीकृति प्रदान कर दी गई हैं। निर्माण कार्य माह अप्रेल से प्रारम्भ होना सुनिश्चित किया गया है।

4. राज्य सरकार द्वारा कमेटी के प्रयासों से एवं गाँव वालों की माँग पर माननीया मुख्यमंत्री जी ने इस वर्ष बजट घोषणा में गंभीर नदी पर दालानपुर गाँव में चार करोड रुपये की लागत से एनीकट बनाये जाने की स्वीकृति प्रदान की है, साथ ही कमेटी द्वारा राज्य सरकार को सवाई माधोपुर–करौली जिलों के लिए प्रस्तावित चम्बल नादौती योजना के अन्तर्गत श्री महावीर जी तक पाइप लाईन लाने हेतु निवेदन कर दिया गया है।

5. कमेटी के प्रयासों से माननीय पीयूष जी गोयल, रेलमंत्री, भारत सरकार द्वारा यात्रीयों एवं ग्रामीण जनों की सुविधार्थ श्री महावीरजी में स्थित स्वागत कक्ष पर ट्रेनों के आवागमन की सूचना हेतु एक Auto डिस्प्ले स्क्रीन बोर्ड चालू कर दिया गया है साथ ही रिजर्वेशन काउन्टर प्रारम्भ करवाये जाने हेतु प्रयासरत है। रेलवे स्टेशन श्री महावीरजी से निकलने वाली अधिक से अधिक ट्रेनों को रूकवाये जाने के लिए कमेटी प्रयासरत है, साथ ही श्री महावीर जी को वर्ल्ड क्लास रेल्वे स्टेशन के रुप में विकसित करने की माननीय रेल मंत्री द्वारा की गई घोषणा को मूर्त रुप देने के प्रयास कमेटी द्वारा जारी है।

6. कमेटी द्वारा तीर्थंकर सर्किट के लिए श्री महावीरजी एवं अन्य मंदिरों को भारत सरकार की योजना के तहत एड करवाने के युद्धस्तर पर प्रयास जारी है। राज्य सरकार

के पर्यटन विभाग की ओर से।

7. 04 वाटर हार्वेस्टिंग की स्थापना चरणछत्री धर्मशाला, प्राकृतिक चिकित्सालय, वर्धमान धर्मशाला एवं प्रसूतिगृह में पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा स्वीकृत किए गए है। 02 वाटर हार्वेस्टिंग यात्री निवास एवं सन्मति धर्मशाला स्थापित किये जा चुके हैं।
8. कमेटी के प्रयासों से पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा मंदिरजी के शिखर एवं मंदिर जी के अन्दर लगे लाल पत्थर का रासायनिक उपचार करके संरक्षित किया जा रहा है।
9. कमेटी द्वारा 48 बेन्च एवं 42 पत्थर के डस्टबिन चरण छत्री परिसर में तथा मंदिर जी की भोजनशाला, प्राकृतिक चिकित्सालय एवं धर्मशालाओं में तथा मुख्य बाजार में बनवाये जाकर लगाए जायेगें।
10. माननीय प्रधानमंत्री जी के "स्वच्छ भारत अभियान" के तहत कचरा वाहन हेतु क्षेत्र की ओर से दो मैजिक गाड़ियो की व्यवस्था करवाई गई है।
11. कमेटी के निवेदन पर पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा दो सार्वजनिक शौचालय का कार्य किया जा रहा हैं।
12. कमेटी द्वारा मंदिर जी में उचित प्रकाश की व्यवस्था हेतु कार्य प्रारम्भ किया जा चुका है।
13. दानदाता श्री अशोक जी पाटनी, सिंगापुर निवासी ने क्षेत्र पर निर्बाध बिजली की आपूर्ति के लिए सोलर सिस्टम 250 किलोवाट का स्थापित कराया गया है।
14. कमेटी द्वारा हाल ही में क्षेत्र पर तीन बोरिंग का निर्माण किया गया है। एक बगीचे में, एक मंदिर परिसर एवं एक बस स्टेण्ड पर ।
15. कमेटी द्वारा मंदिर जी के दक्षिणी भाग में पौराणिक भावों को प्रदर्शित करते हुए प्रतिमा के उद्भव से लेकर रथयात्रा तक के भावों का आठ चित्रण बंशी पहाड़पुर के पत्थर पर करवाया जाकर स्थापित करने का कार्य करवाया जा रहा है।
16. यात्री निवास के पश्चिमी द्वार पर स्थित 07 वातानुकूलित कमरों का रिनोवेशन एवं नवीनीकरण का कार्य प्रगति पर है।
17. क्षेत्र कमेटी द्वारा बस स्टैण्ड का सौन्दर्यकरण कार्य प्रगति पर है।
18. क्षेत्र कमेटी द्वारा यंत्र चलित घोडों द्वारा चलित रथ तैयार करवाया गया है। इसी रथ में दिनांक 1–4–2018 को रथ यात्रा में जिनेन्द देव की प्रतिमा को विराजमान कर नदी तट पर ले जाया जायेगा।
19. कमेटी द्वारा मंदिर जी की पूर्वी परिक्रमा में संगमरमर पर पौराणिक भाव तैयार करवा कर लगवा दिये गये है।
20. कमेटी द्वारा मंदिर जी की समस्त वेदियों पर चाँदी का कलात्मक कार्य व चार वेदियों में चाँदी के सिंहासन बना कर लगवा दिये गये है।
21. क्षेत्र पर स्थित धर्मशालाओं में यात्रियों की सुविधा हेतु 60 प्रतिशत आवासों की ऑनलाईन बुकिंग चालू कर दी गयी है।
22. क्षेत्र कमेटी द्वारा सभी धर्मशालाओं में बैडशीट एवं ओढ़ने की चद्दरें धुलवाने एवं प्रेस करवाने हेतु एक कॉर्मशियल प्लांट स्थापित करवा दिया गया है।
23. तीर्थंकरों के ज्ञान कल्याणक वक्र चरण छतरी परिसर में लगवाया जाना प्रारम्भ करवा दिया गया है।

(महेन्द्र कुमार पाटनी) मंत्री

(सुधांशु कासलीवाल) अध्यक्ष

प्रवेश सूचना

श्री महावीर दिगम्बर जैन संस्कृत उ.मा.विद्यालय (अल्पसंख्यक संस्थान) एवं श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन छात्रावास साढूमल जिला ललितपुर (उ.प्र.)

प्रसन्नता एवं गौरव का विषय है कि संस्था का 102 वां सत्र 1जुलाई 2018 से प्रारम्भ हो रहा है, इस विद्यालय में समस्त आधुनिक छात्रावासीय सुविधायें भोजन, आवास ,औषधि योग्य व कुशल अध्यापकों द्वारा शिक्षण सहित निःशुल्क उपलब्ध हैं। इस विद्यालय में छात्रों के चहुँमुखी विकास हेतु कम्प्यूटर शिक्षण, विभिन्न प्रतियोगिताएँ,शैक्षिणिक भ्रमण,तीर्थयात्रा,साप्ताहिक सभा, विधिविधान, नैतिक एवं धार्मिक शिक्षण सहित विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियाँ संपन्न की जाती हैं। कक्षा 6,7,8,9 एवं 11में प्रवेश के इक्छुक छात्र 25 जून 2018 तक प्रतिहस्ताक्षरित टी.सी.एवं अंकपत्र सहित साक्षात्कार हेतु उपस्थित हों

सम्पर्क सूत्र:-

विनीत कुमार जैन(प्रधानाचार्य)

मो.- 9721419696

संतोष कुमार जैन(गृहपति)

मो.- 7376527947

-प्रेषक : डॉ सुनील जैन संचय

भगवान महावीर की जन्मभूमि बासोकुण्ड वैशाली में बिहार सरकार ने मनाया 'वैशाली महोत्सव'

तीन दिन तक मनाया गया भगवान महावीर का जन्मोत्सव

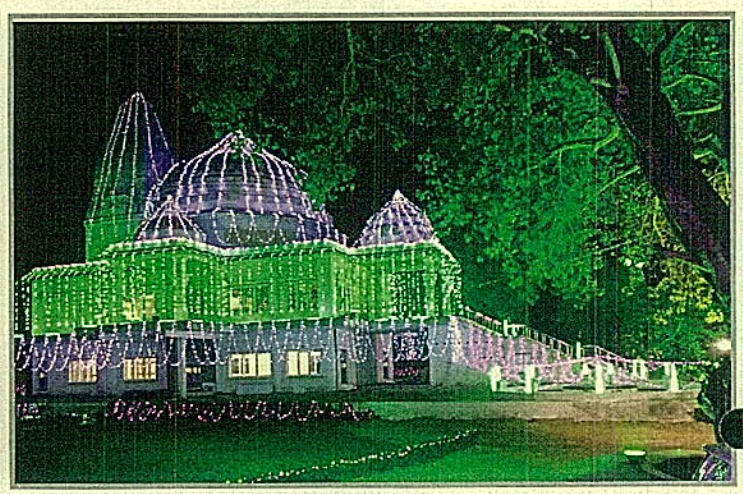

वैशाली (बिहार)। अंतिम तीर्थंकर वर्तमान शासन नायक विश्व वंदनीय भगवान महावीर का जन्मोत्सव अत्यन्त हर्ष व उत्साह के साथ मनाया गया। 2617 वीं जयंती के अवसर पर त्रिदिवसीय आयोजन बिहार सरकार व भगवान महावीर स्मारक समिति द्वारा सम्पन्न हुए जिसमें बिहार सरकार के पर्यटन मंत्री श्री प्रमोदकुमार, पथ निर्माण मंत्री श्री नंदकिशोर यादव, स्मारक समिति के महामंत्री श्री सतीशचंद जैन (एस.सी.जे.) दिल्ली, कार्याध्यक्ष श्री अनिल जैन कनाड़ा, महासभा अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार सेठी, श्री राजेन्दर जैन दिल्ली, जिला कलेक्टर श्रीमती रचना पाटिल, पुलिस अधीक्षक श्री राकेशकुमार, जिला न्यायाधीश श्री अखिलेश जैन सहित दिल्ली जैन समाज के अनेक श्रद्धालु व शासन–प्रशासन के अनेक अधिकारी उपस्थित थे। बिहार सरकार द्वारा आयोजित यह 74 वॉ वैशाली महोत्सव था।

तीर्थंकर महावीर का अभिषेक सहित अनेक आयोजन

29 मार्च को प्रातः भगवान महावीर के जन्म समय से अहल्य भूमि पर श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंदजी महाराज की प्रेरणा से निर्मित विशाल मंदिर में स्थापित श्वेतवर्णी भगवान महावीर की प्रतिमा पर अभिषेक सर्वप्रथम सौधर्म इन्द्र श्री अनिल जैन कनाड़ा ने किया व ध्वजारोहण श्री सतीश जैन(एस.सी.जे.) दिल्ली ने किया। मंत्रोच्चार विधि–विधान जैनदर्शन के मर्मज्ञ डॉ. जयकुमार उपाध्ये दिल्ली ने सम्पन्न कराते हुए भगवान महावीर विधान सम्पन्न कराया। अत्यन्त उत्साह के साथ दिल्ली के श्रद्धालु वैशाली पहुँचे और भगवान महावीर का जन्मोत्सव मनाया।

विश्व मानचित्र पर स्थापित करेगें वैशाली को – पर्यटन मंत्री

बिहार सरकार के पर्यटन मंत्री श्री प्रमोदकुमार ने वैशाली महोत्सव के उद्घाटन अवसर पर कहा कि वैशाली, पटना, नालंदा आदि जैन व बोद्ध धर्मावलंबियों की आस्था का केन्द्र है इन्हें एक सर्किट में जोड़ देने से पर्यटन को बल मिलेगा। वैशाली जैनधर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्मभूमि है इसे विश्व मानचित्र पर स्थापित किया जाएगा। पथ निर्माण मंत्री श्री नंदकिशोर यादव ने कहा वैशाली को जोड़ने वाली सड़कों, संग्रहालय आदि का निर्माण भी कराया जाएगा। श्री यादव ने कहा कि भगवान महावीर का सन्देश अहिंसा परमो धर्म सम्पूर्ण विश्व को अपनाने की आवश्यकता है। हाजीपुर से वैशाली तक सड़क निर्माण के लिए 36 करोड़ व सड़क योजना व गंगा नदी पर गांधी सेतु हेतु 124 करोड़ रूपये के कार्य कराने की घोषणा भी उन्होंने की। इस अवसर पर जिला कलेक्टर श्रीमती रचना पाटिल द्वारा सम्पादित 'वैशालिका' का विमोचन अतिथियों ने किया।

भरत नाट्यम व कवि सम्मेलन हुआ

जन्मोत्सव के अवसर पर पद्मश्री सम्मान प्राप्त मशहूर नृत्यांगना गीता चन्द्रन व उनकी टीम ने भगवान महावीर के अनेकांतवाद पर आधारित भरतनाट्यम व अल्लरिपु नृत्य प्रस्तुत किया जो अत्यन्त आकर्षक था। नृत्य संचालन कर रही नृत्यांगना डॉ. स्नेहा चक्रधर दिल्ली ने अत्यन्त सुन्दर ढंग से भगवान महावीर के अनेकांत व स्याद्वाद के सिद्धांत की व्याख्या प्रस्तुत की

जो सराहनीय थी। दिल्ली की सुश्री प्रतीक्षा जैन ने भगवान महावीर के जीवन पर मनमोहक नृत्य व नीलांजना नृत्य की प्रस्तुति गायक प्रदीप जैन दिल्ली के स्वर–संगीत पर देकर सबका मन मोह लिया। दिल्ली जैन समाज की सर्वश्री श्रीमती उर्मिल जैन कनाड़ा, राजरानी, इन्दू, कविता, मैनादेवी, निशा जैन दिल्ली ने जन्मोत्सव भजन प्रस्तुत किया। गायक प्रदीप जैन ने आज आनंद है या नगरी भजन प्रस्तुत कर जन्म की खुशियाँ मनाई।

राष्ट्रीय कवि श्री चन्द्रसेन जैन भोपाल के संचालन में सर्वश्री अजय अहिंसा बाकल, अशोक सुंदरानी सतना, डॉ. रूचि चतुर्वेदी आगरा ने अपनी सुंदर रचनाओं से भगवान महावीर का जीवन चरित्र प्रस्तुत कर उपस्थित जनमानस का मन मोह लिया।

बोना पोखर से जन्मभूमि तक निकली शोभायात्रा

बोना पोखर में विराजमान भगवान महावीर की प्राचीन प्रतिमा से विशाल शोभायात्रा निकली जो दोपहर में अहल्य भूमि बासोकुण्ड विदेह वैशाली पहूँची, जिसमें मुजफ्फरपुर, सरैया आदि स्थानों के जैन श्रद्धालु व अनेक जैनेत्तर श्रद्धालु सम्मिलित हुए। जन्म दिवस की पूर्व संध्या पर जैन जगत के पत्रकार सर्वश्री पुनीत जैन, स्वराज जैन टाइम्स ऑफ इण्डिया, लोकेश भारती नवभारत टाइम्स, ललित गर्ग, राजेन्द्र महावीर सनावद सम्पादक मंगल कलश, नवनीत जैन सम्मेदाचल, प्रवीण जैन सांध्य महालक्ष्मी दिल्ली, अनुपमा जैन सनावद, रजनीसिंह का सम्मान जिला जज वैशाली श्री अखिलेश जैन, एस.पी. उपेन्द्रनाथ वर्मा, सतीश जैन आदि ने किया। संचालन स्मारक समिति के कार्याध्यक्ष श्री अनिल जैन कनाड़ा ने किया।

स्वयं को जीतने का मार्ग दिखाता है जैन धर्म – संजय जोशी

प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान वैशाली के डायरेक्टर डॉ. ऋषभचंद फौजदार की अध्यक्षता में हुई जगदीशचंद्र माथुर स्मृति व्याख्यानमाला में भाजपा के पूर्व महासचिव श्री संजय विनायक जोशी ने कहा कि संयमित जीवन ही मनुष्य का लक्ष्य होना चाहिये, भगवान महावीर ने संयम के माध्यम से इन्द्रियों व उससे उत्पन्न विषयों को जीत लिया था इस कारण वे जिन कहलाये, यदि हमने इन्द्रियों को जीता लिया तो सारी समस्यायें समाप्त हो जायेगी। स्वयं को जीतने का मार्ग जैन दर्शन दिखाता है। व्याख्यानमाला में बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन पटना के डॉ. अनिल सुलभ, बालचन्द्र कॉलेज सोलापुर के डॉ. महावीर पी.शास्त्री, प्रो. विजयकुमार, विश्व हिन्दू परिषद सीतामढ़ी के राकेश तिवारी, महासभा अध्यक्ष निर्मलकुमार सेठी ने भी सम्बोधित किया।

जैनधर्म के पुरावशेष भारत के बाहर भी है – निर्मल सेठी

जैन जगत के वरिष्ठ व अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार सेठी ने कहा कि जैनधर्म के पुरावशेष भारत के बाहर भी है। इंडोनेशिया, मलेशिया, अफगानिस्तान, बर्मा, श्रीलंका, पाकिस्तान आदि जगहों पर उन्होंने स्वयं जैन धर्म के पुरावशेष देखे है। इनकी पहचान के लिए महासभा के माध्यम से पुरातत्व विशेषज्ञों को ले जाकर पहचान की जा रही है साथ ही महावीर दर्शन पर संगोष्ठियों का आयोजन भी किया जा रहा है। अन्य देशों में जैनधर्म को समझने, पढ़न की ललक बड़ी है। व्याख्यानमाला में प्रो. जयकुमार उपाध्ये, पुनीत जैन, स्वराज जैन आदि उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि बिहार सरकार प्रतिवर्ष भगवान महावीर जयंती पर 'वैशाली महोत्सव' का आयोजन करती है। भगवान महावीर स्मारक समिति के श्री सतीष जैन, अनिल जैन कनाड़ा, जिला जज वैशाली श्री अखिलेश जन के सकारात्मक प्रयासों से वैशाली महोत्सव में जैन जगत के सभी उपस्थितजनों को विशेष महत्व दिया गया, सभी समाजजनों को चाहिये कि भगवान महावीर जयंती के अवसर पर हम बड़ी संख्या में वैशाली पहुँचे व जन्मोत्सव के कार्यक्रम में सम्मिलित हो। भगवान महावीर स्मारक समिति द्वारा सर्वसुविधायुक्त धर्मशाला भी निर्मित हो चुकी है।

प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद ने किया था शिलान्यास

भारतीय गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसादजी ने भगवान महावीर जन्म की अहल्य भूमि पर भगवान महावीर स्मारक का शिलान्यास किया था। उक्त भूमि पर आचार्यश्री विद्यानंदजी की प्रेरणा से विशाल मंदिर का निर्माण हो गया है। भगवान महावीर की श्वेत वर्ण की अत्यन्त मनोहारी पद्मासन प्रतिमा विराजमान है, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित भगवान महावीर की जन्मभूमि पर अनेक अतिशयकारी अनुभव होते है। उक्त स्थान पर विकास कार्य निरन्तर जारी है सभी जैन समाजजनों का कर्तव्य है कि भगवान महावीर जन्मभूमि हेतु तन–मन–धन से सहयोग करें।

–अनुपमा जैन
217, सोलंकी कॉलोनी, सनावद
जिला – खरगोन (म.प्र.)

भगवान महावीर के सिद्धान्त आज भी प्रासंगिक है

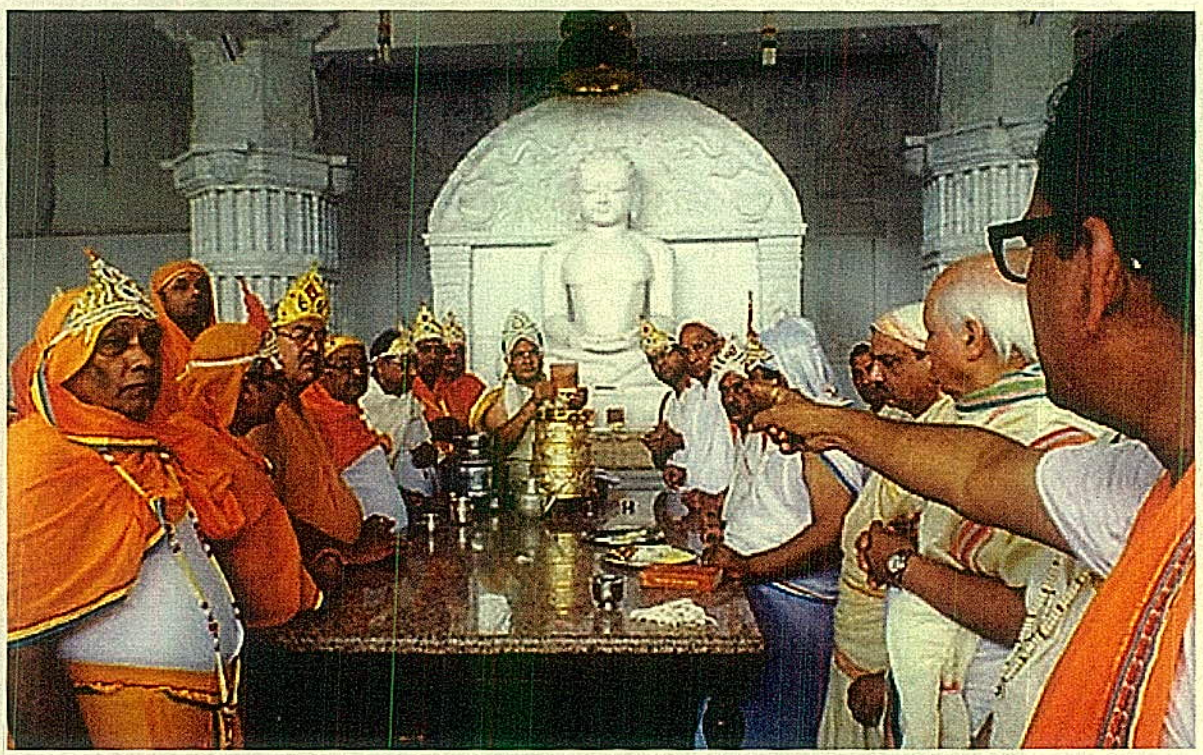

आज सारे विश्व को भगवान महावीर के सिद्धान्तों की बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि आज का युग आंतकवाद, प्रदूषण, हिंसा आदि बड़ी–बड़ी समस्याओं से जूझ रहा है, और उसका समाधान केवल महावीर की वाणी में ही है। उक्त विचार महावीर जयंती पर बिहार के पर्यटन मंत्री श्री प्रमोद कुमार ने भरी सभा में व्यक्त करते हुए कहा कि, यदि लोग भगवान महावीर की बात मान लिए होते तो आज इतनी गंभीर समस्यायें पैदा ही नहीं होतीं।

यह गौरव की बात है कि वैशाली के वासोकुण्ड गाँव में भगवान महावीर स्वामी का जन्म हुआ। जहाँ प्राचीन प्रजातंत्र स्थापित था, यहाँ सुदृढ़ और सुसंगठित शासन व्यवस्था थी। जिससे आज भी हमें प्रेरणा मिलती है। वैशाली विश्व में प्रथम प्रजातंत्र में जननी है। आज भगवान महावीर की जन्म–भूमि पर परमपूज्य स्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानन्द जी मुनिराज की प्रेरणा से विश्व के अनोखे जैन मंदिर का निर्माण हुआ है। यह प्रदेश वासियों के लिए गौरव की बात है। यह महज संयोग ही है, कि देश के प्रथम राष्ट्रपति महामहिम डा0 राजेन्द्र प्रसाद जी ने 23 अप्रैल 1956 को भगवान महावीर की जन्म–भूमि परिसर में आधारशिला रखी।

वासोकुण्ड के प्राकृत जैन शास्त्र व अहिंसा शोध संस्थान में आयोजित जगदीशचंद माथुर व्याख्यान 'माला में अध्यक्षता करते हुए भाजपा के पूर्व महासचिव डा0 संजय विनायक ने कहा कि जैन धर्म के 24वें तीर्थकर भगवान महावीर का अहिंसा का संदेश आज भी प्रासंगिक है। दि0 जैन महासभा के अध्यक्ष निर्मल कुमार सेठी ने कहा कि जैन धर्म के परावशेष भारत के बाहर इण्डोनोशिया, मलेशिया, अफगानिस्तान, वर्मा, श्रीलंका आदि देशों में भरे पड़े हैं। इन्हें विश्व के मानचित्र पर लाने के लिए उन देशों मे जाकर इनके अवशेषों की पहचान की जा रही है। बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डा0 अनिल सुलभ ने कहा कि जैन धर्म के सिद्धान्त आज से 2600 वर्ष पूर्व जितने प्रासंगिक थे, उससे अधिक प्रासंगिक आज है। भगवान महावीर ने अहिंसा के लिए पाँच महाव्रत का उपदेश दिया था। जिसे अपने अंदर उतारने की जरूरत है। प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान के निदेशक डा0 रिषभचंद जैन फौजदार ने कहा कि भगवान महावीर ने हमें जीने का आर्दश कला सिखाई थी। इस अवसर पर डा0 मंजूबाला, डा0 विजय कुमार, डा0 महावीर शास्त्री सोलापुर, डा0 जयकुमार उपाध्येय, श्री कैलाशचंद पाटनी पटना, स्वराज जैन दिल्ली ने भी संबोधन किया।

महावीर जयंती के अवसर पर देश भर से जुटे जैन अनुयाइयों ने उनके जन्म स्थान वसोकुण्ड में विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया, जो भगवान महावीर की मौसी के गाँव बोना पोखर से बाजे–गाजे के साथ बैलगाड़ियों में सजाकर विभिन्न ग्रामों से होकर वसोकुण्ड पहुँची। भगवान महावीर जी की प्रतिमा का अभिशेक, पूजा, अर्चना की गई। शोभा यात्रा में हजारों की संख्या में ग्रामीणों ने भाग लिया।

महावीर की जन्म भूमि, गौतम बुद्ध की कर्मभूमि, आम्रपाली की रंगभूमि और लोकतंत्र की जननी वैशाली में एक

साथ तीन दिवसीय वैशाली महोत्सव शुरू हुआ। महोत्सव का उद्घाटन बिहार के पर्यटन मंत्री श्री प्रामोद कुमार ने दीप प्रज्वलित कर किया। महोत्सव की अध्यक्षता करते हुए पथ निर्माण विभाग के मंत्री नन्द किशोर यादव ने कहा कि भगवान महावीर और गौतम बुद्ध के कारण वैशाली की पहचान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हुई है। अब जरूरत है कि वैशाली महोत्सव को भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने की। वैशाली महोत्सव की शाम को डी0 एम0 रचना पाटिल द्वारा सम्पादित वैशालिका पाण्डुलिपि का विमोचन किया गया।

वैशाली महोत्सव जिले की सांस्कृतिक विरासत् वैभव शाली परम्परा व विश्व के प्रथम उद्घोषित गणतंत्र याद करने का मन है। पर्यटकों से लेकर आम लोगो की उमड़ती भीड़ महोत्सव व वैशाली के महत्व की दास्तां कह रही है। जैन धर्म के 24वें तीर्थकर की भगवान महावीर के जन्मोत्सव पर आयोजित तीन दिवसीय आयोजन में जिला प्रशासन ने पूरी तैयारी की थी। इस अवसर पर भगवान महवीर स्मारक समिति के पदाधिकारी श्री अनिल जैन कनाडा कार्याध्यक्ष एवं महामंत्री श्री सतीश जैन एस0 सी0 जे0 ने वैशाली महोत्सव मे विशेष योगदान किया।

इस अवसर पर स्थानीय कलाकारों ने मछुआ गीत और चैता गायन से महोत्सव को खुशनुमा बना दिया। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पद्म श्री गीता चंद्रन एवं प्रतीक्षा जैन द्वारा प्रस्तुत भरत नाट्यम बरबस ही राज नर्तकी आम्रपाली की याद करा रही थी। नृत्यांगनाओं की प्रस्तुति देखने के लिए वक्त मानों ठहर सा गया था। विशाल पंडाल में बैठे लोग तन्मयता के साथ नृत्य को देख रहे थे। रह–रह कर तालियों के शोर से पूरा पंडाल गूंज रहा था। इसी अवसर पर कवि सम्मेलन भी आयोजित किया गया जिसमें चन्द्रसैन जैन भोपाल, कवि अजय जैन अहिंसा कटनी, डा0 रूचि चतुर्वेदी आगरा, श्री अशोक सुन्दरानी (सतना) आदि ने काव्य पाठ्य किया। श्री उर्मिल जैन एवं प्रतीक्षा जैन आदि ने एक सुन्दर भजन की प्रस्तुति की जिसे महोत्सव में उपस्थित भीड़ ने सराहा।

इस अवसर पर विधायक राजकिशोर सिंह, जिलाधिकारी रचना पाटिल, पुलिस अधिक्षक राकेश कुमार, राकेश जैन, (गौतम मोटर्स) श्री पुनीत जैन (वाइस प्रेसीडेंट द् टाइम्स ऑफ इण्डिया), दीपिका जैन, प्रकाश बोहरा राजेन्द्र जैन, ललित गर्ग, प्रवीन जैन, नवनीत जैन मेरठ, स्वराज जैन टाइम्स ऑफ इण्डिया, कविता जैन आदि गणमान्य उपस्थित थे।

स्वराज जैन

क्रांतिकारी संपादक श्री रमेश कासलीवाल का दुःखद निधन

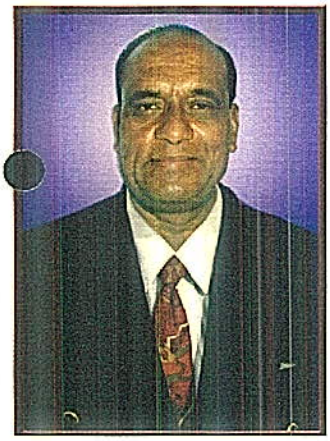

प्रसिद्ध समाजसेवी, निर्भीक वक्ता एवं वीर निकलंक के संपादक भाई श्री रमेश जी कासलीवाल का 5 अप्रैल 2018 गुरुवार की रात्रि में दुःखद निधन हो गया। विगत 01 वर्ष से वे पेट की कुछ व्याधि से ग्रसित थे किन्तु अपनी इच्छा शक्ति के बल पर फरवरी 2018 का वीर निकलंक का अंक आपने प्रकाशित किया। 13 मार्च को उन्हें शल्य चिकित्सा हेतु बाम्बे हास्पिटल में भर्ती कराया गया। वे शनैः–शनैः स्वास्थ्य लाभ भी प्राप्त कर रहे थे किन्तु अप्रैल माह में अचानक उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। 13.02.47 को जन्मे श्री कासलीवाल 71 वर्ष की आयु में 5–6 अप्रैल की मध्य रात्रि में पत्नी, दो पुत्र, पुत्र वधुओं, बेटी, दामाद, नाती, पोतों का भरा पूरा परिवार छोड़कर चले गये। 6 अप्रैल की शवयात्रा में समाज के वरिष्ठजन, सगे संबंधी, इष्ट मित्र सभी उपस्थित थे। रविवार 8 अप्रैल 2018 की प्रातः उठावने में तो हजारों की संख्या में जैन और जैनेतर समाज के बंधुओं, राजनेताओं, दि.जैन महिला संगठन की बहनों ने अश्रुपूरित नयनों से उन्हें श्रद्धांजलि दी।

जुझारू सामाजिक कार्यकर्ता, प्रखर वक्ता एवं अपने संपादकीयों के लिये पूरे देश में जाने जाने वाले भाई श्री रमेश जी कासलीवाल वर्षों तक याद किये जायेंगे। इंदौर ही नहीं संपूर्ण देश की जैन समाज ने सामाजिक मुद्दों पर मन झकझोरने वाले कलम के इस सिपाही को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि उनका अभाव हमेशा खलेगा।

भारतवर्षीय दि.जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार, दि. जैन सामाजिक संसद इंदौर, तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ, दि. जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन, दि. जैन महासमिति आदि अनेक संस्थाओं ने शोक संतप्त परिवार हेतु धैर्य एवं दिवंगत आत्मा की शीघ्र मुक्ति की कामना की।

– डॉ. अनुपम जैन

बिहार स्टेट दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र के अंतर्गत सभी जैन तीर्थों में आचार्य 108 श्री विमलसागर जी महाराज की मूर्ति स्थापित की गई

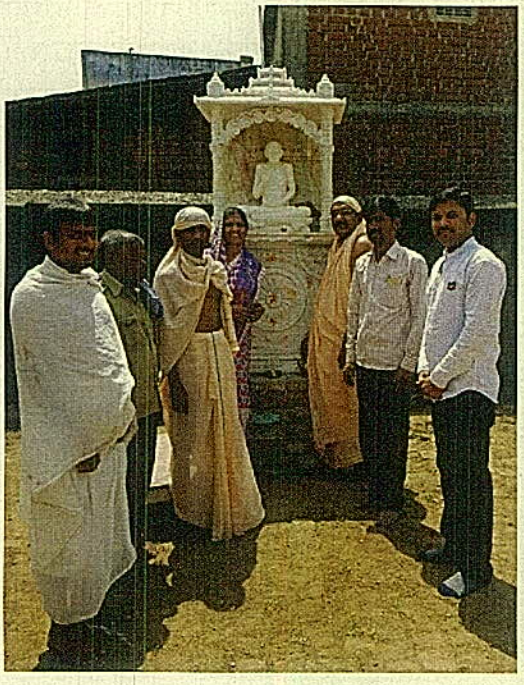

राजगीर (नालन्दा) बिहार :- भारतीय श्रवण परम्परा के पोषक, भद्र परिणामी, आत्महित रत, करुणा के सागर, मंगल भावना के स्त्रोत, गुरु परम्परा के अनुसार यंत्र – मंत्र विशारद, भविष्यवक्ता, चारित्र चूड़ामणि, वात्सल्य रत्नाकर **आचार्य श्री १०८ विमल सागर जी महाराज** की प्रतिमा **बिहार स्टेट दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटी** के अंतर्गत सभी जैन क्षेत्रों पर मानद् मंत्री **श्री पराग जैन** के निर्देशन में नवनिर्मित वेदी पर वेदी शुद्धीकरण कराकर विराजमान की गई। विदित हो कि सन् २०16 ई० को उनकी जन्म शताब्दी मनाई गई थी, उसी समय तत्कालीन **मानद् मंत्री श्री अजय कुमार जैन** ने बिहार स्टेट दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटी के सभी क्षेत्रों पर आचार्य श्री की एक – एक प्रतिमा प्रतिष्ठित करने की घोषणा की थी। कमिटी के अध्यक्ष, परम मुनि भक्त एवं आचार्य श्री के कृपापात्र **श्री आर० के० जैन, मुम्बई** के सौजन्य से आचार्य श्री की प्रतिष्ठित प्रतिमा प्राप्त हुई तथा **आचार्य श्री चैत्यसागर जी महाराज** के मंगल आशीर्वाद से सभी मूर्ति हेतु भव्य वेदी क्षेत्रों पर भेजी गई।

आचार्य श्री १०८ विमल सागर जी महाराज की वेदी शुद्धीकरण के लिए ग्वालियर से आये **पंडित अजित शास्त्री जी**, ध०प० – **श्रीमति मनोरमा जैन**, सहयोगी - **श्री राकेश जैन** ने **२८/०३/२०१८ से ०२/०४/२०१८** के बीच क्रमशः श्री गुणावां जी सिद्ध क्षेत्र, श्री कैवल्यधाम (जमुई) जी तीर्थ क्षेत्र, श्री मन्दारगिरी जी सिद्ध क्षेत्र, श्री कुण्डलपुर जी तीर्थ क्षेत्र, श्री पावापुरी जी सिद्ध क्षेत्र, श्री राजगृह जी सिद्ध क्षेत्र, श्री कमलदह जी सिद्ध क्षेत्र, श्री वैशाली जी तीर्थ क्षेत्र पर जाकर सभी क्षेत्रों पर वेदी शुद्धी कर प्रतिमा नवनिर्मित वेदी में विराजमान इनके द्वारा किया गया।

आज पूरा देश साल आपकी जन्म जयंती मना रहा है और उनके प्रति अपनी श्रद्धांजली अनेक कार्यक्रम के माध्यम से अर्पित कर रहा है। ऐसे आचार्य श्री को **शत् – शत् वन्दन।**

रवि कुमार जैन
राजगीर (नालन्दा)

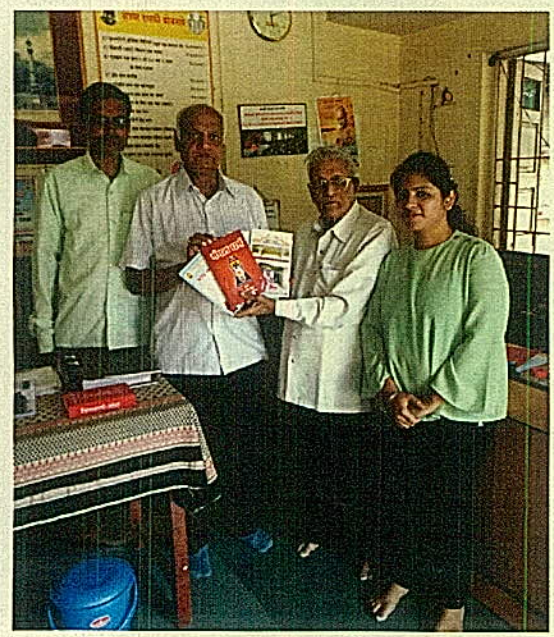

कुंथलगिरि क्षेत्र पर छात्रों को पुस्तकें भेंट दी गई

मनीषा जैन को मिली पीएच.डी. की उपाधि

लाडनूं (16 मार्च, 2018) जैन विश्वभारती संस्थान (मा विश्वविद्यालय) के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा श्रीमती मनीषा जैन को पीएच.–डी. की उपाधि प्रदान की गयी। यह उपाधि मनीषा जैन को **"आचार्य कुन्दकुन्द प्रणीत दसभक्ति का विशलेषणात्मक अध्ययन"** विषय पर किये गये शोध कार्य के लिए प्रदान की गयी। डॉ जैन वर्तमान में प्राकृत एवं संस्कृत विभाग में रिसर्च एसोसिएट के पद पर कार्य कर रही हैं तथा प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संरक्षण संस्थान की मानद् निदेशक पर पर भी कार्य कर रही है। ज्ञातव्य है कि डॉ. जैन के आलेख समसामायिक विषयों पर देश की प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशित होते रहते हैं। डॉ मनीषा जैन ने जैन विश्वभारती संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूग्गड़ एवं समस्त संकाय सदस्यों के प्रति आभार व्यक्ति किया।

– शरद कुमार जैन,
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

मुंबई की श्रीमती रुबी डावड़ा को श्रावक रत्न की उपाधि प्रदान करते हुए

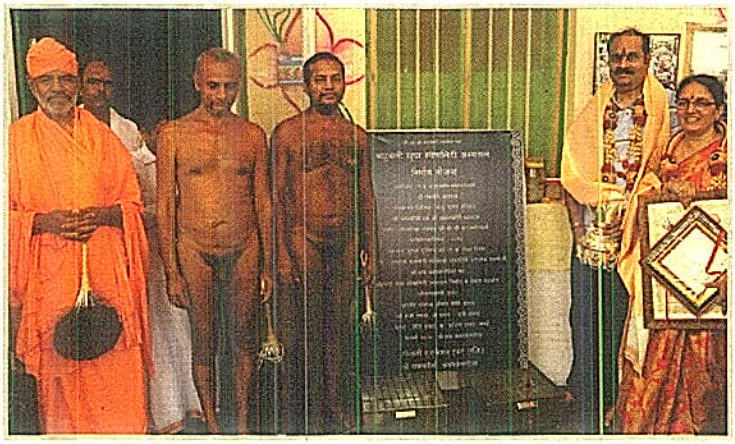

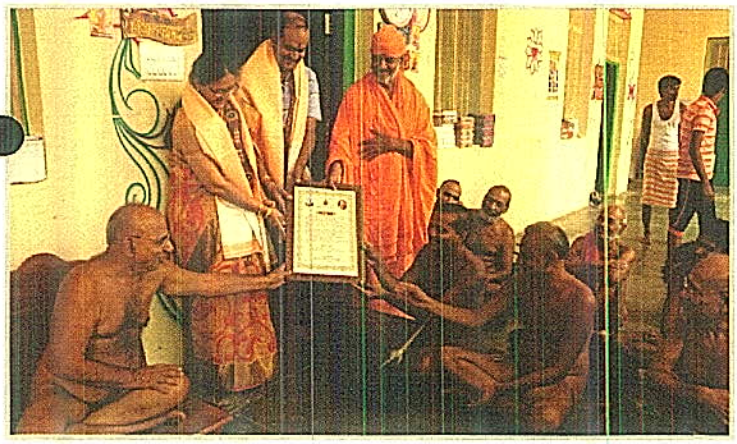

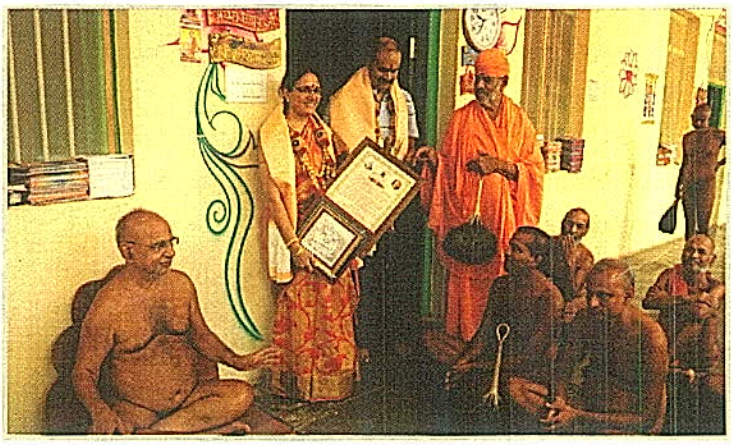

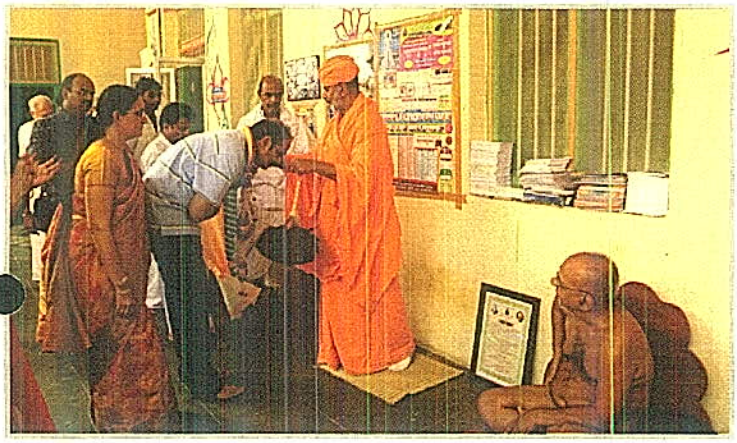

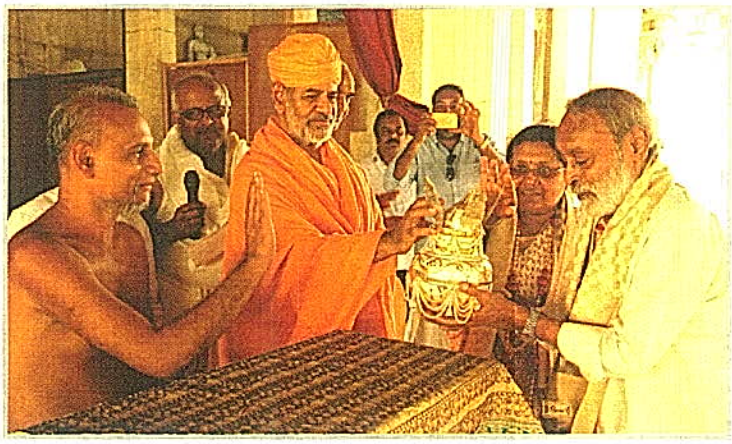

श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम (जैन गुरुकुल) कारंजा (लाड) जिला-वासिम (महा.)

माणिकचंद जवेरी

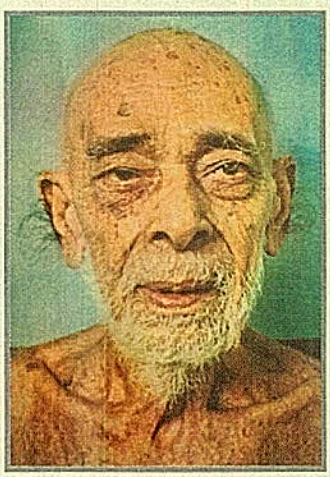

आधुनिक जैन गुरुकुल शिक्षाप्रणाली प्रणेता प.पू.समंतभद्रजी महाराज

आजसे लगभग 100 वर्ष पूर्व एक तेजस्वी, उच्चशिक्षित, विद्वान, उत्साही, ध्येयवादी नवयुवक का कारंजा (लाड) नगरी में आगमन हुआ था। वास्तव में उनका यह आगमन कारंजा (लाड) के शिक्षा जगत में एक युगान्तकारी घटना थी। उनके आगमन के साथ एक प्राचीन शिक्षाप्रणाली के पुनरुज्जीवन का पर्व आनेवाला है इस की कल्पना शायद ही किसी को थी। वह युवक था श्री.देवचन्दजी कस्तुरचन्दजी शहा, करमाळा, (सोलापुर) और आगे चलकर वे 108 श्री समंतभद्रजी महाराज के नाम से विख्यात हुए।

परमपूज्य गुरुदेव श्री समंतभद्रजी महाराज की यह आंतरिक भावना थी की जैन समाज के बालकों एवं युवा पिढी में धर्मशिक्षा व नीतिशिक्षा के संस्कार प्राचीन गुरुकुल शिक्षण पद्धति द्वारा होना आवश्यक है। इस प्रयोजन से उन्होंने सर्वप्रथम कारंजा नगरी में और उसके पश्चात अनेक स्थानोंपर जैन गुरुकुलों की स्थापना करते हुए काल के प्रवाह में विलिप्त होती हुई गुरुकुल शिक्षाप्रणाली को नवसंजीवनी प्रदान की।

आज से सौ साल पूर्व सन 1918 में कारंजा (लाड) में उन्होंने श्री. महावीर ब्रह्मचर्याश्रम नामक जैन गुरुकुल की स्थापना की। इस अनुठे, अनमोल, लोकोपयोगी कार्य में उन्हें कारंजा के श्रेष्ठीजनोंने तन-मन-धन-भक्तीपूर्वक सहयोग दिया। गत सौ सालों में अनेक लोगोंद्वारा इस कार्य में सहयोग मिलता रहा। सौ सालोमें संस्था जो निरंतर प्रगतिपथपर अग्रसर है वह इसी सहयोग के कारण से है। किसीने धनपूर्वक सहयोग दिया, किसी ने अपने परिश्रम दिये तो किसीने पूरा जीवनही संस्थाके लिये समर्पित किया उसमे ब्र. माणिकचंद्रजी चवरे (तात्याजी) एवं ब्र. देवचंदजी जोहरापूरकर इनका नाम उल्लेखनीय है। आज शतकपूर्ती के समाधान से ओतप्रोत यह संस्था उन सभी महानुभावों का कृतज्ञतापूर्वक आभार व्यक्त करती है। इसी संस्था का एक विभाग श्री कंकुबाई पाठ्यपुस्तकमाला के अंतर्गत धर्मग्रथों का का अनुवाद, संपादन, प्रकाशन एवं वितरण का कार्य किया जाता है।

गुरुकुल संरक्षक, प्रथम शिष्य ब्र.माणिकचंद चवरे तात्याजी, न्यायतीर्थ

संस्था द्वारा संचलित श्री महावीर ब्रह्मर्चाश्रम हायस्कुल का शालांत परीक्षाफल 96 से अधिक गत 20 सालों से है तथा हायस्कूल के छात्र क्रीडा एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में भी प्रगतिपथपर अग्रसर रहते है। तथा श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम प्राथमिक मराठी शाळा इस स्कूल का 4 थी कक्षा की शिष्यवृत्ती परीक्षाफल सदैव चरमसीमा पर रहा है।

इस संस्था की सहयोगी संस्था श्री महावीर ज्ञानोपासना समिती, कारंजा के माध्यम से अध्यात्मिक ग्रंथों का अनुवाद, प्रकाशन एवं वितरण किया जाता है, तथा और एक सहयोगी संस्था श्री कंकुबाई श्राविकाश्रम, कारंजा जिसके माध्यम से छात्राओं की लौकिक शिक्षा एवं नीतिशिक्षा के संस्कार गुरुकुल शिक्षण पद्धतीद्वारा दिये जा रहे है।

गत सौ सालों में संस्थाने शिक्षाके क्षेत्र में नवीनतम तकनीक अपनाते हुये संस्कारों की ओर भी अधिक ध्यान दिया है। संस्था में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं कों परिपूर्ण व्यक्तिमत्व बनाने हेतु विभिन्न उपक्रमों का आयोजन यहाँ निरंतर होता रहता है। यहाँ से शिक्षित होकर भविष्य में अनेकों ने विभिन्न क्षेत्रों में नाम कमाया और अपना भविष्य उज्ज्वल बनाया। आनेवाले समय में विभिन्न नयी योजनाओं को साकार करते हुए प्रगतिपथपर आगे बढने के लिये संस्था उत्सुक है। भविष्य में भी आपका सहयोग संस्था के विभिन्न कार्यों में निरंतर मिलता रहेगा इस विश्वास के साथ संस्था शतकपूर्ती महोत्सव कें आयोजन में व्यस्त है। दि. 18/4/2018 में 07/05/2019 तक चलनेवाले इस महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत पूजन विधान, धार्मिक संस्कार शिबिर, मानस्तंभ अभिषेक, भूतपूर्व स्नातक संमेलन,विद्वत संगोष्ठी, ग्रंथ प्रदर्शनी, प.पू.गुरुदेव पुण्यस्मृति दिन, जयंती दिन, दीक्षा दिन तथा छात्रों के लिये विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन में आप सभी का सहयोग एवं सहभाग आवश्यक है।

उत्कृष्ट कार्य को प्रोत्साहन देना आज की आवश्यकता : डॉ. धाकड़

इन्दौर, 25 मार्च। देवी अहिल्या वि. वि., इन्दौर द्वारा मान्य शोध केन्द्र, कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इंदौर द्वारा आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय जैन विद्या संगोष्ठी एवं पुरस्कार समर्पण समारोह की अध्यक्षता करते हुए वि. वि. के कुलपति **डॉ. नरेन्द्र धाकड़** ने कहा कि आज इस मंच पर विद्वानों का सम्मान देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। अपने इंदौर शहर में ऐसी संस्थायें बहुत कम हैं जो पूरे देश पर अपनी नजर रखती हैं और साहित्य, संस्कृति और दर्शन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले विद्वानों के कार्य का मूल्यांकन करती हैं, आज ऐसे उत्कृष्ट कार्य करने वाले को प्रोत्साहित करने की बहुत आवश्यकता है। कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ डॉ. अजितकुमारसिंह कासलीवाल एवं डॉ. अनुपम जैन के नेतृत्व में यह कार्य बखूबी कर रही हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गृह निर्माण मंडल के अध्यक्ष **श्री कृष्णमुरारी मोघे** ने कहा कि धर्म और संस्कृति एवं उसके संवर्द्धन हेतु कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ जो कार्य कर रहा है उस हेतु उसे बहुत–बहुत बधाई। वास्तव में भारतीय संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्द्धन आज की आवश्यकता है एवं यह कार्य कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ जैसी संस्थायें ही कर सकती हैं।

उद्घाटन सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने विचार रखते हुए ज्ञानोदय फाउण्डेशन के **श्री सूरजमल बोबरा** ने कहा कि विद्वानों का सम्मान करना हमारा दायित्व है और हम आगे भी कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ के साथ जुड़कर विद्वानों का सम्मान करते रहेंगे।

कार्यकारी निदेशक **डॉ. अनुपम जैन** ने संस्था का परिचय देते हुए विगत 30 वर्षों की विकास यात्रा को सदन के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ द्वारा दिये जाने वाले पुरस्कारों से आज सम्मानित किये जाने वाले विद्वानों का परिचय दिया।

संस्था के निदेशक पूर्व कुलपति प्रो. ए.ए. अब्बासी ने संबोधित करते हुए कि साहित्य एवं भाषा धर्म की सीमा नहीं मानती। संस्था को समाज द्वारा पूर्ण सहयोग देना चाहिए तभी कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ जैसी संस्थायें आगे बढ़ सकती है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ डॉ. अनुपमा विकास जैन के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। स्वागत भाषण डॉ. अजितकुमारसिंह कासलीवाल ने दिया। वर्ष 2015, 2016 एवं 2017 के कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कारों से पं. लालचंद जैन 'राकेश'– भोपाल, प्रो. रतनचन्द्र जैन– भोपाल एवं डॉ. दिलीप धींग–चेन्नई तथा ज्ञानोदय पुरस्कारों से श्री शैलेन्द्र जैन 'शैलू'–लखनऊ, आचार्य राजकुमार जैन–इटारसी एवं इंजी. मनमोहनचन्द्र जैन– कोरबा को सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर श्री शांतिलाल जांगड़ा (उदयपुर) को 2015 एवं श्री सुरेश जैन (I.A.S.) (भोपाल) को 2016 के अर्हत् वचन पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। सभी पुरस्कृत विद्वानों ने उक्त अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए ज्ञानपीठ की कार्यपद्धति तथा पुरस्कार चयन करने हेतु कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. एन.एल. जी कछारा, उदयपुर की पुस्तक Living System in Jainism : A Scientific Study, कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ की शोध पत्रिका **अर्हत् वचन** के 28 वर्षीय इण्डेक्स वाल्यूम एवं संस्था की 30 वर्षीय प्रगति आख्या का विमोचन किया गया। अर्हत् वचन का 30 वर्षों से सतत सम्पादन कर इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका बनाने हेतु डॉ. अनुपम जैन की प्रशंसा की। कार्यक्रम का सशक्त संचालन प्रो. एस. के. बण्डी ने किया एवं आभार दि. जैन उदासीन आश्रम ट्रस्ट के प्रबंधक डॉ. अरविन्द जैन ने माना गया।

कार्यक्रम में शताधिक विद्वान की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

(डॉ.अनुपम जैन)
कार्यकारी निदेशक

अंतर्मना मुनिश्री प्रसन्नसागरजी महाराज जी के सानिध्य में 1000 श्रावको ने लिया बेटी बचाव, बेटी पढाओ का संकल्प

- श्री नरेन्द्र अजमेरा

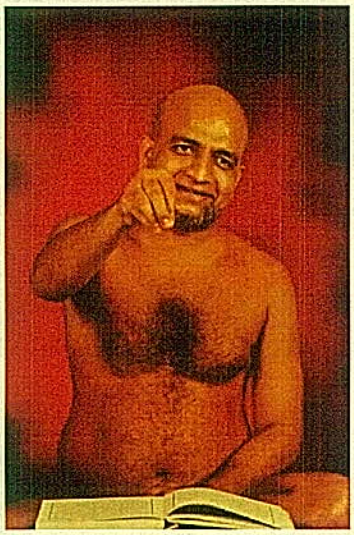

पुष्पगिरी तीर्थ प्रणेता आचार्य पुष्पदंत सागरजी महाराज के उपवन के सुगंधित पुष्प अंतर्मना मुनिश्री प्रसन्नसागरजी महाराज एवंम सौम्यमुर्ती पियुषसागरजी महाराज के सान्निध्य में आयोजीत अजमेरा रोड पर बड़े के बालाजी स्थित सुपार्श्वनाथ गार्डन सिटी के चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर एवंम सुपार्श्वमती माताजी के समाधी स्थली पर आयोजित 1000 से अधिक श्रद्धालु ओ को बेटी बचाओ, बेटी पढाओ का संकल्प दिलाया, कार्यक्रम में आर्यिका गौरवमंती माताजी ससंघ की उपस्थिती थी। इस मौके पर अंतर्मना मुनिश्री प्रसन्नसागरजी ने कहा कि घर परिवार सबके खुशहाल होते है लेकीन जिसके घर से बेटी नहीं वह घर संपन्न घर नही होता। क्योकि जो काम ओर दर्द एक बेटी समजती है और करती है वो बेटा नही कर सकता। साथ ही कन्याभ्रुण हत्या नही करणेन का भी संकल्प दिलाया. कार्यक्रम में महिला विकास मंत्री अनिता भदेल, संसदिय सचिव कैलास वर्मा, संसद रामचरण बोहरा, अल्पसंख्याक आयोग के अध्यक्ष जसवीर सिंह, शहर अध्यक्ष संजय जैन, चेतन जैन निमोडीया आदी मौजुद थे।

कार्यक्रम में अभिषेक जैन ने बताया की, बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ संकल्प अभियान का कार्यक्रम एशिया बुक ग्रिनीज वर्ल्ड बुक, लिमका बुक व भारत बुक मे रिकॉर्ड दर्ज कराया। महोत्सव यशस्वी करने के लिये श्रीपाल भागचंद चुडीवाल, विकास जैन, अभिषेक जैन, बिट्टु, विपुल जैन, प्रितेश जैन, आशिष जैन, सुर्यप्रकाश छाबडा, चेतन निमोडीया आदी ने परिश्रम लिया. इस अवसर पर अंतर्मना मुनिश्री प्रसन्नसागरजी महाराजजी के सानिध्य में सिद्धचक्र महामंडल विधान पुजन बडे उत्साह के साथ संपन्न हुआ। ऐसी जानकारी अंतर्मना मुनिश्री प्रसन्नसागरजी के प्रचार प्रच[illegible] संयोजक नरेंद्र अजमेरा व पियुष कासलीवाल इन्होंने दी। अंतर्मना मुनिश्री प्रसन्नसागरजी महाराज के सानिध्य में 10 मार्च से 14 मार्च तक श्री.दिगंबर जैन अजमेरी आमनाये पंचायत बड़ा धड़ा अजमेर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवंम विश्वशांती महायज्ञ का आयोजन किया है, यह कार्यक्रम ब्र. तरुणभैय्या इंदौर के निर्देशक के आयोजीत किया गया है।

★★★★

पंथवाद समाज तोडने का महामंत्र : श्रमण मुनि विशेषसागर

हिंगोली (महा.) प.पु. राष्ट्र संत गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी गुरुदेव के धर्म प्रभावक सुशिष्य प.पु. श्रमण मुनिश्री विशेषसागरजी महाराज ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा भगवान महावीर स्वामी का धर्म भोग का नहि योग का है, चर्चा का न ही चर्या का है, कथनी का नही करनी का, लडने झगडने का नही प्रेम से रहने का है, अखंड समाज को खंड-खंड करने का नहीं अपितु खंड-खंड समाज को अखंड करने है. खंड खंड समाज को एक सुई में बांधने का है, रात में खाने और खिलाने का नहीं दिन में खाने और खिलाने है।

पू. मुनिश्री ने आगे कहा एक समय वह था जब मंदिरों में चंदन व केशर कि खुशबू आती थी पर आज पंथवाद किो बदबू आ रही है, राग द्वेष की बदबू आ रही पंथवाद आतंकवाद में, पंथवाद अखंड समाज को खंड-खंड करने का, अखंड समाज को तोडने का महामंत्र है। शास्त्रो में उल्लेख आता है कि दिगंबर संतों की साधना के प्रभाव से जन्म जात-शत्रू भी बैर भाव भूल जाते हैं और आज देखा जा रहा है कि संत भी कैंची का काम कर रहे हैं, समाज को तोड़ने का उपदेश दे रहे हैं। एक व्यक्ति मेरे पास आया मैंने उनसे पूछा आप मंदिर जाते हो, उन्होंने कहा नहीं, मैने पूछा क्यों नहीं जाते, उस व्यक्ति ने कहा गलती क्षमा करें हम पहले प्रतिदिन मंदिर जाते थे, अभिषेक करते थे, नगर में कोई भी साधु आते उनके साथ विहार में जाते थे। मैंने कहा अब क्या हो गया व्यक्ति ने घबराते हुए कहा महाराज श्री मुझे समझ नहीं आता आगम की बात माने कि पंथवाद साधूओं कि बात मानें। एक साधु कहते ऐसा करने से पुण्य होता है, एक कहते पाप होता भगवान इसलिए हम कान पकड लिये अब मुझे मंदिर नहीं जाना। मैंने कहा भैया आप आगम की मानिये और जो साधु व[illegible] ऐसा करने से पाप होता है आप उन्हें हाथ जोड़कर प्रार्थना करें भगवान ऐसा कौन से शास्त्रों में लिखा है आप बतायें फिर हम आप की बात मानेंगे। इस निर्ग्रंथ परंपरा में आचार्य भगवान धरसेन, पुष्पदंत, भूतबली, कुन्दकुन्द स्वामी जैसे महान आचार्य हुआ जिन्होंने अपनी साधना काल से निकालकर ग्रंथों का लेखन किया, ग्रंथ लिखें पर अपना कोई पंथ और परंपरा से न बंधती है और न बांधते हैं वे तो संसार से मुक्त होने के पथ पर चलते है और सबको चलाते हैं।

पू. मुनीश्री ने आगे कहा तीर्थंकरों ने भी अपना कोई पंथ नहीं बनाया पर आज देखा जा रहा है उनके भक्त तीर्थंकरों ने भी भेद डाल दिये यथा (जैसे) श्री 1008 आदिनाथ दिगंबर जैन बीसपंथी मंदिर, श्री 1008 आदिनाथ दिगंबर जैन तेरहपंथी मंदिर। पंथवाद समाज को तोडना है और आगमवाद समाज को जोडता है। आज जितना नुकसान श्रावकों से नहीं उससे अधिक नुकसान श्रमणों से है।

★★★★

श्री मांगीतुंगी दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र

डॉ. सूरजमल गणेशलाल जैन

विगत कई दिनों से चल रहे मांगीतुंगी दि. जैन सिद्धक्षेत्र प्राचीन ट्रस्ट का चल रहा विवाद 24 मार्च 2018 को खत्म हुआ। दोनों पक्षो की समझदारी पूर्ण वार्तालाप से ट्रस्ट के ऊपर मंडरा रहा प्रशासकीय खतरा टल गया जिसमें महत्वपूर्ण भूमिका 13 वर्षो से अध्यक्ष रहे श्री रमेशजी गंगवाल का रहा। क्षेत्र के हितों की रक्षा एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए स्वयं अध्यक्ष पद का त्याग किया और अपने स्थान पर सुमेरमलजी काला को स्थानापन्न किया। श्री रमेशजी गंगवाल मध्य भारत के मुख्यमंत्री श्री मिश्रीलालजी गंगवाल के भतीजे है। जिनका परिवार श्री गुलाबचंदजी गंगवाल तीन पाढ़ी से मांगीतुंगीजी की सेवा में रहे। विगत 13 वर्षों में रमेशभाई की अध्यक्षता में अनेक निर्माण कार्य क्षेत्र पर हुए। नई आधुनिक धर्मशाला का निर्माण कार्य, पहाड़ का जिर्णोद्धार कार्य तीव्रगति से रहा। आपके कार्यकाल को समाज और क्षेत्र से जुड़े लोग कभी भी भुला नहीं सकते।

क्षेत्र के महामंत्री श्री अनिलभाई श्रीचंद जैन पारोला इन्होंने भी अपने स्वास्थ्य को देखते हुए पद त्याग किया और नई पीढी को कार्य करने का अवसर प्रदान करते हुए समाज के सामने एक नया आदर्श प्रस्तुत किया। करीब चार पीढी से क्षेत्र विकास में सेवा प्रदान करने का सौभाग्य आपके परिवार को मिला। नवनिर्वाचित कमेटी ने इन दोनों के नेतृत्व में ही कार्य करने की भावना भाई, जिसमें श्री समेरमलजी काला, नासिक-अध्यक्ष, श्री प्रमोदभाई दुलिचंदजी अजमेरा, धुलिया-उपाध्यक्ष, श्री प्रो. उपेन्द्रभाई देवेन्द्रजी लाड, मालेगांव-महामंत्री, श्री मोहनभाई सोनालालजी जै, कुसुंबा-कोषाध्यक्ष, श्री अशोकभाई धन्नालालजी बड़जाते, सटाना सह सचिव पद पर मनोनीत हुए तथा श्री रमेशभाई गंगवाल-इन्दौर, श्री अनिल श्रीचंद शाह- पारोला, श्री कैलासचंदजी चांदीवाल (हायकोर्ट जज)- औरंगाबाद, श्री प्रवीणभाई हुकुमचंदजी पहाडे-मालेगाव, श्री सूरजमल गणेशलाल जैन-मांगीतुंगी, श्री सतीषभाई गमनलालजी जैन-सोनगीर, श्री किशोर रतनलालजी शहा-धुलिया, श्री वर्धमान निहालचंदजी पांडे- चांदवड, श्री महेन्द्र बसंतीलालजी जैन (ॲड.)- धुलिया, श्री प्रदीप धरमचंदजी ठोले-सटाना यह 10 सदस्य बने जिससे कुल 15 सदस्यों की नई कमेटी बनी। जो मांगीतुंगी के विकास के लिए समर्पित रहकर क्षेत्र विकास के लिए कटीबद्ध हुए। नव निर्वाचित कमेटी ने श्री रमेशभाई गंगवाल, श्री कैलासचंदजी चांदीवाल, श्री अनिलभाई जैन इनको सम्माननीय संरक्षक पद पर विभूषित किया। ★★★★

जल्द ही जैनियों के तीर्थराज का दर चूमेगी ट्रेन

पारसनाथ गिरिडीह-मधुबन के बीच फाइनल लोकेशन सर्वे को मिली मंजूरी

जैनियों के तीर्थराज पारसनाथ की तलहटी स्थित मधुबन तक रेलगाड़ी से पहुंचने का ख्वाब देख रहे तीर्थयात्रियों के लिए अच्छी खबर है। पारसनाथ-गिरिडीह-मधुबन के बीच 35 किलोमीटर की जिस रेललाइन की बजट में घोषणा हुई थी। उसके फाइनल लोकेशन सर्वे को मंजूरी मिल गई है। 48 लाख रुपये की रकम भी स्वीकृत हो चुकी है। जल्द सर्वे शुरु होगा। रेलवे के कंस्ट्रक्शन विभाग के अधिकारी सर्वे के दौरान नए रेलखंड पर कहां पुल बनेंगे और कहां कलवर्ट। ढलान और चढाई वाले सेक्शन से पटरी कैसे गुजरेगी। इस अनुरुप ही फाइनल नक्शा तैयार करेंगे। रेलवे बोर्ड की मुहर लगते ही जमीन पर काम शुरु होगा।

पूर्व मध्य रेलवे की टीम कर चुकी है स्पॉट सर्वे

35 किमी लंबी नई रेललाइन के निर्माण में महकमें ने निर्णय लिया है कि इस दूरी के बीच एक भी रेल फाटक नहीं होगा। आवश्यकतानुसार अंडरब्रिज का निर्माण होगा।

पारसनाथ या गिरिडीह से सड़क मार्ग ही विकल्प

वर्तमान में मधुबन तक पहुंचने के लिए गिरिडीह व पारसनाथ आनेवाले तीर्थयात्रियों के लिए सड़क मार्ग ही विकल्प है। बसें सीमित समय तक ही मिलती हैं। ज्यादातर लोग वाहन बुक कराकर ही मधुबन पहुंचते है। वहां से पारसनाथ पहाड़ पर तीर्थयात्रा को जाते हैं।

पारसनाथ को मिलेगी डबलडेकर की सौगात

धनबाद: मधुबन तक रेलवे लाइन के साथ ही पारसनाथ को एक और सौगात मिलने वाली है। पारसनाथ रेलवे स्टेशन से हावड़ा के बीच डबलडेकर का परिचालन होगा। धनबाद रेल मंडल की ओर से रेलवे बोर्ड को भेजे गए प्रस्ताव के बाद अनुसंधान अभिकल्प एवं मानक संगठन (आरडीएसओ) लखनऊ की टीम डबलडेकर के रैक की जांच कर रही है। जांच पूरी होने पर रेल संरक्षा आयुक्त धनबाद से पारसनाथ तक का निरिक्षण करेगें।

इस दौरान 130 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से परिचालन होगा। परिचालन के दौरान अगर तकनीकी दिक्कत नहीं आई तो डबलडेकर के परिचालन की अनुमति दे दी जाएगी।

धनवाद से हावड़ा के बीच चली थी देश की पहली डबलडेकर

धनबाद से हावड़ा के बीच अक्टूबर 2011 में देश की पहली डबल डेकर ट्रेन चली थी। अधिक किराया और यात्रियों के लिए अनुकूल समय नहीं होने के कारण इसे पर्याप्त यात्री नहीं मिले। बाद में इसका परिचालन बंद कर दिया गया।

आरडीएसओ स्तरपर डबलडेकर के परिवालन को लेकर जांच शुरु हुई है। इस प्रक्रिया के पूरी होने के बाद रेल सुरक्षा आयुक्त की स्वीकृति ली जाएगी। उनकी हरी झंडी मिलने पर मिलने पर ट्रेन चलेगी। मधुबन-गिरिडीह रेललाइन प्रोजेक्ट पर मुख्यालय स्तर पर काम हो रहा है।

- कमल विनायका